॥ श्री ॥

॥ देववंदनमाला ॥

जेमां

श्री ज्ञानविमल सूरि आदिक जूदा जूदा पंकि-
तोना करेलां अगीयार देववंदनोनो
समावेश करेलो छे, तेमां वीजो
केटलोक सुधारो वधारो करीने

छपावी प्रसिद्ध करनार

श्रावक भीमसिंह माणक,

जैन पुस्तक वेचनार तथा प्रसिद्ध करनार,
माडवी, शाकगली, मुंबइ.

आवृत्ति बीजी.

सवत् १९७१. सने १९१५



प्रस्तावना.



देववंदनमाला–देव एटले राग द्वेषथी रहित श्री जिनेश्वर भगवान्, वंदन एटले वांदवुं अथवा भक्ति करवी अने माला एटले जथो. देववंदनमाला एटले राग द्वेषथी रहित श्री जिनेश्वर भगवान् अथवा तीर्थंकर भगवाननी भक्ति करवानी जूदी जूदी विधिओनो जथो, ते देववंदनमाला. श्री जिनेश्वर भगवाननी भक्ति शा कारणे करवी ? कारणके भगवान् तो निरागी अने निर्विकार छे. एने स्तुति के निंदानुं आपणने कंइ फल आपवानुं प्रयोजनज नथी, पण आपणो आत्मा अज्ञानी अने मोहांध थइने जे कर्मदलथी घेरायलो छे ते कर्मदल टालवा देववंदनरूपी जे अमृत, तेनुं पान करवुं अवश्यनुं छे.

सर्व कर्मदल क्षय करी अनंतज्ञान, अनंतदर्शन, अनंतचारित्र, अनंतवीर्य अने स्वस्वरूपमय थयेल

एवा जिनेश्वरोनुं स्वरूप आत्मानी निश्चयनये रिद्धि होवाथी ते भगवाननी भक्ति करवी एटले देववंदन करवुं. भगवाननुं स्मरण, चिंतवन, ध्यान अने भक्ति ए कर्मदल क्षय करवाथी शक्ति आपे छे, विकारथी आत्माने विरक्त करे छे अने शांति तथा निर्जरा आपे छे. जेम तरवार हाथमां लेवाथी शौर्यवृत्ति अने भांग पीवाथी निसो उत्पन्न थाय छे तेम ए गुणचिंतवनथी के देववंदनथी आत्मा स्वस्वरूपानंद श्रेणीए चढतो जाय छे, ते माटे देववंदन करवुं. सिद्ध स्वरूप पामेला ते सघला जिनेश्वरो तो पूज्य छे, त्यारे नामथी भक्ति करवानी शुं जरुर छे ? हा, जरुर छे. अनंत सिद्ध स्वरूपने ध्याता जे शुद्ध स्वरूपनो विचार थाय ते तो कार्य; परंतु ए जिनेश्वर जे वडे ते स्वरूपने पाम्या ते कारण कयुं ए विचारतां उग्र तप, महान् वैराग्य, अनंत दया अने महान् ध्यान ए सघलानुं स्मरण थशे.

एउनां तीर्थंकरपदमां जे नामथी तेउ विहार करता हता ते नामथी तेउनां पवित्र आचार अने पवित्र चरित्रो अंतःकरणमां उदय पामशे. जे उदय परिणामे महा लाभदायक छे. जेम श्रीमहावीरनुं पवित्र नाम स्मरण करवाथी तेउ कोण ? क्यारे ? केवा

प्रकारे सिद्धि पाम्या ? ए आदि चरित्रोनी स्मृति थशे अने एथी आपणे वैराग्य, विवेक इत्यादिकनो उदय पामीए, तेथीज आगलना महान् उपकारी महात्माओ आपणा उपर उपकार करी जूदा जूदा दिवसोए जूदां जूदां देववंदनोनी विधि अने दरेक दिवसोमां जे जे वन्युं छे ते ते आ उपकारी महात्माओ पोतानी कवित्वशक्तिथी श्री जिनेश्वरनां चरित्रोनुं स्वरूप चैत्यवंदन, स्तवन अने थोयोरूपे लखी गया छे, अने तेथीज आपणा नाव उत्कृष्ट थाय छे.

जेमणे पोतानुं जीवन सफल कर्युं छे अने वीजानुं जीवन सफल करवा इच्छता एवा श्री ज्ञानविमल सूरि तथा विजयलक्ष्मी सूरि आदिक महात्माओए आपणा उपर महंत उपकार करीने दिवाली, ज्ञानपंचमी, मौनएकादशी, चैत्रीपूनम, चोमासी चौदश आदि तिथिओने दिवसे पोषधादिक धार्मिक क्रियामां जे जे देववंदन करवां जोइए ते ते विधि सहित रचेलां छे. शुं ते महात्माओए आपणा उपर थोमो उपकार कर्यो गणाय ? आवा महात्माओने धन्य छे के जेओ पोतानुं जीवन सफल

करी अने बीजाउनुं जीवन सफल करवा पोतानी पाछल आवो उपयोगी खजानो मूकी गया छे के जेथी भव्यजीवो तेनो लाभ लइ पोतानुं जीवन सफल करे. ते सर्वे देववंदनो एकत्र करी एक पुस्तकरूपे प्रसिद्ध थाय तो खरेखर पुस्तक केटलुं उपयोगी थाय? एवो विचार करीने सर्वे देववंदनो एकत्र करी अमारा तरफथी अगाउ गुजराती अक्षरमां "देववंदनमाला" ए नामे पुस्तक बहार पाडवामां आव्युं हतुं. ते खपी जवाथी तेनी बीजी आवृत्ति बहार पामी हती. साथे शास्त्री अक्षरमां मागणी थवाथी अमारा तरफथी संवत् १९६२ मां शास्त्री अक्षरमां पहेली आवृत्ति बहार पाडवामां आवी अने ते खपी जवाथी तेनी आ बीजी आवृत्ति बहार पाडवामां आवी छे अने तेनी साथे आ बीजी आवृत्तिमां अगाउ करतां स्तवनो, चैत्यवंदनो, स्तुतिउ विगेरेनो वधारो करवामां आवेल छे. जेम जेम जैनप्रजा आवां पुस्तकोनो वधारे लाभ लेशे तेम तेम अमे दरेक नवि आवृत्तिमां वधारो करतां जशुं; तेथी जैनप्रजा वधारे लाभ लेशे एम समजी अमे संतोष पामी अमारां कार्य सफल थयेलुं समजशुं. किं बहुना!

क्षमापना.

अमे दरेक सुज्ञ बंधुउने विनंति करीए ठीए के आ पुस्तकनी अंदर दृष्टिदोषथी कांइ पण जूल रही गइ होय तो तेना विषे सुज्ञ बंधुउ क्षमा करशे अने लखी जणाववा कृपा करशे तो नवी आवृत्तिमां तेवी जूलो सुधारवा अमो बनतो प्रयास करशुं.

मुंबइ, मांम्वी, शाकगल्ली
घर ना. २२९ थी २३१
ता. १४–११–१९१५
वीर संवत्–२४४१

श्रावक
जीमसिंह माणकना
कार्यप्रवर्तको.



॥ अनुक्रमणिका ॥

॥ ॐ नमः ॥

॥ अथ श्री देववंदनमाला प्रारभ्यते ॥

॥ तत्र प्रथम श्री नयविमलजी कृत ॥

॥ दीवालीना देववंदननी विधिः ॥

॥ प्रथम स्थापना स्थापीये, पछी इरियावही पडिक्कमी चैत्यवंदन करी नमुथ्थुणं कही अर्धा जयवीयराय कहीये. पछी वीजुं चैत्यवंदन कही नमुथ्थुणं कहीये. पछी अरिहंत चेइआणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी एक थोय कही लोगस्स कहेवो. पछी एक नवकार कही वीजी थोय कहेवी. पछी पुख्खरवरदी कही एक नवकार कही त्रीजी थोय कहेवी. पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी चोथी थोय कहेवी. एवी रीते वीजो जोडो थोयोनो कहीने नमुथ्थुणं कहेवुं. पछी स्तवन कही अर्धा जयवीयराय कहेवा. पछी त्रीजुं चैत्यवंदन कही संपूर्ण जयवीयराय कहीये. ए रीते प्रथम जोडो कहेवो. तेवीज रीते वीजो जोडो पण कहेवो ॥ इति विधिः ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ वीर जिनवर वीर जिनवर, चरम चौमास, नयरी अपापाए आवीया ॥ हस्तिपाल राजन सभाए, कार्त्तिक अमावास्या रयणीए ॥ मुहूर्त्त शेष निर्वाण ताहीं ॥ सोल पहोर देइ देशना, पहोता मुक्ति मझार ॥ नित्य दीवाली नय कहे, मलीया नृपति अढार ॥ १ ॥ देव मलीया देव मलीया, करे उत्सव रंग, मेरइयां हाथे ग्रही ॥ द्रव्य तेज उद्योत कीधो, भाव उद्योत जिनेंद्रने ॥ गाम गाम एह उत्सव प्रसिद्धो ॥ लख कोडी छठ फल करी, कल्याण करो एह ॥ कवि नयविमल कहे इश्युं, धन धन दहाडो तेह ॥ २ ॥ श्री सिद्धार्थ नृप कुल तिलो, त्रिशला जस मात ॥ हरिलंछन तनु सात हाथ, महिमा विख्यात ॥ त्रीश वरस गृहवास छंडी, लहे संयम भार ॥ बार वरस छद्मस्थ मान, लही केवल सार ॥ त्रीश वरस एम सवि मली ए, बहोत्तर आयु प्रमाण ॥ दीवाली दिन शिव गया, कहे नय तेह गुणखाण ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ अथ थोयोनुं अष्टक ॥ तत्र प्रथम वीरस्तुति ॥

॥ मनहर मूर्त्ति महावीर तणी, जेणे सोल पहोर देशना पभणी ॥ नव मल्ली नव लछी नृपति सुणी, कही शिव पाम्या त्रिभुवन धणी ॥ १ ॥ शिव पहोता ऋषभ चउदश भक्ते, बावीश लह्या शिव मास थीते ॥ छठे शिव पाम्या वीर वली, कार्त्तिक वदि अमास निरमली ॥ २ ॥ आगामि भावि भाव कह्या, दिवाली कल्पे जेह लह्या ॥ पुण्य पाप फल अज्झयणे कह्या, सवि तहत्ति करीने सद्दह्या ॥ ॥ ३ ॥ सवि देव मली उद्योत करे, परभाते गौतम ज्ञान वरे ॥ ज्ञानविमल सद्गुण विस्तरे, जिनशासनमां जयकार करे ॥ ४ ॥ इतिप्रथम थुइ जोडो॥

॥ अथ द्वितीय वीरस्तुति ॥

॥ जय जय भवि हितकर, वीर जिणेश्वर देव ॥ सुर नरना नायक, जेहनी सारे सेव ॥ करुणा रस कंदो, वंदो आणंद आणी ॥ त्रिशला सुत सुंदर, गुण मणि केरो खाणी ॥ १ ॥ जस पंच कल्याणक, दिवस विशेष सुहावे ॥ पण थावर नारक, तेहने पण सुख थावे ॥ ते च्यवन जन्म व्रत, नाण अने निर्वाण

॥ सवि जिनवर केरां, ए पांचे अहिठाण ॥ २ ॥ जिहां पंच समिति युत, पंच महाव्रत सार ॥ जेहमां परकाश्या, वली पांचे व्यवहार ॥ परमेष्ठि अरिहंते, नाथ सर्वज्ञ ने पारंग ॥ एह पंच पदे लह्यो, आगम अर्थ उदार ॥ ३ ॥ मत्तंग सिद्धाइ, देवी जिनपद सेवी ॥ दुःख दुरित उपद्रव, जे टाले नित मेवी ॥ शासन सुखदायी, आइ सुणो अरदास ॥ श्रीज्ञानविमल गुण, पूरो वंछित आस ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थुइ जोडो ॥

॥ अथ महावीर जिन स्तवनं ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥ श्री महावीर मनोहरु, प्रणमुं शिर नामी ॥ कंत जशोदा नारीनो, जिन शिवगति गामी ॥ १ ॥ भगिनी जास सुदंसणा, नंदिवर्धन भाइ ॥ हरिलंछन हेजाळुउं, सहुकोने सुखदायी ॥ २ ॥ सिद्धार्थ नृपति तणो, सुत सुंदर सोहे ॥ नंदन त्रिशला देवीनो, त्रिभुवन मन मोहे ॥ ३ ॥ एक शत दश अध्ययन जे, प्रभु आप प्रकाशे ॥ पुण्य पाप फल केरमां, सुणे भविक उल्लासे ॥ ४ ॥ उत्तराध्ययन छत्रीश जे, कहे

अर्थ उदार ॥ सोल पहोर दीये देशना, करे जवि उपगार ॥ ५ ॥ सर्वार्थसिद्ध मुहूर्त्तमां, पाछली जे रयणी ॥ योग निरोध करे तिहां, शिवनी निसरणी ॥ ६ ॥ उत्तराफाल्गुनी चंद्रमा, जोगे शुज आवे ॥ अजरामर पद पामीया, जय जय रव थावे ॥ ७ ॥ चोसठ सुरवर आवीया, जिन अंग पखाली ॥ कल्याणक विधि साचवी, प्रगटी दीवाली ॥ ८ ॥ लाख कोमी फल पामीये, जिन ध्याने रहीये ॥ धीरविमल कविराजनो, ज्ञानविमल कहीये ॥ ए ॥ ॥ इति वीर जिन स्तवनं ॥ इति प्रथम जोडो ॥

॥ अथ चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ नमो गणधर नमो गणधर, लब्धिजंमार ॥ इंद्रजूति महिमा निलो, वम वजीर महावीर केरो ॥ गोतम गोत्रे उपनो, गणि अग्यार मांहे वडेरो ॥ केवलज्ञान लह्युं जेणे, दीवाली परजात ॥ ज्ञानविमल कहे जेहना, नाम थकी सुखशात ॥ १ ॥ इंद्रजूति पहेलो जणुं, गोतम जस नाम ॥ गोवर गामे उपन्या, विद्याना धाम ॥ पंच सया परिवारशुं, लेइ संयम जार ॥ वरस पचास गृहे वस्या, व्रते वर्षज त्रीश ॥ बार व-

रस केवल वस्या ए, बाणुं वरस सवि आय ॥ नय कहे गौतम नामथी, नित्य नित्य नवनिधि थाय ॥ २ ॥ जीव केरो जीव केरो, अछे मन मांहि ॥ संशय वेदपदे करी, कही अर्थ अभिमान वास्यो ॥ श्री महावीर सेवा करी, ग्रही संयम आप तास्यो ॥ त्रिपदी पामी गुंथीयां, पूरव चौद उदार ॥ नय कहे तेहना नामथी, होवे जय जयकार ॥ ३ ॥ इति गौतम चैत्यवंदन त्रयम् ॥

॥ अथ प्रथम थुइ जोमो ॥

॥ इंद्रभूति अनुपम गुण भस्या, जे गौतम गोत्रे अलंकस्या ॥ पंच शत छात्रशुं परिवस्या, वीर चरण लही भवजल तस्या ॥ १ ॥ चउ अठ दश दोय जिनने स्तवे, दक्षिण पश्चिम उत्तर पूरवे ॥ संभव आदि अष्टापद गिरिए वली, जे गौतम वंदे लली लली ॥ २ ॥ त्रिपदी पामीने जेणे करी, द्वादशांगी सकल गुणे भरी ॥ दीये दीक्षा ते लहे केवल सिरी, ते गौतमने रहुं अनुसरी ॥ ३ ॥ जक्ष मातंग ने सिद्धायिका, सूरि शासननी परभाविका ॥ श्रीज्ञानविमल दीपालिका, करो नित्य नित्य मंगलमालिका ॥ ४ ॥ इति स्तुतिः ॥

॥ अथ द्वितीय थुइ जोमो ॥

॥ श्रीइंद्रभूतिं गणवृद्धिभूतिं, श्रीवीरतीर्थाधिपमुख्यशिष्यम् ॥ सुवर्णकांतिं कृतकर्मशांतिं, नमाम्यहं गौतमगोत्ररत्नम् ॥ १ ॥ तीर्थंकरा धर्मधरा धुरीणा, ये भूतभाविप्रतिवर्तमानाः ॥ सत्पंचकल्याणकवासरस्था, दिशंतु ते मंगलमालिकां च ॥ २ ॥ जिनेंद्रवाक्यं प्रथितप्रभावं, कर्माष्टकानेकप्रभेदसिंहम् ॥ आराधितं शुद्धमुनींद्रवर्गै,–र्जगत्यमेयं जयतात् नितांतम् ॥ ३ ॥ सम्यग्दृशां विघ्नहरा भवंतु, मातंगयक्षा सुरनायकाश्च ॥ दीपालिकापर्वणि सुप्रसन्नाः, श्रीज्ञानसूरिर्वरदायकाश्च ॥ ४ ॥ इति गौतमस्तुतिः ॥

॥ अथ स्तवनं ॥

॥ तुंगीया गिरि शिखर सोहे ॥ ए देशी ॥ वीर मधुरी वाणी भाखे, जलधि जल गंभीर रे ॥ इंद्रभूति चित्त भ्रांति रजकण, हरण प्रवण समीर रे ॥ ॥ वीर० ॥ १ ॥ पंचभूत थकी जे प्रगटे, चेतना विज्ञान रे ॥ तेहमां लयलीन थाये, न परभव संज्ञान रे ॥ वीर० ॥ २ ॥ वेदपदनो एतले करे मिथ्या रूप रे ॥

गृह स्वरूप रे ॥ वी० ॥ ३ ॥ चेतना विज्ञानघन छे, ज्ञान दर्शन उपयोग रे ॥ पंचभूतिक ज्ञानमय ते, ज्ञेय वस्तु संयोग रे ॥ वी० ॥ ४ ॥ जिहां जेहवी वस्तु देखीये, होय तेहवुं ज्ञान रे ॥ पूरव ज्ञान विपर्ययथी, होय उत्तम ज्ञान रे ॥ वी० ॥ ५ ॥ एह अर्थ समर्थ जाणी, म भणे पद विपरीत रे ॥ इणी परे भ्रांति निराकरीने, थया शिष्य विनीत रे ॥ वी० ॥ ६ ॥ दीपालिका प्रभात केवल, लह्युं ते गौतम स्वाम रे ॥ अनुक्रमे शिवसुख लह्यां, तेहने नय करे परणाम रे ॥ ॥ वीर० ॥ ७ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ द्वितीय स्तवनं ॥

॥ अलबेलानी देशी ॥ दुःखहरणी दीपालिका रे लाल, परव थयुं जग मांहि ॥ भवि प्राणी रे ॥ वीर निर्वाणथी थापना रे लाल, आज लगे उच्छाहि ॥ भवि० ॥ १ ॥ समकितदृष्टि सांभलो रे लाल ॥ ए आंकणी ॥ स्याद्वाद घर धोलीये रे लाल, दर्शननी करी शुद्धि ॥ भवि० ॥ चरित्र चंद्रोदय बांधीये रे लाल, टालो रज दुःकर्म बुद्धि ॥ भवि० ॥ २ ॥ सम० ॥ सेवा करो जिनरायनी रे लाल, दिल दीवो मीठाश

॥ ज्ञवि० ॥ विविध पदारथ जावना रे लाल, ते प-
कवान्ननी राशि ॥ ज्ञवि० ॥ ३ ॥ सम० ॥ गुणिजन
पदनी नामना रे लाल, तेहिज जुहार जट्टार ॥
॥ ज्ञवि० ॥ विवेक रतन मेराइयां रे लाल, उचित ते
ते दीप संज्ञार ॥ ज्ञवि० ॥ ४ ॥ सम० ॥ सुमति
सुविनता हेजशुं रे लाल, मन घरमां करो वास ॥
॥ ज्ञवि० ॥ विरति साहेली साथशुं रे लाल, अवि-
रति अलछी निकास ॥ ज्ञवि० ॥ ५ ॥ सम० ॥ मै-
त्रादिकनी चिंतना रे लाल, तेह जला शणगार
॥ ज्ञवि० ॥ दर्शन गुण वाघा वन्या रे लाल,
परिमल परउपगार ॥ ज्ञवि० ॥ ६ ॥ सम० ॥ पूर्व
सिद्ध कन्या परखे रे लाल, जानइया अणगार ॥
॥ ज्ञवि० ॥ सिद्धशिला वर वेदिका रे लाल, कन्या
निवृत्ति सार ॥ ज्ञवि० ॥ ७ ॥ सम० ॥ अनंत चतु-
ष्टय दायजो रे लाल, शुद्ध योग निरोध ॥ ज्ञवि० ॥
पाणिग्रहण प्रजुजी करे रे लाल, सहुने हरख वि-
वोध ॥ ज्ञवि० ॥ ८ ॥ सम० ॥ इणी परे पर्व दीपा-
लिका रे लाल, करतां कोडि
ज्ञानविमल प्रजु जक्तिशुं रे

गुणखाणी ॥ जवि० ॥ ए ॥ सम० ॥ इति श्री दीवालीना देव वांदवानो विधि संपूर्ण ॥

॥ अथ श्री ज्ञानपंचमी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम विधि ॥

॥ प्रथम बाजोठ अथवा ठवणी उपर पांच पुस्तक मूकीने वासक्षेपथी ज्ञाननी पूजा करीये, वली पांच दीवेटनो दीवो करीये ते पुस्तकनी जमणी पासे स्थापीये अने धूपधाणुं डाबे पासे मूकीये, पुस्तक आगल पांच अथवा एकावन साथीया करी उपर श्रीफल तथा सोपारी मूकीये. यथाशक्ति ज्ञाननी द्रव्यपूजा करीये, पछी देव वांदीये अने सामायिक तथा पोसह मध्ये वासपूजाए पुस्तक पूजीने देव वांदीए, अथवा देहरा मध्ये बाजोठ त्रण उपरा उपर मांडी ते उपर श्री जिनमूर्त्ति स्थापीये. तथा महा उत्सवथी पोताने ठामे स्नात्र जणावीये. प्रभु आगल जमणी तरफ पुस्तक मांड्युं होय तेहनी पण वास प्रमुखे पूजा करीये. तथा उजमणुं मांड्युं होय तिहां पण यथाशक्ति मुजब जिनं आगल लघु स्नात्र जणावीने अथवा सत्तर

ज्ञेदी पूजा जणावीने पठी श्री सौजाग्य पंचमीना देव वांदीये ॥

हवे देव वांदवानो विधि कहे ठे.

॥ प्रथम प्रगट नवकार कही इरियावही पडिक्कमी चार नवकारनो अथवा एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी, प्रगट लोगस्स कही खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् चैत्यवंदन करुं एम कही पठी योगमुद्राए वेसी चैत्यवंदन करीये, ते कहे ठे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री सौजाग्य पंचमी तणो, सयल दिवस शृंगार ॥ पांचे ज्ञानने पूजीये, थाय सफल अवतार ॥ १ ॥ सामायिक पोसह विषे, निरवद्य पूजा विचार ॥ सुगंध चूर्णादिक थकी, ज्ञान ध्यान मनोहार ॥ २ ॥ पूर्व दिशे उत्तर दिशे, पीठ रची त्रण सार ॥ पंचवरण जिनबिंबने, स्थापीजे सुखकार ॥ ३ ॥ पंच पंच वस्तु मेलवी, पूजा सामग्री जोग ॥ पंचवरण कलशा जरी, हरीये दुःख उपजोग ॥ ४ ॥ यथाशक्ति पूजा करो, मतिज्ञानने काजे ॥ पंच

ज्ञानमां धुर कह्युं, श्री जिनशासन राजे ॥ ५ ॥ मति श्रुत विण होवे नहीं, अवधि प्रमुख महा ज्ञान ॥ ते माटे मति धुर कह्युं, मति श्रुतमां मति मान ॥ ६ ॥ क्षय उपशम आवरणनो, लब्धि होये सम काले ॥ स्वाम्यादिकथी अभेद छे, पण मुख्य उपयोग काले ॥ ७ ॥ लक्षण भेदे भेद छे, कारण कारज योगे ॥ मति साधन श्रुत साध्य छे, कंचन कलश संयोगे ॥ ८ ॥ परमातम परमेसरु ए, सिद्ध सयल भगवान् ॥ मतिज्ञान पामी करी, केवल लक्ष्मी निधान ॥ ए ॥ इति चैत्यवंदन ॥ १ ॥ नमुत्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कहेवां ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ प्रणमो पंचमी दिवसे ज्ञानने, गाजी जगमां रे जेह ॥ सुज्ञानी ॥ शुभ उपयोगे क्षणमां निर्ज्जरे, मिथ्या संचित खेह ॥ सु० ॥ १ ॥ प्रण० ॥ संतपदादिक नव द्वारे करी, मति अनुयोग प्रकाश ॥ सु० ॥ नय व्यवहारे आवरण क्षय करी, अज्ञानी ज्ञान उल्लास ॥ सु० ॥ २ ॥ प्रण० ॥ ी ज्ञान लहे निश्चय कहे, दो नय प्रभुजीने स- सु० ॥ अंतरमुहूर्त्त रहे उपयोगथी, ए सर्व

प्राणीने नित्य॥ सु० ॥ ३ ॥ प्रण० ॥ लब्धि अंतरमुहूर्त्त लघुपणे, ठासठ सागर जीठ ॥ सु० ॥ अधिको नरजव वहुविध जीवने, अंतर कहिए न दीठ ॥ सु० ॥ ॥ ४ ॥ प्रण० ॥ संप्रति समये एक वे पामता, होय अथवा नवि होय ॥ सु० ॥ क्षेत्र पल्योपम जाग असंख्यमां, प्रदेश माने वहु जोय ॥ सु० ॥ ५ ॥ प्रण० ॥ मतिज्ञान पाम्या जीव असंख्य ठे, कह्या पमिवाइ अनंत ॥ सु० ॥ सर्व आशातन वरजो ज्ञानगी, विजयलक्ष्मी लहो संत ॥ सु० ॥ ६ ॥ प्रण० ॥ इति श्रीमतिज्ञान स्तवनम् ॥

॥ पठी जयवीयराय कही, खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह जगवन् श्रीमतिज्ञान आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए अने अन्नछ्ऊससिएणं कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुज्यः कही पठी थुइ कहेवी, ते लखीए ठीए ॥

॥ अथ थुइ ॥

॥ श्रीमतिज्ञाननी तत्त्व जेदथी, पर्याये करी व्या-

ख्याजी ॥ चउविह द्रव्यादिकने जाणे, आदेशे करी दाख्याजी ॥ माने वस्तुधर्म अनंता, नहीं अज्ञान विवक्षाजी ॥ ते मतिज्ञानने वंदो पूजो, विजयलक्ष्मी गुण कांक्षाजी ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥

॥ पछी खमासमण देइ एक गुणनो दुहो कही पछी बीजुं खमासमण देइ बीजो गुण वरणववो ॥ ए रीते मतिज्ञान संबंधी अठावीश खमासमण देवां, ते पीठिकाना दोहा लखीए छीए.

॥ दोहा ॥

॥श्रीश्रुतदेवी जगवती,जे ब्राह्मी लिपिरूप ॥ प्रणमे जेहने गोयमा, हुं वंदुं सुखरूप ॥ १ ॥ ज्ञेय अनंते ज्ञानना, जेद अनेक विलास ॥ तेहमां एकावन कहुं, आतम धर्म प्रकाश ॥ २ ॥ खमासमण एक एकथी, स्तवीये ज्ञान गुण एक ॥ एम एकावन दीजीये, खमासमण सुविवेक ॥ ३ ॥ श्रीसौजाग्य पंचमी दिने, आराधो मतिज्ञान ॥ जेद अठावीश एहना, स्तवीये करी बहु मान ॥ ४ ॥ इंद्रिय वस्तु पुग्गला, मलवे अवतव नाण ॥ लोचन मन विणु अक्षते, व्यंजनावग्रह जाण ॥ ५ ॥ जाग असंख्य आवली लघु,

सास पहुत विह जिह ॥ प्राप्यकारी चउ इंद्रिया, अप्राप्यकारी डुग दिह ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ खमासमणना दोहा ॥

॥ समकित श्रद्धावंतने, उपन्यो ज्ञानप्रकाश । प्रणमुं पदकज तेहना, नाव धरी उल्लास ॥ १ ॥ ए डुहो गुण गुण दीठ कहेवो खमा० ॥ १ ॥

॥ दोहा ॥

॥ नहीं वर्णादिक योजना, अर्थावग्रह होय ॥ नोइंद्रिय पंच इंद्रिये, वस्तु ग्रहण कांइ जोय ॥ २ ॥ सम० ॥ अन्वय व्यतिरेके करी, अंतरमूहूर्त्त प्रमाण ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, ईहा विचारणा ज्ञान ॥ ३ ॥ सम० ॥ वर्णादिक निश्चय वसे, सुर नर एहिज वस्त ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, नेद अपाय प्रशस्त ॥ ४ ॥ सम० ॥ निरणीत वस्तु स्थिर ग्रहे, कालांतर पण साच ॥ पंचेंद्रिय मनथी होये, धारणा अर्थ उवाच ॥ ५ ॥ सम० ॥ निश्चय वस्तु ग्रहे उते, सतत ध्यान प्रकाम ॥ अपायथी अधिके गुणे, अविच्युति धारणा ठाम ॥ ६ ॥ सम० ॥ अविच्युति स्मृति तणुं, कारज कारण नेद ।

संख्य असंख्य कालज सुधी, वासना धारणा तेह ॥ ७ ॥ सम० ॥ पूर्वोत्तर दर्शन ग्रहय, वस्तु अप्राप्त एकत्व ॥ असंख्य काले ए तेह छे, जातिस्मरणे तत्त्व ॥ ८ ॥ सम० ॥ वाजित्र नाद लही ग्रहे, ए तो दुंदुभि नाद ॥ अवग्रहादिक जाणे बहु, भेद ए मति आह्लाद ॥ ए ॥ सम० ॥ देश सामान्ये वस्तु छे, ग्रहे तदपि सामान्य ॥ शब्द ए नव नव जातिनो, ए अबहु मति मान ॥ १० ॥ सम० ॥ एकज तुरियाना नादमां, मधुर तरुणादिक जाति ॥ जाणे बहुविध धर्मशुं, क्षय उपशमनी भाति ॥ ११ ॥ सम० ॥ मधुरतादिक धर्ममां, ग्रहवो अल्प सुविचार ॥ अबहुविध मतिभेदनो, कीधो अर्थ विस्तार ॥ १२ ॥ सम० ॥ शीघ्रमेव जाणे सही, नवि होये बहु विलंब ॥ क्षिप्र भेद ए ज्ञाननो, जाणो मति अविलंब ॥ १३ ॥ स० ॥ बहु विचार करी जाणीए, ए अक्षिप्रह भेद ॥ क्षयोपशम विचित्रता, कहे महाज्ञानी संवेद ॥ १४ ॥ ॥ स० ॥ अनुमाने करी को ग्रहे, ध्वजथी जिनवर चैत्य ॥ पूर्व प्रबंध संभालीने, निश्रित भेद संकेत ॥ ॥ १५ ॥ स० ॥ बाहिर चिह्न ग्रहे नहीं, जाणे वस्तु विवेक ॥ अनिश्रित ए धारीए, आभिनिबोधक टेक

॥ १६ ॥ स० ॥ निःसंदेह निश्चयपणे. जाणे वस्तु अधिकार ॥ निश्चित अर्थ ए चिंतवो. मतिज्ञान प्रकार ॥ १७ ॥ स० ॥ एम होचे वा अन्यथा. एम संदेह जुत्त ॥ धरे अनिश्चित जावथी. वस्तु ग्रहण उपयुत्त ॥ १८ ॥ स० ॥ बहु प्रमुख जेदे ग्रहुं, जिम एकदा निम नित्य ॥ बुद्धि थाये जेदने. ए ध्रुव जेदनुं नित्त ॥ १९ ॥ स० ॥ बहु प्रमुख रूपे कदा. कदा अव-ग्रहादिक रूप ॥ ए रीते जाणे तदा, जेद अध्रुव स्वरूप ॥ २० ॥ सम० ॥ अवग्रहादिक चउ जेदमां, जाणवा योग्य ते ज्ञेय ॥ ते चउ जेदे धारीयो, द्रव्यादिकथी गणेय ॥ २१ ॥ सम० ॥ जाणे आदे-शे करी, क्या पर्याय विसिठ ॥ धर्मादिक सवि द्र-व्यने, सामान्य विशेष गरिठ ॥ २२ ॥ स० ॥ सा-मान्यादेशे करी, लोकालोक स्वरूप ॥ क्षेत्रथी जाणे सर्वनो, तत्त्व प्रतीत अनुरूप ॥ २३ ॥ स० ॥ अतीत अनागत वर्तना, अद्धा समय विशेष ॥ आदेशे जाणे , वितथ नहीं लवलेश ॥ २४

जावनो, जाणे जाग

जे, पंच सामान्ये

जाणीये, म

॥ शीघ्र समय रोहा परे, अकल औत्पातिकी सार ॥ २६ ॥ सम० ॥ विनय करंतां गुरु तणो, पामे मति विस्तार ॥ ते विनयिकी मति कही, सघला गुण शिरदार ॥ २७ ॥ सम० ॥ करतां कार्य अभ्यासथी, उपजे मति सुविचार ॥ ते बुद्धि कही कार्मिकी, नंदी सूत्र मोकार ॥ २८ ॥ सम० ॥ जे वयना परिपाकथी, लहे बुद्धि भरपूर ॥ कमलवने महा हंसने, परिणामिकी ए सनूर ॥ २९ ॥ स० ॥ अठ्वीश वत्रीश डुग चउ, त्रणसें चालीश जेह ॥ दर्शनथी मति भेद ते, विजयलक्ष्मी गुणगेह ॥ ३० ॥ सम० ॥ ॥ ए मतिज्ञानना अष्टाविंशति भेद कह्या ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय श्रुतज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रुतज्ञानने नित्य नमुं, स्वपर प्रकाशक जेह ॥ जाणे देखे ज्ञानने, श्रुतथी टाले संदेह ॥ अनभिलाप्य अनंत भाव, वचन अगोचर दाख्या ॥ तेहनो भाग अनंतमो, वचन पर्याये आख्या ॥ वली कथनीय पदार्थनो ए, भाग अनंतमो जेह ॥ चउदे पूरवमां रच्यो, गणधर गुण ससनेह ॥ १ ॥ मांहोमांहे पूरवधरा, अक्षर लाभे सरिखा ॥

वह्राण वखीया नावथी, ते श्रुत मतिय विशेखा ॥ तेह्विज माटे अनंतमे, नाग निवऊा वाचा ॥ समकित श्रुतना जाणीये, सर्वं पदारथ साचा ॥ ऊव्य गुण पर्याये करी, जाणे एक प्रदेश ॥ जाणे ते सवि वस्तुने, नंदी सूत्र उपदेश ॥ २ ॥ चौवीश जिनना जाणीए, चोद पूरवधर साध ॥ नव शत तेत्रीश सहस ठे, अठाणुं निरुपाध ॥ परमत एकांत वादीनां, शास्त्र सकल समुदाय ॥ ते समकितवंते ग्रह्या, अर्थ यथार्थज थाय ॥ अरिहंत श्रुतकेवली कहे ए. ज्ञानाचार चरित्त ॥ श्रुत पंचमी आराधवा, विजयलक्ष्मी सूरि चित्त ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ नमुथ्थुं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥

॥ अथ स्तवनं लिख्यते ॥

॥ हरीया मन लागो ॥ ए देशी ॥ श्री श्रुत चोद नेदे करी, वरणवे श्री जिनराज रे ॥ उपधानादि आचारथी, सेवीये श्रुत महाराज रे ॥ १ ॥ श्रुतशुं दिल मान्यो ॥ दिल मान्यो रे, मन मान्यो, प्रज्जु आगम सुखकार रे ॥ श्रुत० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ एकादि अक्षर संयोगथी, असंयोगी अनंत रे ॥

स्वपर पर्याये एकाक्षरो, गुण पर्याय अनंत रे ॥ २ ॥ श्रुत० ॥ अक्षरनो अनंतमो, नाग उघाडो छे नित्य रे ॥ ते तो अवराये नहीं, जीव सूक्ष्मनुं ए चित्त रे ॥ ३ ॥ श्रुत० ॥ [1]इछे [2]सांनलवा [3]फरी पूछे, नि[4]सुणे [5]ग्रहे [6]विचारंत रे ॥ निश्चय धारणा तिम करे, धीगुण आठ ए गणंत रे ॥ ४ ॥ श्रुत० ॥ वादी चौवीश जिन तणा, एक लाख बत्रीश हजार रे ॥ वसें सयल सना मांहे, प्रवचन महिमा अपार रे ॥ ५ ॥ श्रुत० ॥ नणे नणावे सिद्धांतने, लखे लखावे जेह रे ॥ तस अवतार वखाणीये, विजयलक्ष्मी गुणगेह रे ॥ ६ ॥ श्रुत० ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ विधि ॥

॥ पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह नगवन् श्रीश्रुतज्ञान आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं? इछं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंद० ॥ अन्न० ॥ कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारीने थोय कहेवी, ते कहे छे.

॥ गोयम बोले ग्रंथ संनाली ॥ एदेशी ॥ त्रिगडे

वेसी श्रीजिन जाण, बोले जाषा अमिय समाण ॥ मत अनेकांत प्रमाण ॥ अरिहंत शासन सफरी सुखाण, चउ अनुयोग जिहां गुणखाण ॥ आतम अनुजव ठाण ॥ सकल पदारथ त्रिपदी जाण, जोजन जूमि पसरे वखाण ॥ दोष वत्रीश परिहाण ॥ केवली जाखित ते श्रुतनाण, विजयलक्ष्मी सूरि कहे वहुमान, चित्त धरजो सयाण ॥ १ ॥ इति स्तुति॥ पठी खमासमण देइ श्रुतज्ञानना चौद गुण वर्णववाने अर्थे दोहा कहेवा, ते लखे ठे.

॥ दोहा ॥

॥ वंदो श्रीश्रुतज्ञानने, जेद चतुर्दश वीश ॥ तेहमां चउदश वरणवु, श्रुतकेवली श्रुत ईश ॥ १ ॥ जेद अढार अकारना, एम सवि अक्षर मान ॥ लब्धि संज्ञा व्यंजन विधि, अक्षर श्रुत अवधान ॥ २ ॥ अथ पीठिका ॥ पवयण श्रुत सिद्धांत ते, ... समय वखाणी ॥ पुजो बहुविध रागथी, ... चित्त आणी ... दोहा गुण ... ॥ ॥ ... टिके, ... ॥ गद अन .

अर्थ प्रकाशक साच ॥२॥ पव०॥ संज्ञा जे दीहकालकी, तेणे सन्निया जाण ॥ मन इंद्रियथी उपन्युं, संज्ञी श्रुत अहिठाण ॥३॥ पव० ॥ मन रहित इंद्रिय थकी, निपन्युं जेहने ज्ञान ॥ क्षय उपशम आवरणथी, श्रुत असंज्ञी वखाण ॥ ४ ॥ पव० ॥ जे दर्शन दर्शन विना, दर्शन ते प्रतिपक्ष ॥ दर्शन दर्शन होय जिहां, ते दर्शन प्रत्यक्ष ॥ ५ ॥ पव० ॥ नंग जाल नर वाल मति, रचे विविध आयास ॥ तिहां दर्शन दर्शन तणो, नहीं निदर्शन नास ॥ ६ ॥ पव० ॥ ललित त्रिनंगी नंगनर, नैगमादि नय नूर ॥ शुद्ध शुद्धतर वचनथी, समकित श्रुत वरु नूर ॥ ७ ॥ पव० ॥ सद्असद् वेहेंचण विना, ग्रहे एकांते पक्ष ॥ ज्ञानफल पामे नहीं, ए मिथ्या श्रुत लक्ष ॥ ८ ॥ पव० ॥ नरतादिक दश क्षेत्रमां, आदि सहित श्रुत धार ॥ निज निज गणधर विरचीयो, पामी प्रज्ञु आधार ॥ ए ॥ पव० ॥ डुप्पसह सूरीश्वर सुधी, वर्तशे श्रुतआचार ॥ एक जीवने आसरी, सादि सांत सुविचार ॥ १० ॥ पव० ॥ श्रुत अनादि द्रव्य नय थकी, शाश्वत नाव ठे एह ॥ महाविदेहमां ते सदा, आगम रयण अठेह ॥ ॥ ११ ॥ पव० ॥ अनेक जीवने आसरी, श्रुत ठे अ-

नादि अनंत ॥ द्रव्यादिक चउ भेदना, सादि अनादि विरतंत ॥ १२ ॥ प्र० ॥ सरिखा पाठ छे सूत्रमां, ते श्रुत गमिक सिद्धांत ॥ प्राये दृष्टिवादमां, शोभित गुण अनेकांत ॥ १३ ॥ प्र० ॥ सरिखा आलावा नहीं, ते कालिक श्रुतवंत ॥ आगमिक श्रुत ए पूजीये, त्रिकरण योग हसंत ॥ १४ ॥ ॥ प्र० ॥ अढार हजार पदे करी, आचारांग वखाण ॥ ते आगल दुगुणां पदे, अंग प्रविष्ट सुअ नाण ॥ ॥ १५ ॥ प्र० ॥ बार उपांगह जेह छे, अंग बाहिर श्रुत तेह ॥ अनंग प्रविष्ट वखाणीये, श्रुत लक्ष्मीसूरि गेह ॥ १६ ॥ प्र० ॥ इति श्रुतज्ञानं समाप्तं ॥

॥ अथ तृतीय अवधिज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ अवधिज्ञान त्रीजुं कह्युं, प्रगटे आतम प्रत्यक्ष ॥ क्षय उपशम आवरणनो, नवि इंद्रिय आपेक्ष ॥ देव निरय भव पामतां, होय तेहने अवश्य ॥ श्रद्धावंत समय लहे, मिथ्यात विभंग वश्य ॥ नर तिरिय गुणथी लहे, शुभ परिणाम संयोग ॥ काउस्सग्गमां मुनि हास्यथी, विघट्यो ते उपयोग ॥ ॥ १ ॥ जघन्यथी जाणे जुवे, रूपी द्रव्य अनंतां ॥

उत्कृष्टा सवि पुद्गला, मूर्त्ति वस्तु मुणंता ॥ क्षेत्र-थी लघु अंगुल तणो, भाग असंखित देखे ॥ तेहमां पुद्गल खंध जे, तेहने जाणे पेखे ॥ लोक प्रमाणे अलोकमां ए, खंरु असंख्य उक्किठ ॥ भाग असंख्य आवली तणो, अद्धा लघुपणे दीठ ॥ २ ॥ उत्स-र्पिणी अवसर्पिणी ए, अतीत अनागत अद्धा ॥ अति-शय संख्या तिगपणे, सांभलो भाव प्रबंधा ॥ एक एक द्रव्यमां चार भाव, जघन्यथी ते निरखे ॥ असंख्याता द्रव्य दीठ, पर्यव गुरुथी परखे ॥ चार भेद संक्षेपथी ए, नंदी सूत्र प्रकाशे ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे, ज्ञानभक्ति सुविलासे ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनं समाप्तं ॥ पछी नमथ्थुणं० ॥ जावंति० ॥ ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं, ते कहे छे.

॥ अथ स्तवन ॥

॥ कुंअर गंभारो नजरे देखतांजी ॥ ए देशी ॥

पूजो पूजो अवधिज्ञानने प्राणीया रे, समकितवंतने ए गुण होय रे ॥ सवि जिनवर ए ज्ञाने अवतरी रे, मानव महोदय जोय रे ॥ पूजो० ॥ १ ॥ शिवराज ऋषि विपर्यय देखतो रे, द्वीप सागर सात सात रे

॥ वीर पसाये दोष विभंग गयो रे, प्रगट्यो अवधि गुण विख्यात रे ॥ पूजो० ॥ २ ॥ गुरु स्थिति साधिक बासठ सागरु रे, कोइने एक समय लघु जाण रे ॥ नेद असंख्य छे तरतम योगथी रे, विशेषावश्यकमां एह वखाण रे ॥ पूजो० ॥ ३ ॥ चारसें एक लाख तेत्रीश सहस छे रे, उंहीनाणी मुणींद रे ॥ ऋषनादिक जग-दीश जिणंदनां रे ॥ नमे प्रनुपद अरविंद रे ॥ पूजो० ॥ ४ ॥ अवधिज्ञानी आणंदने दीए रे, मिछामि दुक्कडं गोयम स्वामी रे ॥ वरजो आशातन ज्ञान ज्ञानी तणी रे, विजयलक्ष्मी सुखधाम रे ॥ पूजो० ॥ ५ ॥ इति अवधिज्ञान स्तवनं ॥ ३ ॥ पछी जयवीयराय कही खमासमण देइ इछाकारेण संदिसह नगवन् त्रीजुं अवधिज्ञान आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं ? इछं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदण० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कही लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारी थोय कहेवी, ते लखे छे.

॥ अथ थुइ ॥

॥ शंखेश्वर साहिब जे समरे ॥ ए देशी ॥ उंहीनाण सहित सवि जिनवरु, चवी जननी कुखे

अवतरु ॥ जस नामे लहीये सुखतरु, सवि ईति उपद्रव संहरु ॥ हरी पाठक संशय संहरु, वीर महिमा ज्ञान गुणायरु ॥ ते माटे प्रजुजी विश्वंजरु, विजयांतिक लक्ष्मी सुहंकरु ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥ पठी खमासमण देइ उजा थइ गुण वर्णववाने अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा, ते कहे ठे.

॥ दोहा ॥

॥ असंख्य नेद अवधि तणा, षट्र तेहमां सा॰मान्य ॥ क्षेत्र पनक लघुथी गुरु, लोक असंख्य प्रमाण ॥ १ ॥ लोचन परे साथे रहे, ते अनुगामिक धाम ॥ ठासठ सागर अधिक ठे, एक जीव आशारी ठाम ॥ २ ॥ उपन्यो अवधिज्ञाननो, गुण जेहने अविकार ॥ वंदना तेहने माहरी, श्वास मांहे सो वार ॥ १ ॥ ए दोहो सर्वत्र खमासमणे कहेवो ॥ जे क्षेत्रे ठेही उपन्युं, तिहां रह्यो वस्तु देखंत ॥ थिर दीपकनी उपमा, अननुगामी लहंत ॥ उप॰ ॥ ॥ २ ॥ अंगुल असंख्येय जागथी, वधतुं लोक असंख्य ॥ लोकावधि परमावधि, वर्धमान गुण कंख्य ॥ उप॰ ॥ ३ ॥ योग्य सामग्री अजावथी, हीयमान

परिणाम ॥ अथ अथ पूरव योगथी, एहवो मननो काम ॥ उप० ॥ ४ ॥ संख्य असंख्य जोजन सुधी, उत्कृष्टो लोकांत ॥ देखी प्रतिपाति होये, पुद्गल द्रव्य एकांत ॥ उप० ॥ ५ ॥ एक प्रदेश अलोकनो, पेखे जे अवधिनाण ॥ अपडिवाइ अनुक्रमे, आपे केवलनाण ॥ उप० ॥ ६ ॥ इति अवधिज्ञान संपूर्ण ॥ पछी खमासमण देइ चैत्यवंदन करवुं इ० ॥

॥ अथ चतुर्थ मनःपर्यवज्ञान चैत्यवंदन ॥

॥ श्रीमनःपर्यवज्ञान छे, गुण प्रत्ययी ए जाणो ॥ अप्रमादी ऋद्धिवंतने, होय संयम गुणठाणो ॥ कोइक चारित्रवंतने, चढते शुभ परिणामे ॥ मनना भाव जाणे सही, सागारी उपयोग ठामे ॥ चिंतवित मनो द्रव्यना, जाणे खंध अनंता ॥ आकाशे मनोवर्गणा, रह्या ते नवि मुणंता ॥ १ ॥ संज्ञी पंचेंद्रिय प्राणीए, तनु योगे करी ग्रहीया ॥ मन योगे करी मनपणे, परिणमे ते द्रव्य मुणीया ॥ तिर्छु माणस क्षेत्रमां, अढी द्वीप विलोके ॥ तिर्छा लोकना मध्यथी, सहस जोयण अधो लोके ॥ ऊरध जाणे ज्योतिषी लगे, पलियनो भाग अ-

संख्य ॥ कालथी नाव थया थशे, अतीत अनागत संख्य ॥ २ ॥ नावथी चिंतत द्रव्यना, असंख्य पर्याय जाणे॥ ऋजुमतिथी विपुलमति, अधिका नाव वखाणे ॥ मननां पुद्गल देखीने, अनुमाने ग्रहे साचुं ॥ वितथपणुं पामे नहीं, ते ज्ञाने चित्त राचुं॥ अमूर्त नाव प्रगटपणे ए, जाणे श्रीनगवंत ॥ चरणकमल नमुं तेहनां, विजयलक्ष्मी गुणवंत ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पढी नमुठुणं० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कहीये ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ जीरेजी ॥ ए देशी ॥ जीरे माहारे श्रीजिनवर नगवान, अरिहंत निज निज ज्ञानथी ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ संयम समय जाणंत, तव लोकांतिक मानथी ॥ जीरेजी ॥ १ ॥ जी० ॥ तीर्थ वर्तावो नाथ, इम कही प्रणमे ते सुरा ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ षट् अतिशयवंत दान, लेइने हरखे सुर नरा ॥ जीरेजी ॥ २ ॥ जी० ॥ इणविध सवि अरिहंत, सर्वविरति जब उच्चरे ॥ जीरेजी ॥ जी० मनःपर्यव तव नाण, निर्मल आतम अनु-

सरे ॥ जीरेजी ॥ ३ ॥ जी० ॥ जेहने विपुल मति तेह, अप्रतिपातिपणे उपजे ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ अप्रमादी ऋद्धिवंत, गुणठाणे गुण नीपजे ॥ जीरेजी ॥४॥ जी० ॥ एक लक्ष पीस्तालीश हजार, पांचसें एकाणुं जाणीये ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ मननाणी मुनिराज, चोवीश जिनना वखाणीये ॥ जीरेजी ॥५॥ जी० ॥ हु वंडुं धरी नेह, सवि संशय हरे मन तणा ॥ जीरेजी ॥ जी० ॥ विजयलक्ष्मी शुभ नाव, अनुनव ज्ञानना गुण घणा ॥ जीरेजी ॥ ६ ॥ जी० ॥ इति मनःपर्यवज्ञान स्तवन ॥ पठी जयवीयराय कही खमासमण देइ इच्छाकारेण सं० ॥ चोथुं मनःपर्यवज्ञान आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं करेमि काउस्सग्गं० ॥ वंदणव० ॥ अन्नथ्थ० ॥ कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारी थोय कहेवी, ते लखीए ठीए.

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ श्री शंखेश्वर पास जिनेश्वर ॥ ए देशी ॥ प्रनुजी सर्व सामायिक उच्चरे, सिद्ध नमी मदवारी जी ॥ ठद्मस्थ अवस्था रहे ठे जिहां लगे,

योगासन तप धारी जी ॥ चोथुं मनःपर्यव तव पामे, मनुज लोक विस्तारी जी ॥ ते प्रभुने प्रणमो भवि प्राणी, विजयलक्ष्मी सुखकारी जी ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ उभा रही गुण स्तववा अर्थे पीठिकाना दोहा कहेवा, ते लखीए छीए.

॥ अथ दोहा ॥

॥ मनःपर्यव दुग भेदथी, संयम गुण लही शुद्ध ॥
भाव मनोगत संज्ञीना, जाणे प्रगट विशुद्ध ॥ १ ॥
घट ए पुरुषे धारीयो, इम सामान्य ग्रहंत ॥ प्राये विशेष विमुख लहे, रुजुमति मनह मुणंत ॥ २ ॥
ए गुण जेहने उपन्यो, सर्वविरति गुणठाण ॥ प्रणमुं हितथी तेहनां, चरणकमल चित्त आण ॥ १ ॥
नगर जाति कंचन तणो, धार्यो घट एह रूप ॥
इम विशेष मन जाणतो, विपुलमति अनुरूप ॥ २ ॥
ए गुण जेहने० ए आंकणी ॥ इति मनःपर्यव ज्ञान संपूर्ण.

॥ हवे खमासमण देइने पंचम केवलज्ञाननुं चैत्यवंदन करवुं, ते कहे छे.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्री जिन चउनाणी थइ, शुक्ल ध्यान अभ्यासे ॥ अतिशय अतिशय आतम रूप, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ निद्रा स्वप्न जागरदशा, ते सवि दूरे होवे ॥ चोथी उजागरदशा, तेहनो अनुभव जोवे ॥ क्षपक श्रेणी आरोहीया ए, अपूर्व शक्ति संयोगे ॥ लही गुणठाणुं बारमुं, तुरीय कषाय वियोगे ॥ १ ॥ नाण दंसण आवरण मोह, अंतराय घनघाती ॥ कर्म दुष्ट उच्छेदीने, थया परमातम जाति ॥ दोय धरम सवि वस्तुना, समयांतर उपयोग ॥ प्रथम विशेषपणे ग्रहे, बीजे सामान्य संयोग ॥ सादि अनंत भांगे करी, दर्शन ज्ञान अनंत ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, भाव जिणंद जयवंत ॥ २ ॥ मूल पयडिमां एक बंध, सत्ता उदये चार ॥ उत्तर पयडिनो एक बंध, उदये रहे बायाल ॥ सत्ता पंचासी तणी, कर्म जेह रज्जु ठार ॥ मन वच काया योग जास, अविचल अविकार ॥ संयोगी केवली तणी ए, पा॰ मी दशाए विचरे ॥ अक्षय केवलज्ञानना, विजयलक्ष्मी गुण उच्चरे ॥ ३ ॥ इति श्री केवलज्ञान चै-

त्यवंदनं ॥ पछी नमुत्थु० ॥ जावंति० ॥ नमोऽर्हत्० ॥ कही स्तवन कहेवुं, ते लखीए छीए.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ कपूर होय अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ श्रीजिनवरने प्रगट थयुं रे, क्षायिक नावे ज्ञान ॥ दोष अढार अनावथी रे, गुण उपन्या ते प्रमाण रे ॥ नविया वंदो केवलज्ञान ॥ १ ॥ पंचमी दिन गुणखाण रे ॥ नविया वंदो० ॥ ए आंकणी ॥ अनामीना नामनो रे, किश्यो विशेष कहेवाय ॥ ए तो मध्य नावे करी रे, वचन उल्लेख ठराय रे ॥ नवि० ॥ २ ॥ ॥ वंदो० ॥ ध्यान टाणे प्रनु तुं होये रे, अलख अगोचर रूप ॥ परा पश्यंति पामीने रे, कांइ प्रमाणे मुनिरूप रे ॥ नवि० ॥ ३ ॥ वंदो० ॥ छती पर्याय जे ज्ञानना रे, ते तो नवि बदलाय ॥ ज्ञेयनी नवनवी वर्तना रे, समयमां सर्व जणाय रे ॥ नवि० ॥ ४ ॥ वंदो० ॥ बीजा ज्ञान तणी प्रना रे, एहमां सर्व समाय ॥ रविप्रनाथी अधिक नहीं रे, नक्षत्र गण समुदाय रे ॥ नवि० ॥ ५ ॥ वंदो० ॥ गुण अनंता ज्ञानना रे, जाणे धन्य नर तेह ॥ विजयलक्ष्मी सूरि ते लहे रे,

ज्ञान महोदय गेह रे ॥ नवि० ॥ ६ ॥ वंदो० ॥ इति केवलज्ञान स्तवनं ॥

पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् श्री केवलज्ञान आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं करेमि काउस्सग्गं ॥ वंदणव० ॥ अन्नत्थ० ॥ कही एक लोगस्स अथवा चार नवकारनो काउस्सग्ग करी काउस्सग्ग पारी नमोऽर्हत्० कही थोय कहेवी ते लखीए छीए.

॥ अथ थोय ॥

॥ प्रह उठी वंदु ॥ ए देशी ॥ छत्रत्रय चामर तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि डुंदुभि, भा मंमल झलकार ॥ वरसे सुर कुसुमे, सिंहासन जिन सार ॥ वंदे लक्ष्मी सूरि, केवलज्ञान उदार ॥ इति स्तुति ॥ पछी खमासमण देइ उभा रही गुण स्तववा दोहा कहेवा ते कहीए छीए.

॥ अथ दोहा लिख्यते ॥

॥ बहिरातम त्यागे करी, अंतर आतम रूप ॥ अनुभवीजे परमातमा, भेद एकज चिद्रूप ॥ १ ॥ पुरुषोत्तम परमेश्वरु, परमानंद उपयोग ॥ जाणे देखे सर्वने, स्वरू-

परमण सुख जोग ॥ २ ॥ गुण पर्याय अनंतता, जाणे सघलां द्रव्य ॥ काल त्रयवेदी जिणंद, जापित जव्याजव्य ॥ ३ ॥ अलोक अनंतो लोकमां, थापे जेह समर्थ ॥ आतम एक प्रदेशमां, वीर्य अनंत पसत्थ ॥ ४ ॥ केवल दंसण नाणनो, चिदानंद घन तेज ॥ ज्ञानपंचमी दिन पूजीये, विजयलक्ष्मी शुज हेज ॥ ५ ॥ इति श्री लक्ष्मीसूरिकृतं विधिसहितं श्रीज्ञानपंचमी देववंदनं समाप्तम् ॥

॥ अथ पंमित श्रीरूपविजयजीकृत मौन एकादशीना देववंदन प्रारंजः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नगर गजपुर, पुरंदरपुर, शोजया अति, जित्वरं ॥ गज वाजी रथवर, कोटिकलितं, इंदिराभृत, मंदिरं ॥ नरनाथ बत्रीश, सहस सेवित, चरणपंकज, सुखकरं ॥ सुर असुर व्यंतर, नाथ पूजित, नमो नमो श्रीअर, जिनवरं ॥ १ ॥ अप्सरा सम, रूप अद्भुत, कला यौवन, गुणजरी ॥ एक लाख बाणुं, सहस उपर, सोहीए, अंतेउरी ॥ चोराशी लक्ष गज, वाजी स्यंदन, कोटि छन्नुं, नटवरं ॥ सुर अ० ॥

॥ २ ॥ सग पणिंदी, सग एगिंदी, चौद रत्नगुं, शोजितं ॥ नव निधाना, धिपति नाकी, जक्ति जाव, भृतैर्नतं ॥ कोटि ठन्नुं, ग्राम नायक सकल शत्रु, विजित्वरं ॥ सुर अ० ॥ ३ ॥ सहस अष्टोत्तर सुलंठन, लक्षितं, कनकछविं ॥ चिह्न नंदा, वर्त शोजितं, स्वरप्रजा, निर्जित रविं ॥ चक्री सप्तम, जुक्त जोगी, अष्टादशमो, जिनवरं ॥ सुर अ० ॥ ४ ॥ लोकांतिकामर, बोधितो जिन, त्यक्त राज्य, रमाजरं ॥ मृगशिर एकादशी, शुक्ल पक्षे, गृहीत संयम, सुखकरं ॥ अरनाथ प्रजु पद, पद्म सेवन, शुद्ध रूप सुखाकरं ॥ सुर असुर० ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पठी नमुत्थुणं० ॥ जयवीयराय० ॥ अर्धो कही खमासमण देइने चैत्यवंदन करवुं, ते कहे ठे

॥ अथ चैत्यवंदनं लिख्यते ॥

॥ राय सुदर्शन कुल नजे, नूतन दिन मणिरूप ॥ देवी माता जनमीयो, नमे सुरासुर जूप ॥ १ ॥ कुमर राज्य चक्रिपणे, जोगवी जोग उदार ॥ त्रे सठ सहस वरषां पठी, लहे प्रजु संयम जार ॥ २ ॥ सहस पुरुष साथे लहे, संयम श्रीजिनराय ॥ तर

पदपद्म नम्या थकी, शुद्ध रूप निज थाय ॥ ३ ॥
इति चैत्यवंदन ॥ पछी जंकिंचि० ॥ नमुथ्थुणं० ॥
अरिहंत चेइआणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग
करीने थोय कहेवी, ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अरनाथ जिनेश्वरु, चक्री सप्तम सोहे ॥
कनकवरण छवि जेहनी, त्रिभुवन मन मोहे ॥ भोग
करमनो क्षय करी, जिन दीक्षा लीधी ॥ मनप-
र्यव नाणी थया, करी योगनी सिद्धि ॥ १ ॥
मागशिर सुदि एकादशी, अर दीक्षा लीधी ॥ मल्लि
जनम व्रत केवली, नमि केवल ऋद्धि ॥ दश खेत्र
त्रण कालनां, पंच पंच कल्याण ॥ तिणे ए तिथि
आराधतां, लहीए शिवपुर ठाण ॥ २ ॥ अंग अ-
ग्यार आराधवां, वली बार उपांग ॥ मूल सूत्र चारे
भलां, षट छेद सुचंग ॥ दश पयन्ना दीपता, नंदी
अनुयोग द्वार ॥ आगम एह आराधतां, लहो
भवजल पार ॥ ३ ॥ जिनपद सेवा नित्य करे,
समकित शुचिकारी ॥ जक्षेश जक्ष सोहामणो,
देवी धारणी धारी ॥ प्रभु पदपद्मनी सेवना, करे जे

नर नारी ॥ चिदानंद निज रूपने, लहे ते निरधारी ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ पठी नमुथ्थुण ॥ अरिहंत चेइआणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी पठी थोय कहेवी ते कहे छे.

॥ अथ थोयो लिख्यते ॥

॥ श्री अर जिन ध्यावो, पुण्यना थोक पावो ॥ सवि दुरित गमावो, चित्त प्रभु ध्यान लावो ॥ मद मदन विरावो, भावना शुद्ध भावो ॥ जिनवर गुण गावो, जिम लहो मोक्ष ठावो ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, क्षय करी मोह भारी ॥ केवल शुचि धारी, मान माया निवारी ॥ थया जग उपगारी, क्रोध योद्धापहारी शुचि गुणगण धारी, जे वस्या सिद्धि नारी ॥ २ ॥ नवतत्त्व वखाणी, सप्तभंगी प्रमाणी ॥ सग नयथी मिलाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ जिनवरनी वाणी, जे सुणे भव्य प्राणी ॥ तिणे करी अघहाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ समकिती नर नारी, तेहनी भक्ति कारी ॥ धारणी सूरि सारी, विघ्नना थोक हारी ॥ प्रभु आणा कारी, लब्धी लीला विहारी ॥ संघ

दुरित निवारी, होय आणंदकारी ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ पछी नमुथ्थुणं० ॥ कही जावंति चेइआइं कही पछी जावंत केवि साहू कही स्तवन कहेवुं ते.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ फतमलना गीतनी देशी ॥ जगपति श्री अर जिन जगदीश, हस्तिनागपुर राजीयो ॥ जगपति राय सुदर्शन नंद, महिमा मही मांहे गाजीयो ॥१॥ जगपति कंचन वरण शरीर, कामित पूरण सुरतरु ॥ जगपति लंछन नंदावर्त, त्रण भुवन मंगलकरु ॥ २ ॥ जगपति षट खंड भरत अखंड, चक्रवर्तीनी संपदा ॥ जगपति सहस बत्रीश भूपाल, सेवित चरणकमल सदा ॥ ३ ॥ जगपति सोहे सुंदर वान, चउसठी सहस अंतेउरी ॥ जगपति भोगवी भोग रसाल, जोग दशा चित्तमां धरी ॥ ४ ॥ जगपति सहस पुरुष संघात, मृगशिर सुदि एकादशी ॥ जगपति संयम लीये प्रभु धीर, त्रिकरण योगे उल्लसी ॥ ५ ॥ जगपति चोसठ सुरपति ताम, भक्ति करे चित्त गहगही ॥ जगपति नाचे सुरवधू कोडि, अंग मोडी आगल रही ॥ ६ ॥ जगपति

वाजे नव नव छंद, देव वाजित्र सोहामणां ॥ सुरपति देवदूष्य ठवे खंध, पुष्पवृष्टि करे सुर घणा ॥ ७ ॥ जगपति धन्य वेला घडी तेह, धन्य ते सुर नर खेचरा ॥ जगपति जेणे कल्याणक दीठ, धन्य जनम ते भव तस्या ॥ ८ ॥ जगपति प्रभु पदपद्मनी सेव, त्रिकरण शुद्धे जे करे ॥ जगपति क-रीय करमनो अंत, शुद्ध रूप निज ते वरे ॥ ९ ॥ इति श्री अरजिन स्तवनम् ॥ पछी जयवीयराय अर्धा कहीने चैत्यवंदन कहेवुं, ते लखीए छीए.

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ अवधिज्ञाने आभोगीने, निज दीक्षाकाल ॥ दान संवछरी जिन दीये, मनोवंछित ततकाल ॥ १ ॥ धन कण कंचन कामिनी, राज ऋद्धि भंडार ॥ छोमी संयम आदरे, सहस पुरुष परिवार ॥ २ ॥ मृगशिर सुदि एकादशी ए, संयम लीये महाराज ॥ तस पदपद्म सेवन थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥ पछी नमुथ्थुणं कहीने जयवीयराय संपूर्ण कहेवा॥ इति प्रथम देववंदन जोमो कह्यो ॥ १ ॥ एज रीते चार जोमाने

विधि जाणवी ॥ हवे बीजो जोमो कहेवो तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन कहे छे.

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ जय जय मल्लि जिणंद चंद, गुणकंद अमंद ॥ नमे सुरासुर चंद, तिम नृपति वृंद ॥ १ ॥ कुसुम गेह शय्या कुसुम,कुसुमाभरण सोहाय ॥ जननी कूखे जब जिन हुता, मल्लि नाम तिणे ठाय ॥ २ ॥ कुंभ नरेश्वर कुलतिलो ए, मल्लिनाथ जिनराज ॥ तस पदपद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥ ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ नील वरण दुःख हरण,शरण शरणागत वत्सल॥ निरुपम रूप निधान, सुजस गंगाजल निरमल ॥ ॥ १ ॥ सुगुण सुरासुर कोमि, दोमी नित्य सेवा सारे ॥ भक्ति जुक्ति नित्यमेव,करी निज जन्म सुधारे ॥ ॥ २ ॥ बालपणे जिनराजने ए, सवि मली हुलरावे ॥ जिन मुखपद्म निहालीने, बहु आणंद पावे ॥ ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ पुरुषोत्तम परमातमा, परम ज्योति परधान ॥ परमानंद स्वरूप रूप, जगमां नहीं उपमान ॥ १ ॥ मरकत रत्न समान वान, तनुकांति विराजे ॥ मुखशोभा श्रीकार देखी, विधुमंडल लाजे ॥ २ ॥ इंदिवरदल नयन सयल, जन आणंदकारी ॥ कुंभराय कुल भाण भाल, दीपित मनोहारी ॥ ३ ॥ सुरवधू नरवधू मली मल्लि, जिन गुणगण गाती ॥ भक्ति करे गुणवंतनी, मिथ्या अघ घाती ॥ ४ ॥ मल्लि जिणंद पदपद्मनी ए, नित्य सेवा करे जेह ॥ रूपविजय पद संपदा, निश्चय पामे तेह ॥ ५ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥ हवे थोय जोडा बे कहे छे.

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोडो ॥

॥ सुण सुण रे साहेली, उठी सद्हुथी पहेली ॥ करी स्नान वेहेली, जिम वधे पुण्य वेली ॥ तजी मोहनी पल्ली, खंड करी काम वल्ली ॥ करी भक्ति सुभल्ली, पूजी जिनदेव मल्लि ॥ १ ॥ सवि जिन सुखकारी, मोह निद्रा निवारी ॥ भवि जन निस्तारी, वाणी स्याद्वाद धारी ॥ निर्मल गुणकारी,

धौत मिथ्यात गारी ॥ नमीए नर नारी, पाप संताप गरी ॥ २ ॥ मृगशिर अजुआली, सर्व तिथिमां रसाली ॥ एकादशी पाली, पापनी श्रेणी गाली ॥ आगममां रसाली, तिथि कही ते संज्ञाली ॥ शिववधू लटकाली, परणशे देइ ताली ॥ ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, जक्ति हैडे धरेवी ॥ जिन जक्ति करेवी, तेहनां डुःख हरेवी ॥ मन महिर करेवी, लच्छी लीला वरेवी ॥ कवि रूप कहेवी, देजो सुख नित्यमेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो बीजो जोमो ॥

॥ मिथुलापुरी जाणी, स्वर्ग नगरी समाणी ॥ कुंज नृप गुणखाणी, तेजथी वज्र पाणी ॥ प्रजावती राणी, देवनारी समाणी ॥ तस कुक्ख वखाणी, जन्म्या जिहां मल्लि नाणी ॥ १ ॥ दिशिकुमरी आवे, जन्म करणी ठरावे ॥ जिनना गुण गावे, जावना चित्त जावे ॥ जन्मोत्सव दावे, इंद्र सुर शैल ठावे ॥ हरि जिन गृह आवे, लेइ प्रजु मेरु जावे ॥ २ ॥ अच्युत सुर राजा, स्नात्र करे जक्तिजाजा ॥ निज निज स्थिति ब्राजा, पूजे जिन जक्ति

ताजा ॥ निज चढता दिवाजा, सूत्रमर्याद ब्राजा ॥ समकित करी साजा, ज्रोगवे सुख माजा ॥ ३ ॥ सुरवधू मली रंगे, गाय गुण बहु उमंगे ॥ जिन लइ उठरंगे, गोदे थापे उमंगे ॥ जिनपतिने संगे, ज्रक्तिरंग प्रसंगे ॥ संघ ज्रक्ति तरंगे, पामे लछी अज्रंगे ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥ ए थोयोना वे जोमा कह्या ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ मारो पीयुडो परघर जाय, सखी शुं कहीये रे ॥ किम एकलमां रेहेवाय, वियोगे मरीये रे ॥ ए देशी ॥ मिथिला ते नयरी दीपती रे, कुंज नृपति कुलहंस ॥ मल्लि जिणंद सोहामणो रे, सयल देव अवतंस ॥ १ ॥ सखी सुण कहीये रे, म्हारो जिनजी मोहन वेली, हयडे वहीये रे ॥ ए आंकणी ॥ ठप्पन दिशिकुमरी मली रे, करती जन्मनां काज ॥ हेजाली हरखे करी रे, हुलरावे जिनराज ॥ सखी० ॥ २ ॥ म्हारो० ॥ वीणा वजावे वालही रे, लली लली जिन गुण गाय ॥ चिरंजीवो ए वालुमो रे, जिम कंचनगिरिराय ॥ सखी० ॥

॥ ३ ॥ महा० ॥ केइ करमां वींजण ग्रही रे, वींजे हरखे वाय ॥ चतुरा चामर ढालती रे, सुरवधू मन मकलाय ॥ सखी० ॥ ४ ॥ महा० ॥ नाचे साचे प्रेमथी रे, राचे माचे चित्त ॥ जाये समकित शुद्धता रे, नवजल तरण निमित्त ॥ सखी० ॥ ५ ॥ महा० ॥ उर शिर स्कंध उपर धरे रे, सुरवधू होमा होमी ॥ जगत तिलक नाले धरी रे, करती मोमा मोमी ॥ सखी० ॥ ॥ ६ ॥ महा० ॥ तव सुरपति सुरगिरि शिरे रे, नमन करे कर जोमी ॥ तीर्थोदक कुंना नरी रे, साठ लाख एक कोमि ॥ सखी० ॥ ७ ॥ महा० ॥ जिन जननी पासे ठवी रे, वरसी रयणनी राशि ॥ सुरपति नंदीश्वर गया रे, धरता मन उल्लास ॥ सखी० ॥ ॥ ७ ॥ महा० ॥ सुरपति नरपतिए कस्यो रे, जन्म उत्सव अति चंग ॥ मल्लि जिणंद पदपद्मशुं रे, रूपविजय धरे रंग ॥ सखी० ॥ ए ॥ महा० ॥ इति द्वितीय जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ तृतीय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भुत रूप सुगंधी वास, नहीं रोग

विकार ॥ मेल नहीं जस देह रेह, परस्वेद लगार ॥ १ ॥ सागर वर गंभीर धीर, सुरगिरि सम जेह ॥ औषधिपति सम सौम्य कांति, वर गुणगण गेह ॥ २ ॥ सहस अष्टोत्तर लक्षणे ए, लक्षित जिनवर देह ॥ तस पदपद्म नम्या थकी, न रहे पापनी रेह ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लिनाथ शिव साथ, आथ वर अक्षयदायी ॥ छाजे त्रिभुवन मांहि, अधिक प्रभुनी ठकुराइ ॥ १ ॥ अनुत्तर सुरथी अनंत गुण, तनु शोभा छाजे ॥ आहार नीहार अदृश जास, वर अतिशय राजे ॥ २ ॥ मृगशिर सुदि एकादशी ए, लीये दीक्षा जिनराज ॥ तस पदपद्म नम्या थकी, सीझे सघलां काज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय जय मल्लि जिणंद देव, सेवा सुरपति सारे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संयम अवधारे ॥ १ ॥ अभ्यंतर परिवारमे, संयती त्रणसें जास ॥ त्रणसें पट नर संयमे, साथे व्रत लीए खास ॥ २ ॥

देवदूष्य खंधे धरी ए, विचरे जिनवर देव ॥ तस पदपद्मनी सेवना, रूप कहे नित्यमेव ॥३॥ इति ॥

॥ अथ थोयोनो प्रथम जोडो ॥

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जिम लहो सुख वृंदा ॥ दली दुरगति दंदा, फेरी संसार फंदा ॥ पदयुग अरविंदा, सेवीये थइ अमंदा ॥ जिम शिवसुख कंदा, विस्तरे छंडी दंदा ॥ १ ॥ जिनवर जयकारी, विश्व जव्योपगारी ॥ करे जब व्रत त्यारी, ज्ञान त्रीजे निहारी ॥ तव सुर अधिकारी, विनवे जक्ति धारी ॥ वरो संयम नारी, परिग्रहारंज्ञ डारी ॥२॥ मनपज्जव नाणी, हुआ चारित्र खाणी ॥ सुर नर इंद्राणी, वंदे बहु जाव आणी ॥ ते जिननी वाणी, सूत्र मांहि लखाणी ॥ आदरे जेह प्राणी, ते वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ पारणुं जस गेहे, नाथ करे जइ स्वदेहे ॥ जरे कंचन मेहे, उंक तस देव ने-हे ॥ संघ डुरित हरेहिं, देव देवी वरेहिं ॥ कुबेर सुरेहिं, रूपविजय प्रदेहिं ॥ ४ ॥ इति थोयो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिन नामे, संपदा कोडि पामे ॥ डु-

रगति दुःख वामे, स्वर्गनां सुख जामे ॥ संयम अनिरामे, जे यथाख्यात नामे ॥ करी कर्म विरामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ १ ॥ पंच जरह मझार, पंच ऐरवत सार ॥ त्रिहुं काल विचार, नेवुं जिननां उदार ॥ कल्याणक उदार, जाप जपीये श्रीकार ॥ जिम करी जवपार, जइ वरो सिद्धि नार ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, सूत्र मांहे गुंथाणी ॥ पट द्रव्य वखाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ सग जंगी प्रमाणी, सस नयथी ठराणी ॥ सांजले दिल आणी, ते वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, मल्लि जिन पाय सेवी ॥ प्रजु गुण समरेवी, जक्ति हेडे धरेवी ॥ संघ दुरित हरेवी, पाप संताप खेवी ॥ रूपविजय कहेवी, लछी लीला वरेवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सखी आवी देवदीवाली रे ॥ ए देशी ॥ पंचम सुर लोकना वासी रे, नव लोकांतिक सुविलासी रे, करे विनति गुणनी राशि ॥ १ ॥ मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजे रे, जवि जीवने शिवसुख दीजे ॥ मल्लि० ॥ ए आंकणी ॥ तुमे करुणारस जंमार रे, पाम्या ठो जवजल पार रे, सेवकनो करो उ-

ङ्गार ॥ मल्लि० ॥ २ ॥ नवि० ॥ प्रभु दान संवत्सरी आपे रे, जगनां दारिद्र दुःख कापे रे, नव्यत्वपणे तस थापे ॥ मल्लि० ॥ ३ ॥ नवि० ॥ सुरपति सघला मली आवे रे, मणि रयण सोवन वरसावे रे, प्रभुचरणे शीश नमावे ॥ मल्लि० ॥ ४ ॥ नवि० ॥ तीर्थोदक कुंभा लावे रे, प्रभुने सिंहासन ठावे रे, सुरपति भक्ते नवरावे ॥ मल्लि० ॥ ५ ॥ नवि० ॥ वस्त्राभरणे शणगारे रे, फूलमाला हृदय पर धारे रे, दुःखडां इंद्राणी उवारे ॥ मल्लि० ॥ ६ ॥ नवि० ॥ मल्या सुर नर कोडाकोडी रे, प्रभु आगे रह्या कर जोडी रे, करे भक्ति युक्ति मद मोडी ॥ मल्लि० ॥ ७ ॥ नवि० ॥ मृगशिर सुदिनी अजुआली रे, एकादशी गुणनी आली रे, वस्या संयम वधू लटकाली ॥ मल्लि० ॥ ८ ॥नवि०॥ दीक्षा कल्याणक एह रे, गातां दुःख न रहे रेह रे, लहे रूपविजय जस नेह ॥ मल्लि० ॥ ९ ॥ नवि० ॥ इति श्री मल्लिजिन स्तवनम् ॥ इति त्रीजो जोडो समाप्त ॥

॥ अथ चोथो जोडो प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन त्रण कहे छे ॥

॥ वैदर्भ देश मिथिलापुरी, कुंभ नृपति कुल

नाण ॥ पुण्य वल्ली मल्लि नमो, नवियण सुहझाण ॥ १ ॥ पणवीश धनुष्यनी देहनी, नील वरण मनोहार ॥ कुंन लंछन कुंननी परे, उतारे नवपार ॥ २ ॥ मृगशिर सुदि एकादशी ए, पाम्या पंचम नाण ॥ तस पदपद्म वंदन करी, पामो शाश्वत ठाण ॥ ३ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ पहेलुं चोथुं पांचमुं, चारित्र चित्त लावे ॥ क्षपकश्रेणी जिनजी चढी, घाति कर्म खपावे ॥ १ ॥ दीक्षा दिन शुन्न नावथी, उपन्युं केवलनाण ॥ समवसरण सुरवर रचे, चउविह संघ मंमाण ॥ २ ॥ वरस पंचावन सहसनुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तस पदपद्म नम्या थकी, चिद्रूपे चित्त ठाय ॥ ३ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ जय निर्जित मद मल्ल, शल्य त्रय वर्जित स्वामी ॥ ॥ जय निर्जित कंदर्प दर्प, जिन आतम रामी ॥ १ ॥ डुर्जय घाति कर्म मर्म, नंजन वरवीर ॥ निर्मल गुण संसार सार, सागर वर गंनीर ॥ २ ॥ अनंत

ज्ञान दर्शन धरू ए, मल्लि जिणंद मुणींद ॥ वदन-
पद्म तस देखतां, लहे चिद्रूप अमंद ॥ ३ ॥ इति
तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे लिख्यते ॥

॥ नमो मल्लि जिणंदा, जास नमे देववृंदा ॥ तिम
चोसठ इंदा, सेवे पादारविंदा ॥ दुरगति दुःख
दंदा, नामथी सुखकंदा ॥ प्रभु सुजस सुरिंदा, गाय
भक्ते नरिंदा ॥ १ ॥ नवति जिनराया, शुक्ल ध्याने
सुहाया ॥ सोहंपद पाया, त्यक्त मद मोह माया
॥ सुर नर गुण गाया, केवलश्री सुहाया ॥ ते सवि
जिनराया, आपजो मोक्ष माया ॥ २ ॥ केवल वरना-
णे, विश्वना भाव जाणे ॥ बार परषद ठाणे, धर्म
जिन जी वखाणे ॥ गणधर तिणे टाणे, त्रिपदीए
अर्थ माणे ॥ जे रहे सुहझाणे, ते रमे आत्मना-
णे ॥ ३ ॥ वैरुट्या देवी, भक्ति हैडे धरेवी ॥ जिन
सेव करेवी, विघ्ननां वृंद खेवी ॥ संघ दुरित हरेवी,
लछी लीला वरेवी ॥ रूपविजय कहेवी, आपजो
देवी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वि[illegible] ॥

॥ मल्लि जिन राजा, [illegible] भाजा।

चढत दीवाजा, पामीये सुख ताजां ॥ कोइ लोपे न माजा, नित्य नवा सुख साजा ॥ कोइ न करे जा जा, पुण्यनी एह माजा ॥ १ ॥ मल्लि नमि नामे, केवलज्ञान पामे ॥ दश खेत्र सुठामे, तिमज जिन जिन्न नामे ॥ त्रएय काल निमामे, घातियां कर्म वामे ॥ ते जिन परिणामे, जइ वसे सिद्धि धामे ॥ २ ॥ जिनवरनी वाणी, चार अनुयोग खाणी ॥ नवतत्त्व वखाणी, द्रव्य षटमां प्रमाणी ॥ गणधरे गुंथाणी, सांजले जेह प्राणी॥करी कर्मनी हाणी, जइ वरे सिद्धि राणी ॥ ३ ॥ सुर कुवेर आवे, शीश जिनने नमावे ॥ मिथ्यात खपावे, शुद्ध सम्यक्त्व पावे ॥ पुण्य थोक जमावे, संघजक्ति प्रजावे ॥ पद्मविजय सुहावे, शिष्य तस रूप गावे ॥ ४ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ सांजल रे तुं सजनी मोरी, रजनी किहां रमी आवी जी रे ॥ ए देशी ॥ मल्लि जिनेश्वर अर्चित केशर, अलवेसर अविनाशी जी ॥ परमेश्वर पूरण पद जोक्ता, गुणराशि शिववासी ॥ जिन जी ध्यावो जी ॥ १ ॥ मल्लि जिणंद मुणींदना गुण गावो जी ॥ ए आंकणी ॥ मृगशिर सुदि एकादशी दिवसे, उ-

पन्युं केवलनाण जी ॥ लोकालोक प्रकाशक जासक, प्रगट्यो अभिनव जाण ॥ जिन० ॥ २ ॥ मल्लि० ॥ मत्यादिक चउ नाणनुं जासन, एहमां सकल समाय जी ॥ ग्रह उरु तारा चंद्रप्रजा जिम, तरणी तेजमां जाय ॥ जिन० ॥ ३ ॥ मल्लि० ॥ ज्ञेय जाव सवि ज्ञाने जाणे, जे सामान्य विशेष जी ॥ आप स्वजावे रमण करे प्रजु, तजी पुद्गल संकलेश ॥ जिन० ॥ ४ ॥ मल्लि० ॥ चालीश सहस महा मुनि जेहना, रत्नत्रय आधार जी ॥ सहस पंचावन साहुणी जाणो, गुण मणि रयण जंमार ॥ जिन० ॥ ५ ॥ मल्लि० ॥ शत सम न्यून सहस पंचावन, वरस केवल गुण धरता जी ॥ विचरे वसुधा उपरे जिन जी, बहु उपगारने करता ॥ जिन० ॥ ६ ॥ मल्लि० ॥ केवलनाण कल्याणक जिननुं, जे जवियण नित्य गावे जी ॥ जिन उत्तम पदपद्म प्रजावे, सुधुं रूप ते पावे ॥ जिन० ॥ ७ ॥ मल्लि० ॥ इति स्तवनं ॥ इति थोयो देववंदन जोडो संपूर्ण ॥

॥ अथ पांचमो जोडो लिख्यते ॥

॥ तिहां प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुरासुर इंद वृंदा, जावे कर जोमी ॥ सेवे

पद्पंकज सदा, जघन्य थकी एक कोमी ॥ १ ॥ जास ध्यान एक तान, करे जे सुर नर जावे ॥ संकट कष्ट दूरे टले, शुचि संपद पावे ॥ २ ॥ सर्वे समीहित पूरवा ए, सुरतरु सम सोहाय ॥ तस पद्पद्म पूज्या थकी, निश्चय शिवसुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नमो नमो श्रीनमि जिनवरु, जगनाथ नगीनो ॥ पद्युग प्रेमे जेहना, पूजे पति शचिनो सिंहासन आसन करी, जस जासन जिनराज ॥ मधुर ध्वनि दीये देशना, जविजनने हित काज ॥ २ ॥ गुण पांत्रीश अलंकरी ए, प्रज्ञु मुखपद्मनी वाणी ॥ ते नमि जिननी सांजली, शुद्ध रूप लहे प्राणी ॥ ३ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल मंगल केली कमला, मंदिरं गुण सुंदरं ॥ वर कनकवर्ण सुपर्ण पति जस, चरण सेवे मनहरं ॥ अमरावती सम नयरी मिथिला, राज्य जार धुरा धरं ॥ प्रणमामि श्रीनमिनाथ जिनवर, चरणपंकज सुखकरं ॥ १ ॥ गज वाजी स्यंदन देश पुर धन, त्याग करी त्रिजुवन धणी ॥ त्रणसें अठ्याशी

कोमी उपर, दीए लख एंशी गणी ॥ दिनार ज-
ननी जनक नामांकित, दीये इच्छित जिनवरं ॥ प्रण०
॥ २ ॥ सहस्राम्रवनमां सहस नरयुत, सौम्य नाव
समाचरे ॥ नर क्षेत्र संज्ञी नाव वेदी, ज्ञान मनः
पर्यव वरे ॥ अप्रमत्त नावे घाति चउ खय, लहे
केवल दिनकरं ॥ प्रण० ॥ ३ ॥ तव सकल सुरपति
नक्ति नति करी, तीर्थपति गुण उच्चरे ॥ जय जगत
जंतु जात करुणा, वंत तुं त्रिभुवन शिरे॥ जय अ-
कल अचल अनंत अनुपम, नव्य जनमन नयहरं
॥ प्रण० ॥ ४ ॥ सत्त दश जस गणधरा मुनि, स-
हस विंशति गुणनीला ॥ सहस एकतालीश सा-
हुणी, सोलसें केवली नला ॥ जिनराज उत्तम प-
द्मनी परे, रूपविजय सुहंकरं ॥ प्रण० ॥ ५ ॥ इति
तृतीय चैत्यवंदनम् ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री नमि जिन नमीये, पाप संताप गमीये
॥ जिन तत्त्वमां रमीये, सर्व अज्ञान वमीये ॥ सवि
विघ्नने दमीये, वर्तीए पंच समीये ॥ नवि नववन
नमीये, नाथ आणा न क्रमीये॥ १ ॥ दशे खेत्रना

ईश, तीर्थपति जेह त्रीश ॥ त्रिहुं काल गणीश, नेवुं जिनवर नमीश ॥ अर्हंते पद त्रीश, साठ दीक्षा जपीश ॥ केवली जगदीश, साठ संख्या गणीश ॥ २ सग नय युत वाणी, द्रव्य छके गवाणी ॥ सग भंगी ठराणी, नवतत्त्वे वखाणी ॥ जे सुणे भवि प्राणी, शुद्ध श्रद्धान आणी ॥ ते वरे शिवराणी, शाश्वतानंद खाणी ॥ ३ ॥ देवी गंधारी, शुद्ध सम्यक्त्व धारी ॥ प्रभु सेवा कारी, संघ चउविह संभारी ॥ करे सेवना सारी, विघ्न दूरे विदारी ॥ रूपविजयने प्यारी, नित्य देवी गंधारी ॥ ॥ ४ ॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ नमि जिन जयकारी, सेवीये भक्ति धारी ॥ मिथ्यात्व नीवारी, धारीए आण सारी ॥ परभाव विसारी, सेवीये सुखकारी ॥ जिम लहो शिवनारी, कर्ममल दूरे मारी ॥ १ ॥ वर केवलनाणी, विश्वना भाव जाणी ॥ शुचि गुणगण खाणी, शुद्ध सत्ता प्रमाणी ॥ त्रिभुवनमां गवाणी, कीर्ति कांता वखाणी ॥ ते जिन भवि प्राणी, वंदीये भाव आणी ॥ २ ॥ आगमनी वाणी, सात नयथी वखाणी ॥

नवतत्त्व वखाणी, द्रव्य षट्मां प्रमाणी ॥ सग जंग भराणी, चार अनुयोगे जाणी ॥ धन्य तास कमाणी, जे भणे भाव आणी ॥ ३ ॥ एकादशी सारी, मृगशिर्षे विचारी ॥ करे जे नर नारी, शुद्ध सम्यक्त्व धारी ॥ तस विघ्न विदारी, देवी गंधारी सारी ॥ रूपविजयने भारी, आपजो लछी प्यारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ इण सरवरी यारी पाल उभी दोय नागरी ललना ॥ ए देशी ॥ परम रूप निरंजन, जन मन रंजणो ॥ ललना ॥ भक्तिवछल भगवंत, तुं भवभय भंजणो ॥ ल० ॥ जगत जंतु हितकारक, तारक जग धणी ॥ ल० ॥ तुज पदपंकज सेव, हेव मुजने घणी ॥ ल० ॥ १ ॥ आव्यो राज हजुर, पूरव भगति भरे ॥ ल० ॥ आपो सेवना आप, पाप जिम सवि टले ॥ ल० ॥ तुम सरिखा महाराज, मेहेर जो नवि करे ॥ ल० ॥ तो अम सरिखा जीवनां, कारज किम सरे ॥ ल० ॥ २ ॥ जगतारक जिनराज, बिरुद छे तुम तणो ॥ ल० ॥ आपो समकित दान, पराया मत गणो ॥ ल० ॥ समरथ जाणी देव, सेवना में करी ॥ ल० ॥ तुंहिज छे समरथ, तरण

तारण तरी ॥ ल० ॥ ३ ॥ मृगशिर सित एकादशी, ध्यान शुक्ल धरी ॥ ल० ॥ घाति करम करी अंत के, केवलश्री वरी ॥ ल० ॥ जग निस्तारण कारण, तीरथ थापीयो ॥ ल० ॥ आतम सत्ता धर्म, जव्यने आपीयो ॥ ल० ॥ ४ ॥ अम वेला किम आज, विलंब करी रह्या ॥ ल० ॥ जाणो ठो महाराज, सेवके चरणां ग्रह्यां ॥ ल० ॥ मन मान्या विना माहरुं, नवि ठोडुं कदा ॥ ल० ॥ साचो सेवक तेह जे, सेव करे सदा ॥ ल० ॥ ५ ॥ वप्रा मात सुजात, कहावो शुं घणुं ॥ ल० ॥ आपो चिदानंद दान, जन्म सफलो गणुं ॥ ल० ॥ जिन उत्तम पदपद्म, विजय पद दीजीए ॥ ल० ॥ रूपविजय कहे साहिब, मुजरो लीजीए ॥ ल० ॥ ६ ॥ इति श्री नमिनाथ जिनस्तवनं ॥ पठी नमुत्थुणं कही जयवीयराय संपूर्ण कहेवा ॥ इति पंमित श्री रूपविजयजी कृत मौन एकादशीना देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्रीज्ञानविमल सूरिकृत मौन एकादशीना देववंदन लिख्यते ॥

॥ तेनी विधि प्रथमना देववंदन प्रमाणे सर्व इहां पण जाणी लेवी ॥

॥ अथ प्रथम चैत्यवंदन लिख्यते ॥

॥ सयल संपत्ति सयल सं, पत्ति तणो दातार ॥ श्री अरनाथ जिनेसरु, शुद्ध दरिसण जेह आपे ॥ नृप सुदर्शन नंदनो, कठिन कर्म वन वेली कापे ॥ एहीज चक्री सातमो, अढारसमो जिन एह ॥ ज्ञानविमल सुख सुजसनो, वर गुण मणिनो गेह ॥ १ ॥ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ कल्पतरुवर कल्पतरुवर, आज मुज बार ॥ फल दल संयुत प्रगटीउं,काम कुंभ शुभ सुरवेली पाइ ॥ चिंतामणि करतले चढीउं, कामधेनु घर आज आइ ॥ दोष अढार रहित प्रभु दीठो, सवि सुखकार ॥ ज्ञानविमल अर जिन तणा, गुण अनंत अपार ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ एह तारक एह तारक अछे जग मांहि ॥ अर जिन सरखो को नहीं, भविक लोकने ग्रहे बांहि ॥ जे छे चक्री सातमो, लही दोय पदवी उछाहे ॥ अढारसमो ए जिनवरु ए, ज्ञानविमल घणुं नूर

॥ आरो नवनो ए दीए, नामे सुख नरपूर ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोमा वे ॥

॥ अरनाथ सनाथ करो स्वामी, में तुम सेवा पुण्ये पामी ॥ करुं विनति लली लली शिर नामी, आपो अविचल सुखनो कामी ॥ १ ॥ जिनराज सवे परउपगारी, जिणे नवनी नावठ सवि वारी ॥ ते प्रणमो सहुए नर नारी, चित्त मांहि शंका सवि वारी ॥ २ ॥ आगम अति अगम ए ठे दरियो, वहु नय प्रमाण रयणे नरीयो ॥ तेहने जे आवी अनुसरीयो, ते नवि नव संकट निस्तरीयो ॥ ३ ॥ श्री शासनसुर रखवालिका, करे नित्य नित्य मंगलमालिका ॥ श्री ज्ञानविमल प्रनु नाम जपे, ते दिन दिन तरणी पेरे तपे ॥ ४ ॥ इति प्रथम स्तुति जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ अर जिन आराधो, संयम मार्ग साधो ॥ मनुज जन्म साधो, काम क्रोधने न वांधो ॥ चउगति दुःख दाधो, न होये तस मोह गाधो ॥ सुख संपत्ति वाधो, मोह मिथ्या न वांधो ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, विश्व विश्वोपकारी ॥ नण जिन चक्रधारी,

शांति कुंथु अर जितारी ॥ मद मदन निवारी, वंदीये पुण्यधारी ॥ नमो सवि नर नारी, दुःख कर्मारि वारी ॥ २ ॥ सकल नयतरंगा, नैगमानेक जंगा ॥ जिहां छे बहु रंगा, जेह एकादशांगा ॥ वली दश दोय अंगा, जैन वाणी सुचंगा ॥ जवदव सम गंगा, सांजलो थइ सुचंगा ॥ ३ ॥ जिन चरण उपासे, जक्षणी धरणी पासे ॥ जक्षेंद सहवासे, नामथी दुःख नासे ॥ ज्ञानविमल प्रकाशे, बोध वासे सुवासे ॥ अरि सकल निकासे, होय संपूर्ण आसे ॥ ४ ॥ इति अर जिन स्तुति जोमा बे संपूर्ण ॥ हवे स्तवन कहेवुं ते लखीए छीए.

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ आदर जीव क्षमा गुण आदर ॥ ए देशी ॥

आदर करीने अहोनिश सेवो, श्री अरनाथ जिणंद जी ॥ अनुपम फल दीए दरिसण जेहनुं, केवलनाण दीणंद जी ॥ १ ॥ आ० ॥ पापस्थान अढार निवारी, रथ शीलांगने धारी जी ॥ किरिया विधि जोगे देखाडे, एहवा सहस अढार जी ॥ २ ॥ आ० ॥ गजपुरराय सुदर्शन नृपति, देवी राणी नंदा जी ॥

रेवती रिख मागशिर सुदि दशमी, दिने जाया सुखकंदा जी ॥ ३ ॥ आ० ॥ अनुक्रमे चक्री थइ मागशिर सुदि, एकादशी दिने दीक्षा जी ॥ विजया शिविका सहस नर ठठ तप, पाछले प्रहरे शिक्षा जी ॥ ४ ॥ आ० ॥ मीन राशि नंदावर्त लंछन, त्रीश धनुष तणुं कणगा जी ॥ आयु चोराशी वरस सहसनुं, केवल लही शिव संगा जी ॥ ५ ॥ आ० ॥ तेत्रीश गणी गणधर जस जाणो, मुनिवर सहस पचास जी ॥ साठ सहस सुखदायी साहुणी, पूरे वंछित आश जी ॥ ६ ॥ आ० ॥ जेह अवंभ अढार निवारी, दाखे शिवपद पंथा जी ॥ ज्ञानविमल गुण पामे अहोनिश, जे निश्चय निर्गंथा जी ॥७॥ इति श्री अरनाथ स्त० ॥ इति प्रथम देववंदन जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय जोमो प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ रयण राशि परे जे गंभीर, मंदरगिरि धीर ॥ विधुमंमल परे निर्मला, जिम शारद नीर ॥ राग दोष दूषित नहीं, नहीं भवभय जेहने ॥ गुण अनंत भगवंत ते, प्रणमुं हुं तेहने ॥ ज्ञानविमल गुण जेहना

ए, कहेतां नावे पार ॥ मल्लि जिनेश्वर प्रणमतां, लहीये भवजल पार ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर जस पर्षदा, कन्या त्रण शतनी ॥ बाह्य पर्षदा जाणीये, नृपसुत त्रण शतनी ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, दिने संयम लेवे ॥ सकल सुरासुर तिहां मली, जिनना पद सेवे ॥ दीक्षा समयथी उपजे ए, तिम मनः पज्जव नाण ॥ मल्लिनाथ केवल लहे, ज्ञानविमल सहु जाण ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ मल्लि जिनवर मल्लि जिनवर, सयल सुख हेते ॥ संयम गुणधारी थया, नूप मित्र षट् वोधि आपे ॥ कंचनमय करी पूतली, पूर्व प्रेम संकेत आपे ॥ माया तप पश्चावथी ए, पाम्या स्त्रीनो वेद ॥ ज्ञानविमल गुणथी थया, अचल अरूप अवेद ॥ ३ ॥ इति श्री मल्लि जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय जोडा बे ॥

॥ मन मोहन मल्लि जिणंद जी, जयो कुंभ नंद जी ॥ उपगारी जिन ओगणीशमो, महारे

मन अहोनिश ते रम्यो ॥ १ ॥ ऋषन्नादिक चउवीश जिनवरा, जे वरते छे नवि सुखकरा ॥ वली केवलज्ञान दिवाकरा, ते वंदे सुरवर नरवरा ॥ ॥ २ ॥ मल्लि जिनवर दीये देशना, सुणे नविजन वहुविध देशना ॥ दृष्टिवाद महा श्रुत वंदीए, जिम पातक दूर निकंदीए ॥ ३ ॥ कुवेर देव सान्निध्य करे, वैरोव्या सवि संकट हरे ॥ वाणी सुणवा मन खंतरी, ज्ञानविमल तणी सोहामणी ॥ ४ ॥ इति प्रथम स्तुति जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिनेसर वाने लीला, दीयो मुज समकित लीला जी ॥ अणपरणे जिणे संयम लीधो, सुधा संयम सीला जी ॥ ते नरनवमां पशु परे जाणो, जे करे तुम अवहीला जी ॥ तुम पदपंकज सेवाथी होय, वोधिवीज वसीला जी ॥ १ ॥ अष्टापद गिरि ऋषन्न जिनेश्वर, शिवपद पाम्या सार जी ॥ वासुपूज्य चंपाए यडुपति, शिव पाम्या गिरनार जी ॥ तिम अपापा पुरी शिव पोहोता, वर्द्धमान जिनराय जी ॥ वीश समेतशिखर गिरि

थावर नारकी, शुन्न ठाया रे ॥ पवन थया अनुकूल, सुखाला वाया रे ॥ २ ॥ अनुक्रमे जोवन पामीया, सुणी आया रे ॥ पूरवना षट् मित्र, कही समजाया रे ॥ ३ ॥ सुदि एकादशीने दिने, व्रत पाया रे ॥ तेणे दिने केवलनाण, लहे जिनराया रे ॥ ४ ॥ ज्ञानविमल महिमा थकी, सुजस सवाया रे ॥ मल्लि जिनेसर ध्याने, नव निधि पाया रे ॥ ५ ॥

॥ अथ चोथो जोडो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ नमो मल्लि नमो मल्लिनाथ शिवसाथ ॥ हाथ दीये नव बूमतां ए, अपार नवजलधि मांहे ॥ पाप ताप व्यापे नहीं, एह जिन सुर वृक्ष गाजे ॥ सकल समीहित पूर्णो, उंगणीशमो जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु नामथी, सीधां सघलां काज ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नील वाने नील वाने जेह जिनराज ॥ पणवीश धनुष तनु दीपतो, इंद्रनील जिम रत्न सोहे ॥ ॰ बेठा जिनवरु, कहे धर्म नवि चित्त मोहे ॥

ज्ञानविमल गुणथी थयो, लोकालोक प्रकाश ॥ मल्लि जिनवर प्रणमतां, पहोंचे मननी आश ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप गोत्र काश्यप, वंश इक्ष्वाग खाम त्याग निर्दंभ जे ॥ कुंभ भूप कुले जे कुमारी, मयण मह्ा भरु भंजीयो, वय तरुणपणे निर्विकारी ॥ सारी संयम सिरि वरी, ओगणीशमा जिन एह, मल्लिनाथ नामे थया, ज्ञानविमल गुणगेह ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा वे ॥

॥ मल्लि जिनवरशुं प्रीतडी, ते भेद रहित जुगति जडी ॥ अलगो न रहुं एक घडी, जिम भाति पटोलामां पडी ॥ १ ॥ सवि जिनवरना गुण माल तणी, कठे आरोपो भविक गुणी ॥ शिवसुंदरी वरेवा होंश करो, तो श्री जिन आणा शिर धरो ॥ २ ॥ उपदेश अनुपम जलधरु, वरसे नित्य मल्लि जिनवरु ॥ बोधिबीज सुभिक्ष होय अति घणो, ए महिमा श्री जिनराज तणो ॥ ३ ॥ शासन वछल जे

नविक जना, जिनधर्में जे छे एकमना ॥ तस सान्निध्य करजो सुरवरा, श्री ज्ञानविमल उद्योतकरा ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोयो समाप्त ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ कुंभ नरेश्वर घर जिन जाया, मल्लि नामे जिनवर राया, नील वरण जस छाया ॥ प्रभावती छे जेहनी माया, पणवीश धनु माने छे काया, कुंभ लंछन सुखदाया ॥ पूरव तपनी प्रगटी माया, स्त्रीरूपे ए अचरिज थाया, सकल सुरासुरें गाया ॥ बालपणे सुखकार कहेवाया, इंद्र इंद्राणी सवि मली आया, मेरुशिखरे नवराया ॥ १ ॥ चोवीशे जिन संप्रति काले, प्रणमतां सवि पातक गाले, नविजनने प्रतिपाले ॥ जेह अनादि मिथ्या मत टाले, करतां समकित सुख सुगाले, नाठां दुष्कृत दुःकाले ॥ ग्रंथी भेद करी पंथ पखाले, आतम अनुभव शक्ति संभाले, पुण्य सरोवर पाले ॥ अनंत चोवीशी जिनवर माले, लोके चउ निक्षेप रसाले, प्रणमुं तेह त्रिकाले ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधि ग्रहे त्रण , संयमथी मनपज्जवनाण, जिहां छद्मस्थ

मंनाण ॥ पामे पंचम केवलनाण, जाणे उदयो अजिनव नाण, समवसरण गुण खाण ॥ तिहां तीर्थ थापे सुप्रमाण, अर्थ थकी नाखे प्रनु वाण, सरखी जोयण प्रमाण ॥ सूत्रे गुंथे गणधर जाण, नय निक्षेप गम नंग प्रमाण, समजे जे होय जाण ॥ ३ ॥ मल्लि जिनेश्वर महिमा पूरे, वैरोट्या सवि संकट चूरे, दिन दिन अधिक सनूरे ॥ यक्ष कुवेर ते परता पूरे, जित तणां वली वाजे तूरे, नासे डुशमन दूरे ॥ प्रगटे ज्ञानविमलनो नूर, जाणे उग्यो अनुनव सूर, तेज प्रताप पडूर ॥ हर्षित हेजे होय हजूर, महिमादिक गुण सवि महमूर, श्री जिन ध्यान सनूर ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ जावक समरा उक्ार ॥ ए देशी ॥ श्री मल्लि जिनसार, अकवीश गणि गणधार ॥ सहस चालीश अणगार, पंचावन सहस साहुणी सार ॥ १ ॥ एक लाख सहस्र चोराशी, श्रावक समकितवासी ॥ त्रण लाख पांसठ सहस्र, श्राविका एह जगीश ॥ २ ॥ पणवीश धनु तनु मान, अणपरण्या व्रत

ध्यान ॥ सहस्र पंचावन वरीस, आयु सकल गुण धरीश ॥ ३ ॥ कुवेर शासनदेव, वैरोट्या करे सेव ॥ मास संलेषण कीध, काउस्सग्गे थया सिद्ध ॥ ॥ ४ ॥ जे जिनवरने आराधे, ज्ञानविमल सुख साधे ॥ एणी परे देव वांदीजे, मानव जवफल लीजे ॥ ५ ॥ इति मल्लि जिनस्तवन ॥ इति चोथो जोमो संपूर्ण ॥

॥ अथ पंचम जोमो लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

नमो नमि जिन नमो नमि जिन, मुगति दातार ॥ सोवन वाने सोहतो, सकल लोक जस सेवा सारे ॥ सुमति सुगतिने आपतो, सकल कर्मना दोष वारे ॥ एकवीशमो जिन पूजीए, जिम लहीए जवपार ॥ ज्ञानविमल सूरि एम जणे, ए प्रजु जगदाधार ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ गोत्र काश्यप गोत्र काश्यप, वंश इख्काग ॥ श्रीनमि जिननो जाणीये, सयल लोय आणंद कारण ॥ अवनीतलमां उपन्या, मानुं तेह सवि जविक तारण ॥ ॥ कारण एहीज मुगतिनुं, श्री जिनवरनी सेव ॥ ज्ञानविमल प्रजुता धणी, आय मले स्वयमेव ॥ २ इति

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ दुःख दोहग दुःख दोहग, जाय सवि दूर ॥ दुर्मति दुर्गति सुपनमां, तेह जननी पासे नावे ॥ जे श्री नमि जिननुं सदा, नाम ध्यान एकाग्र ध्यावे ॥ करुणारसनो कूपलो, त्रिभुवननो आधार ॥ ज्ञानविमल प्रभु सेवतां, लहीये लील अपार ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन समाप्त ॥

॥ अथ थोयो जोडा वे ॥

॥ नमिनाथ निरंजन देव तणी, सेवा चाहुं हुं निशिदिन घणी ॥ जस लंछन नील कमल सोहे, एकवीशमा जिनवर मन मोहे ॥ १ ॥ दोढसो कल्याणिक जिन तणां, दश क्षेत्रे एह सोहामणां ॥ मृगशिर एकादशी उजली, जिन सेवा पुण्ये आवी मली ॥ २ ॥ एह अंग इग्यार आराधीये, ज्ञान भावे शिवसुख साधीये ॥ आगम दिनकरकर विस्तरे, तो मोह तिमिरने अपहरे ॥ ३ ॥ समकितदृष्टि सुप्रभाविका, शासननी सान्निध्य कारिका ॥ कहे ज्ञानविमल सूरीसरु, जग मांहे होजो जयकरु ॥ ॥ ४ ॥ इति प्रथम स्तुति जोडो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्रीनमिनाथ निरंजन देवा, कीजे तेहनी सेवा जी ॥ एह समान अवर नहीं दीसे, जिम मीठा बहु मेवा जी ॥ अहोनिश आतम मांहि वसीया, जिम गजने मन रेवा जी ॥ आदर धरीने प्रभु तुम आणा, शिर धारुं नित्य सेवा जी ॥ १ ॥ चोत्रीश अतिशय पांत्रीश जाणो, वाणीना गुण छाजे जी ॥ आठ प्रातिहारज निरंतर, तेहने पासे विराजे जी ॥ जास विहारे दश दिशि केरा, ईति उपद्रव भाजे जी ॥ ते अरिहंत सकल गुण भरीया, वांछित देइ निवाजे जी ॥ २ ॥ मिथ्या मत तत दुष्ट भुजंगम, तेणे जे जन डशीया जी ॥ आगमना गम ताप रीजाणो, तेहथी ते विष नसीयां जी ॥ श्रीजिन वयण सुणवाने हेते, भवि मधुकर छे रसीया जी ॥ भाव गंभीर अनुपम भाख्या, धन ते जस चित्त वसीया जी ॥ ॥ ३ ॥ श्रीनमि जिनवर शासन भासन, भ्रकुटी यक्ष जयकारी जी ॥ परता पूरे संकट चूरे, वरदाइ गंधारी जी ॥ ज्ञानविमल प्रभु आणा धारे, कुमति कदाग्रह वारी जी ॥ बोधिबीज वड बीज तणी परे, मुज विस्तारी जी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग काफी ॥ नमीये श्री नमिनाथने रे लाल, विजय नरेसर नंद मेरें प्यारे रे ॥ अपराजितथी आवीयो रे लाल, विजय उरे अरविंद मेरे प्यारे रे ॥१॥ नमीये० ॥ मृगशिर सुदि एकादशी रे लाल, नक्षत्र अश्विनी सार मेरे प्यारे रे ॥ प्रथम प्रहर अठम तपे रे लाल, वकुल तरु तले सार मेरे प्यारे रे॥२॥ ॥ नमी० ॥ घाति करम क्षय केवली रे लाल, सत्तर गणधर जास मेरे प्यारे रे ॥ वीश सहस मुनि साध्वी रे लाल, सहस एकतालीश खास ॥ मे० ॥ ॥ ३ ॥ न० ॥ श्रावक एक लक्ष उपरे रे लाल, सत्तरी सहस उदार मेरे प्यारे रे ॥ त्रण लाख वर श्राविका रे लाल, अडतालीश हजार मेरे प्यारे रे ॥ ४ ॥ ॥ न० ॥ पन्नर धनुष तनु जेहनुं रे लाल, दश सहस वरसनुं आय ॥ मे० ॥ नील कमल लछन जहुं रे लाल, समेत गिरि सिद्ध थाय ॥ मे० ॥ ५ ॥ न० ॥ एकवीशमो जिन जाणीये रे लाल, प्रणमतां पातक जाय ॥ मे० ॥ ज्ञानविमल प्रभु सान्निधे रे लाल, नामे नव निधि थाय ॥ मे० ॥ ६ ॥ न० ॥ इति नमि जिन स्तवनं ॥ इति पांचमो जोडो समाप्त ॥

॥ हवे ए देववंदननो पाछलनो विधि कहे छे ॥ दिव-से मध्याह्न समये काउस्सग्ग अगीयार लोगस्सनो क-रीए. पछी बेसीने अगीयार नवकार गणीए ॥ इति मौ-न एकादशी देववंदन श्रीज्ञानविमल सूरिकृत समाप्त॥

॥ अथ श्रीदानविजयजी कृत एकादशी देववंदन लिख्यते ॥

॥ तत्र प्रथम जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ सकल नयर शिणगार हार, गजपुर वर नयर ॥ राय सुदर्शन तास नारी, देवी जस अपछर ॥ तस कूखे अवतार लीध, त्रिहुं जवन वंदिता॥ कुमरपणे एक-वीश सहस, सुखे वरस व्यतीतां ॥ तेतां वरस मंड-लिकपणुं ए, पाले अखंकित आण ॥ ते अर जिनवर नामथी, दान लहे कल्याण ॥१॥ इति प्रथम चैत्यवंदन॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चउराशी लख रथ तुरंग, गजराज उदार ॥ पायक छन्नुं कोमि जूप, बत्रीश हजार ॥ चोसठ सहस अंतेउरी, पुर गाम अपार ॥ चउद रतन नव ो सहित, बहु ऋद्धि विस्तार ॥ एम चक्रीपणुं

जोगवी ए, वरस सहस एकवीश ॥ सुमति दान दायक सदा, ते अर जिन जगदीश ॥ २ ॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ आप ज्ञानथी अनुभवी, निज दीक्षा काल ॥ नगरादिक सवि परिहरी, परिग्रह जंजाल ॥ एक सहस वर पुरुष साथे, करी बहु अति मान ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, अश्विनी अभिराम ॥ लोच करी व्रत आदरे ए, चार जाम जस धर्म ॥ ते अर जिनवर मुज दीयो, दान सदा शिवशर्म ॥ ३ ॥ इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री अर जिनवर गुण मणि मंदिर, सुंदर वदन सरूप जी ॥ राय सुदर्शनाभ्रवंश प्रभाकर, कर पंकज अनुरूप जी ॥ नव निधि चउद रतन प्रमुख सवि, ठोरी ऋद्धि अनूप जी ॥ मृगशिर सुदि एकादशी दिवसे, आप थया मुनिरूप जी॥१॥भोग करम तूटे निज ज्ञाने, निज व्रत काल विभावे जी ॥ नव लोकांतिक देव प्रभुने, दीक्षा समय जणावे जी ॥ दान संवत्सरी

द्ये तव जाम, सहुनां दारिद्र समावे जी ॥ आदरे व्रत इण विधि ते जिनवर, हुं वंदुं मन जावे जी ॥ २ ॥ सिद्ध नमी सामायिक उच्चरे, राग रोष मद वारे जी ॥ मनःपर्यव तव नाण उपजे, मनुज लोक वि-स्तारे जी ॥ जब लग रहे छद्मस्थपणे प्रजु, तप कि-रिया व्रत चारी जी ॥ जिन स्वरूप जिहां इण विधि जाख्युं, ते आगम सुखकारी जी ॥ ३ ॥ व्यंतर ज-वनपति ने जोइष, वैमानिक सुरराय जी ॥ दीक्षा ओछव एम करी जिननो, पुण्य जंमार जराय जी ॥ नं-दीश्वर करी यात्रा अनुपम, सुर सुरलोके जाय जी ॥ ते देवा सेवा करे जिननी, दान सदा सुखदाय जी ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अर जिन सुखकारी, सातमो चक्रधारी ॥ मद मदन विदारी, मान मातंग वारी ॥ अशुज तम निकारी दुष्ट कर्मारि हारी ॥ व्रत विपिन विहारी, पुण्य वि-स्तार कारी ॥ १ ॥ जस यश जगे गाजे, मोहनो जोर जांजे ॥ सुर नर मुनि राजे, जे थुएया वहु दि-वाजे ॥ सुगति सुख निवाजे, विश्वना रूप जाजे ॥ तेह शुज साजे, वंदीये मोक्ष काजे ॥ २ ॥

नवल नय तरंगा, सप्त ज्ञंग प्रसंगा ॥ कृत परमत ज्ञंगा, सर्वथा जे अज्ञंगा ॥ विमल दश दु अंगा, पाप संताप गंगा ॥ ज्ञविक जन सुणी चंगा, जैन वाणी सुरंगा ॥ ३ ॥ जिन चरणनी सेवी, सर्व संसार खेवी ॥ मन महिर वहेवी, विघ्नवामी दहेवी ॥ वहु ज्ञक्ति धरेवी, संघरक्षा करेवी ॥ शक्ति धरणी देवी, दान संसिद्धि लेवी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ श्री अजित जिनेसर राया ॥ ए देशी ॥ श्री अर जिनवर जगदीश, ज्ञवियण ध्याउ रे ॥ मन ज्ञाव धरी निशिदिस ॥ ज्ञवि० ॥ जिम पहोंचे सकल जगीश ॥ ज्ञवि० ॥ ए आंकणी ॥ हस्तिनागपुरनो धणी रे, राय सुदर्शन नंद ॥ देवी सुदर्शन नंदन वंदता रे, ज्ञाजे ज्ञावठ दंद ॥ज्ञवि० ॥ १ ॥ कंचन वर्ण तनु सोहतो रे, रूप कला गुणवंत ॥ चक्रवर्तीनी संपदा रे, पामे प्रज्ञु जयवंत ॥ २ ॥ ज्ञवि० ॥ ज्ञरतक्षेत्र पट खंडमां रे, आण अखंडित जास ॥ चोसठ सहस अंतेउरी रे, ज्ञोगवे ज्ञोग विलास ॥ ॥ ३ ॥ ज्ञवि० ॥ मृगशिर सुदि एकादशी रे, ज-

ज्ज्वल पक्ष उदार ॥ सहस पुरुष साथे प्रनु रे, आ-
दरे संयम नार ॥ ४ ॥ नवि० ॥ सुर नर असुर मि-
ली तिहां रे, ओछव करे सुविवेक ॥ सुरनि नीर
फल फूलनी रे, वसुधा वृष्टि अनेक ॥ ५ ॥ नवि० ॥
देव तणां वाजे घणां रे, वर वाजित्र आकाश ॥ ना-
चे नव नव छंदशुं रे, नारी नवल विलास ॥ ६ ॥
॥नवि०॥ दीक्षा कल्याणक इस्युं रे, आराधे नर जेह
॥ दान सकल सुख संपदा रे, पामे पुण्ये तेह ॥
॥ ७ ॥ नवि० ॥ इति प्रथम जोडो समाप्त ॥

॥ अथ द्वितीय जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सुख कारण जिन जननी, कूखे ज्यारे अव-
तरीयो ॥ त्यारे शुनसूचक उदार, चित्त डोहलो
धरीयो ॥ पंच वरण वर सुरनि गंध, अमलान अ-
मूल ॥ शय्या विरचुं सुघट घाट, लेइ मालती फूल
॥ ते माटे जनम्या पछी ए, दीधुं मल्लि अनिधान
॥ ते जिन समरणथी सदा, लहे परम सुख दान ॥
॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ जिम शशी उदित सकल, लोक अंधार प-

थाय ॥ घन वर्षते जिम नूमि, नव पल्लव थाय ॥ प्रगट्यो जिन जनमंत, तिम सघले परकाश ॥ पसर्यो जग जन चित्त मांहि, तिम हरप उल्लास ॥ मृगशिर सुदि एकादशी ए, जनम्या मल्लि जिणंद ॥ ते जिन पाय पसायथी, दान लहे आणंद ॥ २॥ इति द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अद्भुत देह सरूप हे, गुणगेह विराजे ॥ लाजे जस मुख देखी चंद, मृग नयणे लाजे ॥ नीलक वान सोनागवान, उपमान न अवर ॥ बालपणाथी अधिक तेज, जाणे नव दिनकर ॥ पीता प्रमुख बहु लोकने ए, अतर घन विश्राम ॥ ते मल्लि जिन देखतां, दान सरे सवि काम ॥ ३ ॥

॥ अथ थोयो जोडा वे ॥

॥ मिथिला नयरी वर विस्तार, कुंन राय तिहां बहु अधिकार, राणी प्रनावती सार ॥ जव तस कूखे लह्यो अवतार, चौद सुपन देखी तिणि वार, पामे परम करार ॥ मृगशिर मास शुक्ल पक्ष तार, तिथि एकादशी ने शुन्न वार, मध्य रात्रे निरधार ॥ मल्लि जिन जन्म्या जगदाधार, तव सघले थयो हरख

अपार, वरत्यो जय जयकार ॥ १ ॥ इंद्रनां जब
सिंहासन हाले, तव सुरपति निज ज्ञान संजाले,
जिनवर जन्म निहाले ॥ घंट सुघोषा तव संचाले,
सुर सवे बेसी विमान विशाले, सुरगिरि उपर चाले
॥ तिहां जिन आणी जाव रसाले, तीर्थ उदकशुं
अंग पखाले, निज सवि पातक टाले ॥ चउवीशे
जिननो निशि काले, इम उत्सव कीधो सुर पाले,
ते निज जव अजुआले ॥ २ ॥ जिन जन महोत्सव
अवसर जाणी, आवे सुरपति उलट आणी, जाव
जगति सह नाणी ॥ आठ जाति करी कलश विनाणी,
सुरजि जस्या वर तीरथ पाणी, पुष्पादिक बहु
आणी ॥ अच्युतेंद्र आदि गुणखाणी, तिम अंते
सोहम वज्र पाणी, स्नात्र करे शुज नाणी ॥ एहवी
विधि जेह मांहि वखाणी, ते आगम निसुणो ज-
वि प्राणी, जिम लहो शिव पटराणी ॥ ३ ॥ वीणा
ताल मृदंग वजावे, कोइ सुरसुंदरी नृत्य बनावे, गीत
सरस कोइ गावे ॥ जक्ति राग मन मांहि जगावे,
जिनमुखशुं निज नयन लगावे, निज जव पाप ज-
गावे ॥ इम जन्मोत्सव करी मन जावे, सवि सुरपति
स्थानक आवे, मन परमानंद पावे ॥ ते च-

उविह देवा सद्भावे, सकल संघने कुशल वधावे, दान सकल दुःख जावे ॥४॥ इति प्रथम स्तुति जोमो ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ मल्लि जिन अद्भुत तनु सुंदर, जन्म्या जेणी वेला जी ॥ ठप्पन दिशिकुमरी तव आवे, गावे जिन गुण हेलां जी ॥ जिन जिन जननीना पद प्रणमी, सूति करम करे नेलां जी ॥ निज स्थानक जइ हरख धरंती, सवि परिवार समेता जी ॥ १ ॥ देह रूप मल रहित सुगंधी, नहीं प्रस्वेद विकार जी ॥ नवि ठद्मस्थ निहाले कोइ, आहार ने निहार जी ॥ रुधिर मांस उज्ज्वल अतिनिंदित, श्वास कमल अनुकार जी ॥ जन्म थकी जस ए चउ अतिशय, ते जिन वंडुं उदार जी ॥ २ ॥ मति श्रुत अवधिनाण गुण खाणी, जाणे बहु जग नाव जी ॥ तोहि पण प्रभु वालकनी पेरे, राखे वाल स्वनाव जी ॥ निज अंगुठे अमृत पीवे, नहीं खेलादि विनाव जी ॥ इम कही वाल दशा जिनजीनी, आगम तेह अपाव जी ॥ ३ ॥ कंडुक प्रमुख रयणमय विरची, केली करे वहु नांति जी ॥ वालरूप करी नक्ति राग धरी, जे रमे जिन संघात जी ॥ समकितधारी परउपगारी, वरते

गुण पक्षपात जी ॥ देजो संघने ते सुर मंगल, दान सकल दुःख घात जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ मात लाछल दे नंद ॥ ए देशी ॥ मिथिला नयरी मझार, कुंभ राय घर वार, आज हो गाजे रे दीवा जे, उछव अभिनवा रे ॥ १ ॥ सुदि मृगशिर शुभ वार, एकादशी सुखकार, आज हो मल्लि जिन रे जन्म्या, राणी प्रभावती रे ॥ २ ॥ भूमि लहे उल्लास, सघले थयो प्रकाश, आज हो गाजे रे आवा जे, देवनी दुंदुभि रे ॥ ३ ॥ घर घर चंदन माल, बांधी झाकझमाल, आज हो दीजे रे हाथादिक, कुंकुम रोलना, रे ॥ ४ ॥ दीजे याचक दान, कीजे बहु सनमान, आज हो आवे रे सहुनां, सबल वधामणां रे ॥ ५ ॥ वाजे मादल ताल, नाचे नवली बाल, आज हो गावे रे धवल मंगल, कुल कामिनी रे ॥ ६ ॥ सगा सजान संतोष, थयो हरखनो पोष, आज हो जगमां रे राज्य, एक आनंदनुं रे ॥ ७ ॥ जन्मोत्सव अधिकार, इम कीधो विस्तार, आज हो पाम्या रे सुर, नरपति तिहां सुख घणां रे ॥ ८ ॥ जन्म कल्याणक आराधे बहु नेह, आज हो ते नर रे, बहु दान

मंगलमाला लहे रे ॥ ए ॥ मल्लि जिनस्तवनं ॥ इति बीजो जोमो समाप्त ॥

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ मेरु तणी परे धीर वीर, ने ऋद्धि गंनीरा ॥ चंद्र तणी परे सौम्य तेज, फलके जिम हीरा ॥ राग रोष मन नहीं लिगार, नहीं विषय विकार ॥ शांति कांति रति मति प्रमुख, गुण जलधि अपार ॥ दिन दिन दान वधे वहु ए, जिम कंचन पर नाग ॥ ते नग-वंतनी नक्तिथी, दान थयो महानाग ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ रहे अहोनिशि सुख मगन, नहीं रोग वि-योग ॥ वेदोदय विण नोगवे, प्रनु नोग अशोग ॥ आया निर्जरे पूर्व कर्म, नव बंधन आणे ॥ गृहवा-से रहे शत वर्ष, चोथे गुणठाणे ॥ क्षय कषाय द्वा-दश करी ए, लहे बहु गुणठाण ॥ मल्लिनाथ जिन तेहना, दान करे गुणगान ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अभ्यंतर परिषद् अनुप, त्रणसें नृप कन्या ॥ तेम त्रणसें नृपपुत्र बाह्य, परिषदमां धन्या ॥ मृग-शिर सुदि एकादशी, ग्रहे दीक्षा नावे ॥ देवदूष्य तव इंद्र एक, जिन खंधे ठावे ॥ उग्र विहार तप प्रभु करे ए, समतारस जरपूर ॥ मल्लिनाथ ते मन धरतां, दान गयां दुःख दूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा बे ॥

॥ प्रभु मल्लि जिनेसर, आदरे दीक्षा जाम ॥ चउविह सुर आवी, उत्सव करे अभिराम ॥ मणि रयण कंचननी, वृष्टि करे उद्दाम ॥ भविजन ते जिन-ना, मन राखो गुण ग्राम ॥ १ ॥ व्रत लेइ वरते, अप्रति-बद्ध विहार ॥ सम तृण मणि जीवित, मरण अ-मम अविकार ॥ धरी विविध अभिग्रह, इंद्रिय निग्रह कार ॥ ते जिन चोवीशे, वंदुं वारंवार ॥ २ ॥ प्रभु हस्त युगलमां, सागर सर्व समाय ॥ शिखा उपरे वाधे, बिंदु पात नवि थाय ॥ छद्मस्थ जिणंदनी, इम जिहां लब्धि कहाय ॥ ते आगम सुणतां, संशय सकल पलाय ॥ ३ ॥ विहरंता जिन-

ने, उपसर्ग उपजे जाम ॥ जाणी इंद्रादिक, आवी निवारे ताम॥ जिन सेवा तत्पर, जे देवा गुण-धाम॥ पूरो श्री संघने, दान सकल सुख ठाम ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ जुवना नंदन जिननी, नील वरण जस देह ॥ प्रज्ञावती नंदन, मंगल तरु वन मेह ॥ मृगशिर सुदि केरी, एकादशी दिन एह ॥ थया जाव चरण धरी, ठांमी परिकर गेह ॥ १ ॥ अहो दान घोपणा, सुर डुंडुनि वाजंत ॥ निवडे वसुधारा,जल सुगंध वरषंत ॥ फूलवृष्टि करे सुर, ए पंच दिव्य हवंत ॥ जस पारण ठामे, ते वंडुं अरिहंत ॥ २ ॥ सामायिक आदि, चारित्र पंच प्रमाण ॥ ते मांहि पहिलुं, चोथुं पंचम जाण ॥ जिनने ए होये, क्रम चढते गुणठाण ॥ ए कह्यो जिहां विधि, ते वंदुं सु-यनाण ॥ ३ ॥ छद्मस्थपणे जिन, विचरे महियल मांहि ॥ इंद्रादिक आवे, नक्तिवंत उछांहिं ॥ प्रजु उन्नति काजे, वहु पूजा करे त्यांहि॥ ते सुर सान्नि-ध्यथी, दान सुमति अवगाहिं ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ प्रभु पासनुं मुखडुं जोतां ॥ ए देशी ॥ वनमां मोहन घर एक, षट बार करे सुविवेक ॥ कंचनमय पूतली सार, करे रंभाने अनुकार ॥ १ ॥ एकेक कवल मांहे नाखे, तेह कमले ढांकी राखे ॥ पडिबोधी आदि महा भाग, छए मित्र धरी अनुराग ॥ २ ॥ आव्या ते परणवा काजे, मिथिला वींटी निज साजे ॥ प्रभु ते घर मांहि तेडावे, हरख्या ते सघला आवे ॥ ३ ॥ उघाडे कमल जिणि वार, पसर्यो डुरगंध अपार ॥ नृप चिंते मनुजनो देह, अहो एम अशुचिना गेह ॥ ४ ॥ धिग धिग धिग हो ए संसार, कुणनो पुरुष कुणनी नार ॥ वैराग्यरसे मन भीनो, वाध्यो संवेग मन लीनो ॥ ५ ॥ देइ दान संवत्सरी सार, छए मित्र तणो परिवार ॥ उज्ज्वल पक्ष मृगशिर मास, एकादशी व्रत ग्रहे खास ॥ ६ ॥ मल्लि जिननुं व्रत कल्याण, करतां थाये कोडि कल्याण ॥ तेह मल्लिनाथ अभिधान, जपतां लहे बहु सुख दान ॥ ७ ॥ इति श्री मल्लि जिन दीक्षा कल्याणक स्तवन ॥ इति त्रीजो जोडो ॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोडो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ चउनाणी थइ शुक्लध्यान, मुनिराज अभ्यासे ॥ अधिक अधिक तिम आप तेज, क्षण क्षण प्रकाशे ॥ पाणि पडिग्गह लब्धि चिंत, दुःकर व्रत धार ॥ दुर्द्धर सिंह परे अनेक, परिसह सहनार ॥ इणविध दीक्षाने दिने ए, प्रगट्युं केवलज्ञान ॥ ते अरिहंत प्रणामथी, लहीये समकित दान ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ चढी क्षपकश्रेणी अपूर्व, उत्साह धरीने ॥ लहे गुणठाणुं बारमुं, संजलण हरीने ॥ नाण दंसणावरण कर्म, अंतराय उच्छेदी ॥ गुणठाणुं लही तेरमुं, प्रभु थया अवेदी ॥ लोकालोक प्रकाशतो ए, दर्शन ज्ञान अनंत ॥ जाव तीर्थंकर तव थया, दान दया करसंत ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ भव्य जीव वर कमल खंड, प्रतिबोध वधारें ॥ नाण किरण विस्तार सार, तमपडल निवारे ॥ सुर नर मुनिपति सेवमान, बहु लोक सुखंकर ॥ दिन

दिन अभिनव उदयवंत, मल्लि जिन दिनकर ॥
नाण लह्युं एकादशी ए, उज्ज्वल मृगशिर मास ॥
ते जिनराज प्रसादथी, दान लहे उल्लास ॥ ३ ॥
इति तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोयो जोमा बे ॥

॥ वर शुक्लध्याननां, नाग दोय जब ध्यात ॥ करी करण अपूरव, तब टाले घन घात ॥ पामे प्रनु केवल, दरिसण ज्ञान विख्यात ॥ मल्लि जिन जाणे, सर्व नाव साक्षात ॥ १ ॥ छत्रत्रय चामर, तरु अशोक सुखकार ॥ दिव्य ध्वनि डुंडुन्नि, नामंमल फलकार ॥ सुर कुसुमवृष्टि वर, नद्रासन अति सार ॥ एह प्रातिहार्य जस, ते जिन वंदु उदार ॥ २ ॥ वर केवलनाणे, जाणे सयल पयत्न ॥ नाखे शुन्न वचन ते, श्रीजिनपति तिहां अत्र ॥ विरचे सूत्ररूपे, गणधर तेह समत्र ॥ जग मांहि तेहिज, आगम एक समत्र ॥ ३ ॥ श्री मल्लि जिनेश्वर, सेवा करे गुणधाम ॥ जिनशासन देवी, वैरुट्या इति नाम ॥ गुणरागे रंजित, सप्त धातु अन्निराम ॥ तेह दान पसाये, राखजो श्री संघ नाम ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ समवसरण सिंहासन वेठा, नील वरण जस काया जी ॥ मानुं मेरुशिखर शिर उपर, ए नव जलद सुहाया जी ॥ जवि चातकने जस दर्शनथी, पाप संताप पलाया जी ॥ मल्लि जिनेसर महिमा मंदिर, जवि प्रणमो तस पाया जी ॥ १ ॥ एकादश जस अतिशय प्रगटे, कर्म कलंक उछेदे जी ॥ तिम उंगणीश करे शुन्न अतिशय, सुर समुदाय अखेदे जी ॥ जन्मातिशय चतुर संयुत ए, अतिशय चोत्रीश जेदे जी ॥ तेहशुं जेह विराजे जिनवर, प्रणमुं तेह उमेदे जी ॥ २ ॥ चउ मुख रूपे जिन उपदेशे, चार प्रकारे धर्म जी ॥ तेह मांहि जीवाजीवादिक, सूक्ष्म ठे वहु मर्म जी ॥ शीतलतर चंदन अनुकारे, वारे तव दुःख धर्म जी ॥ ते जिनवाणी जवि प्राणीनां, टाले सकल कुकर्म जी ॥ ३ ॥ सुदि मृगशिर एकादशी उपन्युं, मल्लि जिनने नाण जी ॥ प्रजु पासे रहे अहोनिशि तनुथी, सुरवर कोमी प्रमाण जी ॥ शांति समाधि वैय्यावच्च कारक, समरण योग्य सुजाण जी ॥ दान शिवंकर ते सुर करजो, श्री संघ नित्य कल्याण जी॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ यादव राय जइ रह्यो ॥ ए देशी ॥ सकल सुहंकर सेवीये रे, मल्लि जिणंद मयाल ॥ चित्त अंतर आराधतां रे, थाय दुःख विसराल ॥ १ ॥ नविक जन वंदो जिनवर एह ॥ ए तो नव दुःखनो करे छेह ॥ नवि० ॥ ए आंकणी ॥ उज्ज्वल मागशिर मासनी रे, तिथि एकादशी सार ॥ पश्चिम नागे दिवसने रे, अश्विनी योग उदार ॥२॥ नवि० ॥ तिणे दिन प्रनुने उपन्युं रे, केवलनाण पसल ॥ काल नाव द्रव्य क्षेत्रथी रे, जाणे अनंत पयल ॥ नवि० ॥ ३ ॥ जिम वादल फाटे थके रे, पसरे रवि परकाश ॥ तिम केवल रुचि कलहले रे, थाते आवरण नाश ॥ ४ ॥ नवि० ॥ निज तनु वाने जीपतो रे, इंद्रनील मणि सार ॥ कुंन लंछन कुंननी पेरे रे, उतारे नवपार ॥ ५ ॥ नवि० ॥ वरस पंचावन सहसनुं रे, समुदित जेहनुं आय ॥ ऊणुं शत वर्षे करी रे, तेह केवली पर्याय ॥ ६ ॥ नवि० ॥ ज्ञान कल्याणक जिन तणुं रे, आराधे मतिमान ॥ तस प्रनु दान पसायथी रे, वाधे दिन दिन वान ॥ ७ ॥ नवि० ॥

॥ अथ पंचम जोमो ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सकल समीहित सुखकरण, सुरतरु उपमान ॥ तरुण तरणी परे तेजवंत, जगतिलक समान ॥ नक्ति धरी सुरसुंदरी, करे जस गुणगान ॥ ध्याये सुर नर असुर नाथ, जस शुन्न अन्निधान ॥ सुदि मागशिर एकादशी ए, पाम्युं ज्ञान अनंत ॥ दान सुहंकर एम वदे, ते नमि जिन जयवंत ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ मूल प्रकृतिमां एक बंध, चउ सत्ता उदये ॥ एक बंध उत्तर प्रकृति, तिम बेंतालीश उदये ॥ सत्ता पंचाशी विचार, जेहवी वली गार ॥ मन वच काया जोग जास, अविचल अविकार ॥ तेरमा गुणठाणा तणी ए, धरे दशा एम जेह ॥ ते नमि जिन एकवीशमो, दान दया गुणगेह ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ पुरुषोत्तम परमेष्ठिरूप, परमातम योगी ॥ परमानंद ी ॥ निज

अनंत पर्याय युत, सवि जाणे प्राप्य ॥ कालत्रितय वेदी जिणंद, लहे नव्यानव्य ॥ केवलज्ञान ने दरिसन ए, जलहले अंतर तेज ॥ ते श्री नमि जिनराजने, दान नमे धरी हेज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ सकल गुण निधानं, शांत मुद्रा प्रधानं ॥ शिव सुगति निदानं, मर्दितानंग मानं ॥ सुरकृत गुणगानं, विश्व विख्यात दानं ॥ नज नमि अनिधानं, श्री जिनं सावधानं ॥१॥ नमित सुर नरिंदा, दीप्त तेजे दिणंदा ॥ शमित सकल कंदा, दग्ध संसार कंदा ॥ वदन विजित चंदा, प्रीति आणी अमंदा ॥ नविक जन जिणंदा, वंदीये ते अफंदा ॥ २ ॥ मदन अगनि पाणी, पाप वेली कृपाणी ॥ उपशम गुणवाणी, इंद्र चंद्रे वखाणी ॥ भुवन जन गुराणी, नव्य जीवे धराणी ॥ त्रिभुवनपति वाणी, सांनलो नाव आणी ॥ ३ ॥ करकमल धरंती, केलि लीला करंती ॥ जिनपद समरंती, संघ विघ्नो हरंती ॥ समकित गुणवंती, नारती सौम्य कांति ॥ शुन्न मति विलसंती, दान दीक्षांती ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ श्री नमि जिनवर भुवन दिणंद, विजय राज कुल जलनिधि चंद, वप्रा राणी नंद ॥ सुरपति पूजित पद अरविंद, मन मदन मातंग मयंद, माया वेली गयंद ॥ मन वच काया जास अफंद, क्रोधादिक अरि कीधा मंद, छेदित डुरमति दंद ॥ सुदि मृगशिर मासे सुखकंद, एकादशी दिवसे आणंद, केवल पाम्युं अमंद ॥ १ ॥ जिन केवल उपजे जिणे ठाय, टाले रेणु विकूर्वी वाय, नीर कुसुमवृष्टि थाय ॥ रयण कंचन ने रजत सुहाय, प्राकार त्रण रचे सुखदाय, तिहां मणिपीठ ठराय ॥ ते विचे वृक्ष अशोकनी छाय, सोवन सिंहासन मंमाय, तिहां वेसे जिनराय ॥ शिर उपरे त्रण छत्र ढलाय, चिहुं पखे सुर चामर वींजाय, प्रणमुं तेहना पाय ॥ २ ॥ सिंहासन वेसी जिन भाण, भाखे वाणी अमृत समान, स्याद्वाद मंमाण ॥ श्री जिनवर ते पोत सुखाण, जिहां बहु नय निक्षेप प्रमाण, हेतु भंग गम ठाण ॥ जिहां निश्चय व्यवहार वखाण, पसरे जोयण भूमि प्रमाण, गुण पांत्रीश निहाण ॥ निज निज भाषारूपे जाण, सहुने परि-

णामे घन उत्तमाण, सांजलो तेह सयाण ॥ ३ ॥
जिन पदकज मधुकर अनुकार, जे मुनि पंच महा-
व्रत धार, साध्वी गुण जंमार ॥ श्रावक जे पाले
व्रत बार, श्राविकानो एहज आचार, संघ चतुर्विध
सार ॥ तेहनी रक्षाना करनार, जे देवा छे चतुर
प्रकार, जेहनी शक्ति अपार ॥ ते हरजो दुःखनो
विस्तार, ॥ करजो सकल विघ्न संहार, दान सदा
जयकार ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ राग वेलाउलनी देशी ॥ जव दुःख वारण
शिवसुख कारण, श्री नमिनाथ जिणंदा, प्रणमो
जवि जावे जिम थावे ॥ सकल कुशल आणंदा ॥ १ ॥
श्री नमि० ॥ सुरपुरी सुंदर मिथिला नयरी, राय
विजय तिहां सोहे ॥ वप्रा राणी तस पटराणी,
रूपे सुर नर मोहे ॥ २ ॥ श्री० ॥ तस सुत मति
श्रुत अवधिनाण युत, काया कंचन वान ॥ आण
अखंमित वरते जेहनी, परगट पुण्य निधान ॥ ३ ।
श्री० ॥ व्रत लेइ विधि सहित आराधे, करे सकल
मल हाण ॥ मागशिर सुदि एकादशी दिवसे, पा-
केवलनाण ॥ ४ ॥ श्री० ॥ सपरिवार चोसठ

सुरपति तिहां, समवसरण तव विरचे ॥ कंचन रजत रयण गढ करीने, त्रिभुवनपति पद अरचे ॥ ५ ॥ श्री० ॥ कोमी कोमी सुर नर तिहां मलीया, दुंदुभि देव वजावे ॥ जिननी ऋद्धि अनुपम निरखी, मन परमानंद पावे ॥ ६ ॥ श्री० ॥ ज्ञान कल्याणक इणी परे करतां, जव जय संकट जाजे ॥ ते नमि जिनवर प्रणमो प्रेमे, दान सकल सुख काजे ॥ ७ ॥ श्रीनमि० ॥ इति नमिनाथ स्तवनं ॥ इति श्री दानविजयजीकृत मौन एकादशी देववंदनं समाप्तम्॥

॥ अथ श्री मौन एकादशीनुं दोढसो कल्याणिकनुं गणणुं प्रारंजः ॥

१ जंबुद्वीपे जरते अतीत चोवीशी.

४ श्री महायशः सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति अर्हते नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति नाथाय नमः ॥
६ श्री सर्वानुजूति सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री श्रीधरनाथाय नमः ॥

२ जंबुद्वीपे जरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री नमिनाथ सर्वज्ञाय नम. ॥

१९ श्री मल्लिनाथ अर्हते नमः ॥

१९ श्री मल्लिनाथ नाथाय नमः ॥

१९ श्री मल्लिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री अरनाथ नाथाय नमः ॥

---

२ जंबुद्वीपे भरते अनागत चोवीशी.

---

३ श्री स्वयंप्रभ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री देवश्रुत अर्हते नमः॥

६ श्री देवश्रुत नाथाय नमः ॥

६ श्री देवश्रुत सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री उदयनाथ नाथाय नमः ॥

---

३ धातकी खंडे पूर्व भरते अतीत चोवीशी.

---

४ श्री अकलंक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री शुभंकरनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री शुभंकरनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री शुभंकरनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री सतनाथ नाथाय नमः ॥

---

४ धातकी खंडे पूर्व भरते वर्तमान चोवीशी.

---

२१ श्री ब्रह्मेंद्रनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

श्री गुणनाथ अर्हते नमः ॥

१९ श्री गुणनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री गुणनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री गांगिकनाथ नाथाय नमः ॥

---

६ धातकी खंडे पूर्व भरते अनागत चोवीशी.

---

४ श्री सांप्रत सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री मुनिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विशिष्टनाथ नाथाय नमः ॥

---

७ पुष्करवरद्वीपे पूर्व भरते अतीत चोवीशी.

---

४ श्री सुमृदुनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री व्यक्तनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री कलाशत नाथाय नमः ॥

---

८ पुष्करवरद्वीपे पूर्व भरते वर्तमान चोवीशी.

---

२१ श्री अरण्यवास सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री योगनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री योगनाथ नाथाय नमः ॥

१ए श्री योगनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१ए श्री अयोगनाथ नाथाय नमः ॥

ए पुष्करवरद्वीपे पूर्व जरते अनागत चोवीशी.

४ श्री परम सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ अर्हते नमः ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री शुद्धार्तिनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

ए श्री निःकेशनाथ नाथाय नमः ॥

१० धातकी खंडे पश्चिम जरते अतीत चोवीशी.

४ श्री सर्वार्थ सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री हरिजद्र अर्हते नमः ॥

६ श्री हरिजद्र नाथाय नमः ॥

६ श्री हरिजद्र सर्वज्ञाय नमः ॥

ए श्री मगधाधिप नाथाय नमः ॥

११ धातकी खंडे पश्चिम जरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री प्रयछ सर्वज्ञाय नमः ॥

१ए श्री अक्षोजनाथ अर्हते नमः ॥

१ए श्री अक्षोजनाथ नाथाय नमः ॥

श्री अक्षोजनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥

१७ श्री मलयसिंह नाथाय नमः ॥

१२ धातकी खंडे पश्चिम भरते अनागत चोवीशी.

४ श्री दिनरुक् सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री धनदनाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री धनदनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री पौषधनाथ नाथाय नमः ॥

१३ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते अतीत चोवीशी.

४ श्री प्रलंब सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि अर्हते नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि नाथाय नमः ॥
६ श्री चारित्रनिधि सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री पशमराजित नाथाय नमः ॥

१४ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम भरते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री स्वामी सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ अर्हते नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ नाथाय नमः ॥
१९ श्री विपरीतनाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
१७ श्री प्रसादनाथ नाथाय नमः ॥

६ श्री चंद्रदाह अर्हते नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह नाथाय नमः ॥
६ श्री चंद्रदाह सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री दिलादित्य नाथाय नमः ॥

२२ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री अष्टादिक सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ अर्हते नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ नाथाय नमः ॥
६ श्री वणिक्नाथ सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री उदयज्ञान नाथाय नमः ॥

२३ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री तमोकंद सर्वज्ञाय नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष अर्हते नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष नाथाय नमः ॥
१ए श्री सायकाक्ष सर्वज्ञाय नमः ॥
१७ श्री क्षेमंतनाथ नाथाय नमः ॥

२४ पुष्करार्धे पूर्व ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री नीर्वाणिक सर्वज्ञाय नमः ॥
श्री रविराज अर्हते नमः ॥

६ श्री रविराज नाथाय नमः ॥
६ श्री रविराज सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री प्रथमनाथ नाथाय नमः ॥

२५ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

४ श्री पुरूरवा सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अववोध अर्हते नमः ॥
६ श्री अववोध नाथाय नमः ॥
६ श्री अववोध सर्वज्ञाय नमः ॥
७ श्री विक्रमेंद्र नाथाय नमः ॥

२६ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री सुशांति सर्वज्ञाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव अर्हते नमः ॥
१९ श्री हरदेव नाथाय नमः ॥
१९ श्री हरदेव सर्वज्ञाय नमः ॥
१८ श्री नंदिकेश नाथाय नमः ॥

२७ धातकी खंडे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री महामृगेंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥
६ श्री अशोचित अर्हते नमः ॥
६ श्री अशोचित नाथाय नमः ॥

६ श्री अशोचित सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री धर्मेंद्रनाथ नाथाय नमः ॥

२८ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अतीत चोवीशी.

२१ श्री अश्ववृंद सर्वज्ञाय नमः ॥

१९ श्री कुटिलक अर्हते नमः ॥

१९ श्री कुटिलक नाथाय नमः ॥

१९ श्री कुटिलक सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री वर्द्धमान नाथाय नमः ॥

२९ पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते वर्तमान चोवीशी.

२१ श्री नंदिकेश सर्वज्ञाय नमः ॥

१९ श्री धर्म्मचंद्र अर्हते नमः ॥

१९ श्री धर्म्मचंद्र नाथाय नमः ॥

१९ श्री धर्म्मचंद्र सर्वज्ञाय नमः ॥

१८ श्री विवेकनाथ नाथाय नमः ॥

३० पुष्करवरद्वीपे पश्चिम ऐरवते अनागत चोवीशी.

४ श्री कलापक सर्वज्ञाय नमः ॥

६ श्री विशोम अर्हते नमः ॥

६ श्री विशोम नाथाय नमः ॥

श्री विशोम सर्वज्ञाय नमः ॥

७ श्री अरण्यनाथ नाथाय नमः ॥

॥ अथ मुनि श्री दानविजयजी कृत चैत्री पूनमना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि कहीए छीए ॥

॥ प्रथम चौमुखनी प्रतिमा स्थापीए, पछी स्नात्र भणावाए, प्रभुने दश तिलक करीए, फूलना हार दश चढावीए, दश वखत अगरबत्ती उखेवीए, दश वखत चामर वींजीए, दश दीवेटनो दीवो करीए, पछी दश वखत घंट वजाडीए, चोखाना साथीया दश करीए, ते साथीयानी उपर दश बदामो मूकीए, चौमुखजीने चारे पासे चार श्रीफल मूकीए, अखियाणुं गोधुम शेर त्रण मूकवा, तेनी उपर एक श्रीफल मूकवुं, नैवेद्य मध्ये दश जातिनां पक्वान्न दश ढोइए, पछी जे जे जातिनां फल मले, ते सर्व जातिनां दश दश फल मूकवां, परंतु ते फल सर्व उत्तम जातिनां लेवां, पछी देव वांदीए, पछी शांतिकर स्तोत्र कहीए, पछी श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम दश वखत लेवां, ते एकवीश नाम लखीए छीए.

१ श्री विमलाचलाय नमः। २ श्री पुंडरीकगिरये नमः

३ श्री सिद्धक्षेत्राय नमः
४ श्री सुराचलाय नमः
५ श्री महाचलाय नमः
६ श्री श्रीपदये नमः
७ श्री पर्वतेंद्राय नमः
८ श्री पुण्यराशये नमः
९ श्री दृढशक्तये नमः
१० श्री मुक्तिधराय नमः
११ श्री महातीर्थाय नमः
१२ श्री अकर्मणे नमः
१३ श्री शाश्वतगिरये नमः
१४ श्री सर्वकामदाय नमः
१५ श्री पुष्पदंताय नमः
१६ श्री महापद्माय नमः
१७ श्री पृथ्वीपीठाय नमः
१८ श्री प्रभुपदगिरये नमः
१९ श्री पातालगिरये नमः
२० श्रीकैलासपर्वताय नमः
२१ श्री क्षितिमंगलपर्वताय नमः

ए एकवीश नाम दश वार कहीने पछी दश नवकार गणीए, पछी खमासमण दश आपीए, पछी झंकार छोड़ए, एटले तिहां यथाशक्तिए रूपा नाणुं मूकीए, पछी प्रदक्षिणा दश आपवी. ए रीते देववंदनना प्रथम जोडामां सर्व ढोववा अने नैवेद्य, दीवेट, टीली, चामर, आरती, चोखाना साथीया प्रमुख सर्व दश दश करवा. तेमज बीजा जोडामां वीश, त्रीजा जोडामां त्रीश, चोथा जोडामां चालीश अने पांचमामां पचास, एवा अनुक्रमे वस्तु मूकवी ॥ हवे देव वांदवानो विधि कहे छे. प्रथम

इरियावहि पमिक्कमी एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी पठी प्रगट लोगस्स कहीने चैत्यवंदन करीए, ते चैत्यवंदन लखीए ठीए ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ नाभि नरेसर वंश चंद, मरुदेवा मात ॥ सुररमणी रमणीय जास,गाये अवदात॥कंचन वर्ण समान कांति, कमनीय शरीर ॥ सुंदर गुणगण पूर्ण भव्य, जन मन तरु कीर ॥ आदीश्वर प्रभु प्रणमीए ए, प्रणत सुरासुरवृंद ॥ मन मोदे मुख देखतां, दान मिटे दुःख दंद ॥ ए चैत्यवंदन कह्या पठी नमुथ्थुणं० ॥ कही अरुधा जयवीयराय कहेवा. पठी वली चैत्यवंदन कहेवुं, ते कहे ठे ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ पूर्णचंद्र उपमान जास, वदनांबुज दीठे ॥ भव भव संचित पाप ताप, ते सघलां नीठे ॥ भवि जन नयन चकोर चंद्र, तव हरषित थाय ॥ अंधकार अज्ञान तम, निर्विषयी जाय ॥ समता शीतलता वधे ए, पूर्ण ज्योति परकाश ॥ रुषभदेव जिन सेवतां, दान अधिक उल्लास ॥ २ चैत्यवंदन

॥ पछी नमुत्थुणं अने अरिहंत चेइयाणं० कहीने जे थोय कहेवी, ते लखीए छीए ॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ सिरि शत्रुंजय गिरि मंडणो, दुःख दोहग दुरिय विहंडणो ॥ चैत्री पुनमे सिरि रिसहेसरु, पूजो पुंडरीक गणि सुंदरु ॥ १ ॥ पछी लोगस्स० कहीने बीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ बीजी थोय ॥

॥ अतीत अनागत वर्तमान, जिनवर आवी अनंत तान ॥ चैत्री पूनम दिवसे समोसर्या, ते ध्यायी मुक्तिवधू वर्या ॥ २ ॥ पछी पुरकखरवरदी० ॥ कहीने त्रीजी थोय कहेवी ॥

॥ अथ त्रीजी थोय ॥

॥ विमलाचल महिमा भाखीयो, जिनवर गणधर तिहां दाखीयो ॥ ते आगम समरो धरीय भाव, दुस्तर भवसागर सार नाव ॥ ३ ॥ पछी सिद्धाणं बुद्धाणं० ॥ कही चोथी थोय कहेवी ॥

॥ अथ चोथी थोय ॥

॥ चक्केसरी देवी सुरवरा, जिनवर पय सेवे हि-

तकरा ॥ विमलाचलगिरि रखवालिका, वरदान देजो गुणमालिका ॥ ४ ॥ पठी नमुत्थुणं० ॥ अरिहंत चे० ॥ कहेवुं ॥

॥ अथ थोय जोडो बीजो ॥

॥ विमलाचल भूषण, ऋषभ जिनेश्वर देव ॥ तस आण लहीने, ऋषभसेन गणदेव ॥ ते तीरथमां मुख्य, परणी शिववहू सार ॥ चैत्री पूनम दिन, आणी हर्ष अपार ॥ १ ॥ एक लोगस्स कही थोय कहेवी ॥ विमलाचल महिमा, जिनवर कोडी अनंत ॥ उपदेशे पंभित, परिषद मांहि अनंत ॥ ते जिनवर देयो, मंगलमाला ऋद्धि ॥ चैत्री पूनम तप, आराधकने सिद्धि ॥ पुख्ख० ॥ थोय कहेवी ॥ २ ॥ अष्टापद पमुहा तीरथ कोडी अनेक ॥ तेहमां ए राजा, इम कहे आगम ठेक ॥ ते आगम निसुणो, आणी हृदय विवेक ॥ चैत्री पूनम दिन, जिम होय पुण्य विवेक ॥ सिद्धाणं बुद्धा० ॥ थोय० ॥ ३ ॥ चक्केसरी देवी, जिनशासन रखवाली ॥ सिंहासन बेठी, सिंहलंकी लटकाली ॥ चैत्री पूनम तप, विघ्न हरजो माय ॥ श्रीविजयराज सूरि, दान मान वरदाय ॥ ४ ॥ ६०

स्तुति ॥ पछी नमु० ॥ जावंति चेइ० ॥ जावंत केवि साहू० ॥ नमोऽर्हं० ॥ कही स्तवन कहीए ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ एकवीशानी देशी ॥ सुखकारी रे, सिद्धाचल गुणगेह रे ॥ नवि प्रणमो रे, हृदय धरी बहु नेह रे ॥ त्रुटक ॥ बहु नेह आणी एह जाणी, सकल तीरथ सेहरो ॥ श्री ऋषनदेव जिणंद पूजी, पूर्व सवि डुष्कृत हरो ॥ असुर सुर मुनिराज किन्नर, जास दरसन अहिलसे ॥ जेहनुं फरसन करी नविजन, मुगति सुखमां उल्लसे ॥ १ ॥ ढाल ॥ आदीसर रे, विहरंता जग मांहि रे ॥ सिद्धाचल रे, आवी समोसर्या त्यांहि रे ॥ त्रुटक ॥ त्यांहि गणधर पुंमरीकने, नुवन गुरु इम उपदिशे ॥ तुम नामथी ए तीर्थ केरो, अधिक महिमा वाधशे ॥ सवि कर्म तोडी मोह मोमी, लही केवलनाण रे ॥ चैत्री पूनम दिवसे इणे गिरि, पामशो निर्वाण रे ॥ २ ॥ ढाल ॥ इम निसुणी रे, श्री गणधर पुंमरीक रे ॥ नवजलथी रे, जिम अलगुं पुंमरीक रे ॥ त्रुटक ॥ पुंमरीक परे जे नय न पामे, परिसह उपसर्गथी ॥ क्रोध ने मद मान माया, जास चित्त रतनथी ॥ पंच कोमि मु-

निवर संघाते, तिहां अणसण उच्चरे ॥ अम कर्म जाली दोष टाली, सिद्ध मंदिर अनुसरे ॥ ३ ॥ ढाल ॥ ते दिनथी रे, ए गिरिनुं अति ऋद्धि रे ॥ पुंमरीक इति रे, नाम थयुं प्रसिद्ध रे ॥ त्रुटक ॥ प्रसिद्ध महिमा चैत्री पूनिम, जिने जेहनो जाणीए ॥ बहु जाव आणी सार जाणी, सुगुण जास वखाणीए ॥ दश वीश त्रीश अने चालीश, पचास पुष्फमाल रे ॥ लोगस्स तेती काउस्सग्गो थुइ, नमुक्कार रसाल रे ॥ ४ ॥ ढाल ॥ फल तेतां रे, होय तेती प्रदक्षिणा ॥ चैत्री पुजा रे, इणी विधि कीजे विचक्षणा ॥ त्रुटक ॥ विचक्षणा जिनराज पूजी, पुंमरीक हियडे धरो ॥ शत्रुंजय गिरिवर आदि जिनवर, नमी जवसायर तरो ॥ इम चैत्री पूनम तणो उछव, जे करे नवि लोय रे ॥ श्री विजयराज सूरिंद विनयी, दान शिवसुख होय रे ॥ ५ ॥ इति स्तवन ॥ पछी जयवीयराय आजवमखंमा सुधी कहेवा. पछी चैत्यवंदन कहेवुं. ते कहे छे ॥

॥ अथ चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पुनमनो अंक, शशिधर जिम दीपे ॥ अंगारक आदि अनेक, ग्रहगणने जीपे ॥ तिम पर-

तीर्थी देवथी, जेह अधिक विराजे ॥ लोकोत्तर अतिशय अनंत, दीपंत दिवाजे॥ चैत्री पूनमने दिने ए, नजो एह नगवंत ॥ श्री विजयराज सूरिंदनो, दान सकल सुख हुंत ॥ ३ ॥ इति देववंदननो प्रथम जोडो समाप्त ॥ अहींआं नमुत्थुणं तथा जयवीयराय संपूर्ण कही शांतिकर स्तोत्र कहेवुं ॥ ए प्रकारनो सर्वे विधि जेम प्रथम लख्यो छे, तेम अहीं जाणी लेवो ॥

॥ अथ देववंदननो बीजो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ श्री शत्रुंजय सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल साचो ॥ आदीसर जिनरायनो, जिहां महिमा जाचो ॥ इहां अनंत गुणवंत साधु, पाम्या शिववास ॥ एह गिरि सेवाथी अधिक, होय लील विलास ॥ डुष्कृत सवि दूरे हरे ए, बहु नव संचित जेह ॥ सकल तीर्थ शिर सेहरो, दान नमे धरी नेह ॥ १ ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ आदीसर जिनरायनो, गणधर गुणवंत ॥ प्रगनाम पुंमरीक जास, मही मांहे महंत॥ पंच को-

री साथे मुणींद, अणसण तिहां कीध ॥ शुक्ल-ध्यान ध्यातां अमूल, केवल तिहां लीध ॥ चैत्री पूनमने दिन ए, पाम्या पद महानंद ॥ ते दिनथी पुंरूरीक गिरि, नाम दान सुखकंद ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ सकल सुहंकर सिद्धक्षेत्र, सिद्धाचल सुणीए ॥ सुर नर नरपति असुर खेचर, निकरे जे थुणीए ॥ सकल तीरथ अवतार सार, बहु गुण भंमार ॥ पुंरूरीक गणधर जब, पाम्या भवपार ॥ चैत्री पूनमने दिने ए, कर्म मर्म करी दूर ॥ ते तीरथ आराहीए, दान सुयश भरपूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय गिरिवर वासव, वासव सेवित पाय जी ॥ जयवंता वरतो तिहुं काले, मंगल कमला दाय जी ॥ सिरि रिसहेसर शिष्य शिरोमणि, पुंरूरीकथी ते साध्यो जी ॥ चैत्री पूनम आ चोवीशी, महिमा जेहनो वाध्यो जी ॥ १ ॥ अनंत तीर्थकर शत्रुंजय गिरि, समोसर्या बहु वार जी ॥ गणधर मुनिवरशुं परवरीया, तिहुअणना आधार जी ॥

ते जिनवर प्रणमो नवि नावे, तिहुअण सेवित चरणा जी ॥ नवनय त्राता मंगल दाता, पापरजो हर नरणा जी ॥ २ ॥ श्री आदीसर वचन सुणीने, पुंम्रीक गणधार जी ॥ आगमरचना कीधी पोढी, नय निक्षेपा धार जी ॥ चैत्री पूनमने दिन आगम, आराधो नवि प्राणी जी ॥ आतम निर्मलता वर नावो, कतकफले जिम पाणी जी ॥ ३ ॥ शत्रुंजय सेवानो रसीयो, वसीयो नवि जन चित्ते जी ॥ चउविह संघनां विघन हरेवा, उद्यत अतिशय नित्ते जी ॥ कवम यक्ष जिनशासन मंमपे, मंगल वेलि वधारो जी ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर सेवक, सफल करो अवतारो जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ शत्रुंजय मंमण, मोह खंमण, नानिनंदन देव ॥ वार पूर्व नवाणुं आव्या, सहित गणधर देव ॥ रायण हेठे ठवी आसन, सुणत पर्षद बार ॥ शत्रुंजय महिमा प्रगट कीधो, लोकने हितकार ॥ १ ॥ विमल गिरिवर सेवनाथी, पापना नमवाय ॥ तमघटा जिम सूर देखी, दूर दह दिशि जाय ॥ चैत्री पूनम उपदिशी इम, तीर्थंकरनी कोमी ॥ सेवीए नवि-

का तेह जिनवर, नित्य निज कर जोमी ॥ २ ॥ सात छठ ने एक अठम, जाप विधिशुं मेली ॥ शत्रुंजय गिरि आराधी इम, वाधे गुणनी केली ॥ इम कहे आगम विविध विधिशुं, कर्म नेद उपाय ॥ ते समय निसुणो नक्ति आणी, दलित डुर्मति दाय ॥ ३ ॥ गोमुख सुंदर यक्त गोमुख, यक्तवर्ग परधान ॥ जैन तीरथ विघन वारण, निपुण बुद्धि निधान ॥ श्री नाजिनंदो शिष्य मुनिवर, पुंमरीक गणधार ॥ श्री विजयराज सूरिंद संघने, करो कुशल विस्तार ॥ ४ ॥ इति द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ चोपाइनी देशी ॥ श्री शत्रुंजय तीरथ सार, प्रणमो आणी नगति उदार ॥ नंदीश्वर यात्राए फल जेह, कुंमलगिरि बमणुं होय तेह ॥ १ ॥ तेह त्रमणुं रुचकाचल जोय, तेह गजदंते चउ गुणुं होय ॥ तेहथी बमणुं जंबु वृक्त, चैत्य वांदता होय प्रत्यक्त ॥२॥ चैत्य जे धातकी खंड मकार, ठ गुणुं ते फल नमतां सार ॥ ठत्रीश गुणुं फल तेहथी होय, पुष्करवर जिन नमतां जोय ॥ ३ ॥ मेरु चूलाना जिन प्रणमंत, तेहथी तेर गुणुं फल हुंत ॥ तेहथी सहस गुणुं फल

थाय, समेतशिखर जे यात्रा जाय ॥ ४ ॥ ते लख गुणुं अंजनगिरि जाण, ते दश लख गुण रैवत जाण ॥ अष्टापद वंदे मन नाय, तेहने पण एहीज फल थाय ॥ ५ ॥ पुंमरगिरि प्रणमी गहगहे, तेहथी कोमी गुणुं फल लहे ॥ नाख्युं एह फल परिमाण, नावथी जन अधिक मन आण ॥ ६ ॥ पुंमरीक गणधर जिहां सिद्ध, पुंमरीक गिरि तेह प्रसिद्ध ॥ वंदी एह गिरि लही संपदा, दानविजय नाखे एम मुदा ॥ ७ ॥ इति स्तवन ॥ अहीं नमिऊण० ॥ कहीए ॥ इति देववंदननो बीजो जोडो संपूर्ण ॥ ते वार पढी बमणो विधि करीने त्रीजो जोमो कहीए, ते कहे ढे ॥

॥ अथ देववंदननो त्रीजो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथ उपर अनंत, तीर्थंकर आव्या ॥ वली अनंता आवशे, समतारस नाव्या ॥ आ चोवीशी मांहि एक, नेमीश्वर पाखे ॥ जिन त्रेवीश समोसस्या, एम आगम नाखे ॥ गणधर मुनिवर केवली, समोसस्या गुणवंत ॥ प्रेमे ते गिरि प्रणमतां, हरखे दान हसंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ ए तीरथना उपरे, थया उद्धार असंख्य ॥ तिम प्रतिमा जिनरायनी, थइ तास नवि संख्य ॥ अजित शांति जिनराज इह, रह्या चौमासी ॥ ए तीरथ मुनि अनंत, हुआ शिवपुरवासी ॥ चैत्री पूनमने दिने ए, महिमा जास महान् ॥ ए तीरथ सेवन थकी, दान वधे बहु वान ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टापद आदि अनेक, जग तीरथ मोटां ॥ तेहथी अधिकुं सिद्धक्षेत्र, एह वचन न खोटां ॥ जे माटे ए तीर्थ सार, सासय प्रतिरूप ॥ जेह अनादि अनंत शुद्ध, इम कहे जिनभूप ॥ कलिकाले पण जेहनो ए, महिमा प्रवल पडूर ॥ श्री विजयराज सूरिंदथी, दान वधे बहु नूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ विमलाचल सिहर शिरोमणि, तनु तेजे निर्जित दिनमणि ॥ श्रीनाभेय जिन जग गृह मणि, जयो तिहुअण वांछित सुर मणि ॥ १ ॥ एकशत अड सानु सोहामणा, निषधादिक छे गुणे वामणा

॥ शिखरे शिखरे बहु जिनवरा, आवी समोसर्या गुणसायरा ॥ २ ॥ पुंमरीक तपोविध जाखीयो, मधुराकारे शत्रुंजय साखीयो ॥ सुहगुरु संघपूजा जिहां कही, ते आगम अज्यासे गहगही ॥ ३ ॥ शशी वयणी कमल विलोचना, चक्केश्वरी देवी विरोचना ॥ रिसहेसर जत्ति विधायिका, वरदान देजो सुप्रजाविका ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ सती मरुदेवी उरि सरोवर हंस, नृप नाजि कुलांबर जे वर हंस ॥ सिरि रिसहेसर सेवो सदा, चैत्री पूनम लहो संपदा ॥ १ ॥ ऐरवत विदेह ने जरते जेह, ते जिन प्रशंसे तीरथ एह ॥ ते तीर्थंकर जवजय हरो ॥ जवियण चैत्री तप अनुसरो ॥ २ ॥ तीरथयात्रा ते डुःख हरे, ए करणीथी शिवसुख वरे ॥ इम उपदेशे गणधर देव, चैत्री तप करो नित्यमेव ॥ ३ ॥ श्रुतदेवी सित कमले रही, विमलाचल सेवा गहगही ॥ चैत्री तप सान्निधि करे माय, जिम दान सकल डुःखमां दूर जाय ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ रसीयानी देशी ॥ प्रणमो प्रेमे पुंमरीक गिरि

राजीयो, गाजीयो जगमां रे एह ॥ सोजागी ॥ यात्राए जातां पगे पगे निर्जरे, बहु जव संचित खेह ॥ सोजागी ॥ १ ॥ प्रण० ॥ पाप होय वज्रलेप समोवड़, तेह पण जाये रे दूर ॥ सो० ॥ जो एह गिरिनुं दर्शन कीजीए, जाव जगति जरपूर ॥ सो० ॥ २ ॥प्रण०॥ गोहत्यादिक हत्या पंच छे, कारक तेहना जे होय ॥ ॥ सो० ॥ ते पण ए गिरिनुं दर्शन जो करे, पामे शिवगति सोय ॥ सो० ॥ ३ ॥ प्र० ॥ श्री शुकराज नृपति पण इण गिरि, करतो जिनवर ध्यान ॥ सो० ॥ षट मासे रिपु विलय गया सवे, वाध्यो अधिक तस वान ॥ सो० ॥ ४ ॥ प्र० ॥ चंद्रशेखर निज जगिनी जोगवी, कीधुं पाप महंत ॥ सो० ॥ ते पण ए तीरथ आराधतां, पाम्यो शुज गति संत ॥ सो० ॥ ॥ ५ ॥ प्र० ॥ मोर सर्प वाघण प्रमुख बहु, जीव जे जे विकराल ॥ सो० ॥ ते पण ए गिरि दर्शन पुण्यथी, पामे सुगति विशाल ॥ सो० ॥ ६ ॥ प्र० ॥ एहवो महिमा ए तीरथ तणो, चैत्री पूनमे विशेष ॥ सो० ॥ श्री विजयराज सूरीश्वर शिष्यने, दान गयां दुःख लेश ॥ सो० ॥ ७ ॥ प्रण० ॥ तिजयपहुत्त ॥ इ० ॥ इति त्रीजा देववंदननो त्रीजो जोडो संपूर्ण ॥ अर्हांश्रां

पूर्वेनी परे विधि त्रिगुणो करीने चोथा जोमानो प्रारंन करीए ॥

॥ अथ देववंदननो चोथो जोमो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ जोयण शत परिमाण एक, जे पहिले आरे ॥ वीजे आरे जोयण जेह, एंशी विस्तारे ॥ तिम त्रीजे जोयण साठ, चोथे पंचास ॥ पांचमे आरे बार सार, विस्तार ठे जास ॥ ठठाने अंते हुशे ए, एक हस्त जस मान ॥ एह अवस्थित ठे सदा, ते प्रणमे मुनि दान ॥ १ ॥ इति प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ नरत नरेसर नरत क्षेत्र, चक्री इण ठामे ॥ आव्यो संघ सजी सनूर, मन आणंद पामे ॥ कंचनमय प्रासाद कीध, उत्तंग उदार ॥ मंमप तोरण विविध जाल, मालित चउ वार ॥ धणु पण सय मित्त मणि तणी ए, थापी ऋषननी मूर्त्ति ॥ दान दयाकर तीर्थथी, पसरी जग जस कीर्त्ति ॥ २ ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ ऋषननी प्रतिमा मणिमयी, नरतेश्वर कीधी ॥

ते प्रतिमा छे इण गिरि, एह वात प्रसिद्धि ॥ देखे दरिसण कोय जास, मानव इणे लोके ॥ त्रीजे नवे जे मुक्ति योग्य, नर तेह विलोके ॥ स्वर्णगुफा पश्चिम दिशे ए, ए छे जास अहिठाण ॥ दान सुहंकर विमलगिरि, ते प्रणमुं हित आण ॥ ३ ॥

॥ अथ थोयो जोमा वे ॥

॥ चैत्री तप तीरथ नावतो, अनुनवमां आतम राखतो ॥ रिसहेसर जिन नवि नजो, जिम थाये नवजलशुं त्यजो ॥ १ ॥ जयवंता वरतो जिनवरा, तिहुअण वर नवियण हितकरा ॥ पुंमरीक तपो विधि जाणता, चैत्री पूनम दिवस वखाणता ॥ २ ॥ नय गम पर्याये पूरीयो, नवि पाखंडीए चूरीयो ॥ जिनवरनो आगम मन धरो, जिम डुर्मति डुःकृत परिहरो ॥ ३ ॥ जिनशासन देवी चक्केसरी, जिन हेते दान द्यो ईश्वरी ॥ जिनशासन उदय वधारजो, चैत्री तप विघ्न निवारजो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ शत्रुंजय महिमा, पगट्यो जेहथी सार ॥ चैत्री पूनम दिन, आप्यो एह उदार ॥ रिसहेसर सेवा,

॥ अथ देववंदननो पांचमो जोडो ॥

॥ तिहां प्रथम त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ सगरादिक नरपति अनेक, इणे पर्वत आव्या ॥ विविध विचित्र विराजमान, प्रासाद कराव्यां ॥ जक्ति धरी जिनवर तणी, बहु प्रतिमा थापी ॥ तिणे महीयलमां तेहनी, कीरति अति व्यापी ॥ सुरपति नरपतिना थया ए, इहां बहु उद्धार ॥ ते शत्रुंजय सेवीए, दान सकल सुखकार ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ एह गिरि उपरे आदि देव, प्रजु प्रतिमा वंदो ॥ रायण हेठे पाडुका, पूजी आणंदो ॥ एह गिरिनो महिमा अनंत, कुण करे वखाण ॥ चैत्री पूनमने दिवसे, तेह अधिको जाण ॥ एह तीरथ सेवो सदाए, आणी जक्ति उदार ॥ श्रीशत्रुंजय सुखदायको, दानविजय जयकार ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पूनमने दिवस, शत्रुंजय जेटे ॥ जक्ति धरे जे जव्य लोक, ते जव दुःख मेटे ॥ आदीश्वर जिननी अमूल, पूजा विरचावी ॥ ईति जीति सघली

टले, सुख संपद पावे ॥ परमातम परकाशथी ए, प्रगटे परमानंद ॥ श्रीविजयराज सूरीश्वर, दान अधिक आनंद ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा बे ॥

॥ परम सुख विलासी, शुद्ध चिद्रूप वासी ॥ सहज रुचि विकासी, मोक्ष आवासवासी ॥ मद मदन निवासी, विश्वथी जे उदासी ॥ ऋषभ जिन अनासी, वंदीये ते निरासी ॥ १ ॥ जिनवर हितकारा, प्राप्त संसार पारा ॥ कृत कपट विदारा, पूर्ण पुण्य प्रचारा ॥ कलिमल मलहारा, मर्दितानंग चारा ॥ दुःख विपिन कुठारा, पूजीए प्रेम धारा ॥ २ ॥ प्रबल नयन प्रकाशा, शुद्ध निक्षेप वासा ॥ विविध नय विलासा, पूर्ण नाणावभासा ॥ परि हरि तक दासा, दत्त दुर्वादि त्रासा ॥ भवि जन सुणी खासा, जैन वाणी जयासा ॥ ३ ॥ सकल सुर विशिष्टा, पालिता नेक शिष्टा ॥ गरिम गुण गरिष्टा, नासिताशेषरिष्टा ॥ जनम मरण निष्टा, दान लीला पदिष्टा ॥ हरतु सकल दुष्टा, देवि चक्रा वरिष्टा ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ विमलाचल तीरथ सुंदरु, एक शत अड नाम

सुहंकरु ॥ ईति उपद्रव संहरु, जस नामे लहीए सुख वरु ॥ तसु सिहरे श्रीरिसहेसरु, मूरति छे म-हिमा सायरु ॥ जपतां जस नाम गुणायरु, पामीजे शिवसंपद तरु ॥ १ ॥ आ चउवीशी जिनवरा, एक ने-मि विना त्रेवीश वरा ॥ विमलाचल आव्या सादरा, जस सेवे सुर नर किन्नरा ॥ वली कोमा कोमी मुनी-श्वरा, अणसण करी निर्वृत्तिधरा ॥ ए तीरथ फरसो नवि नरा, चैत्री पूनम दिनगत मरा ॥ २ ॥ उपदेशी वाणी जिनेश्वरे, ते श्रुतिपथ आणी गणधरे ॥ ते अंगादिक रचना करे, जिहां जीवादिक नाख्या विवरे ॥ ते निसुणी नवि उछाह धरे, पुंमरीकादिक तप आदरे ॥ ते आगम जग डुरमति हरे, शिवना-री मेलो दृढ करे ॥ ३ ॥ वज्रसेन सूरीश्वरनी वाणी, सांनली ने मन ममता नाणी ॥ पच्चरकाण कर्युं तिणे शुन नाणी, तेहथी थयो व्यंतर सुर नाणी ॥ तेह यक्ष कपर्दि बहु माणी, मुज डुःख दोहग नाखो ताणी ॥ श्री विजयराज गुरु गुणखाणी, एम दान कहे सुणो नवि प्राणी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥ राग गोडी ॥

॥ मन लागो ॥ ए देशी ॥ नव नगति नविजन

धरी, जेटो ए गिरिराय रे ॥ ए तीरथ वारु ॥ अतिशय गुण ए गिरि तणा, एक मुखे न कहेवाय रे ॥ ए तीरथ वारु ॥ १ ॥ जोयण दश जस चूलिका, पंचास जोयण विस्तार रे ॥ ए० ॥ आठ जोयण उन्नतपणे, एह मान ऋषजने वारे रे ॥ ए० ॥ २ ॥ इण गामे आदीसरु, साथे वहु परिवार रे ॥ ए० ॥ रायण रुंख समोसस्या, पूर्व नवाणुं वार रे ॥ ए० ॥ ॥ ३ ॥ थावच्चा सुत मुनिवरु, तिम शुकराज मुनीश रे ॥ ए० ॥ पंथग शेलग इणी गिरि, आप थया जगदीश रे ॥ ए० ॥ ४ ॥ सांच प्रद्युम्न आदि जिहां, असंख्यात मुनिराय रे ॥ ए० ॥ शाश्वत सुख पाम्युं सही, वंदु तेहना पाय रे ॥ ए० ॥ ५ ॥ सीमंधर स्वामी उपदिशे, परपद वार मफार रे ॥ ए० ॥ इंद्र प्रते कहे जरतमां, एक शत्रुंजय सार रे ॥ ए० ॥ ॥ ६ ॥ इम निसुणी ए गिरि नमी, आव्या कालिक सूरि पास रे ॥ ए० ॥ पूठी विचार निगोदना, वात कही तव खास रे ॥ ए० ॥ ७ ॥ प्रतिमा चैत्य थयां इहां, तिम असंख्य उद्धार रे ॥ ए० ॥ चैत्री पूनम दिन एहनो, महिमा जाख्यो अपार रे ॥ ए० ॥ ८ ॥ चैत्री उत्सव जे करे, ते लहे जव दुःख जंग रे ॥

॥ ए० ॥ श्री विजयराज सूरीसरु, दान अधिक उछरंग रे ॥ ए० ॥ ए ॥ इति स्तवनं ॥ पछी नमुत्थुणं जयवीयराय संपूर्ण कही देववंदन भाष्य कहीए अने विधि पूर्वे लख्यो छे तेथी पांच गुणो करीए ॥ इति पंचम देववंदन जोडो संपूर्ण ॥ इति मुनि दानविजयजी कृत चैत्री पूनमना देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलसूरि कृत चैत्री पूनमना देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तिहां प्रथम विधि लखीए छीए ॥

॥ प्रथम प्रतिमा चार मांमीए तथा चोमुख होय तो चोमुख मांडीए. तिहां प्रथम टीकी दश करवी, फूलना हार दश, अगरबत्ती दश वार उखेववी, दश वाटनो दीवो करवो, दश वार घंट वजाववो, दश वार चामर वींजवा, दश साथीया चोखाना करवा, जेटली जातिनां फल मले ते सर्व जातिनां प्रत्येके दश दश मूकवां, सोपारी प्रमुख सर्व दश दश मूकवा, नैवेद्य मध्ये साकरीया चणा तथा एलचीपाक, द्राख, खारेक, शिंगोडां, निंबजां, पीस्तां, मेवा जे जे जातिना मले ते सर्व जातिना

प्रत्येके दश दश वानां ढोकवां. अखीयाणुं गोधूम शेर त्रण, लीलां नालीएर चार मूकवां, इत्यादिक विधि मेलवीने देव वांदवा. पठी श्री सिद्धाचलजीनां एकवीश नाम लीजे, ते नाम लखीए ठीए.

१ श्री शत्रुंजय	८ श्री पद्म.	१५ श्री महापद्म.
२ श्री पुंमरीक.	ए श्री पर्वतेंद्र.	१६ श्री पृथ्वीपीठ.
३ श्री सिद्धक्षेत्र.	१० श्री महातीर्थ.	१७ श्री सुभद्र.
४ श्री विमलाचल.	११ श्रीशाश्वतपर्व.	१८ श्री कैलास.
५ श्री सुरगिरि.	१२ श्री दृढशक्ति.	१ए श्रीपातालमूल.
६ श्री महागिरि.	१३श्री मुक्तिनिलय.	२०श्री अकर्मक.
७ श्री पुण्यराशि.	१४श्री पुष्पदंत.	२१ श्री सर्वकामद.

ए प्रमाणे एकवीश नाम लीजे.

॥ अथ प्रथम त्रण चैत्यवंदन लिख्यते ॥

आदीश्वर अरिहंत देव, अविनाशी अमल ॥ अक्षय सरूपी ने अनुप, अतिशय गुण विमल ॥ मंगल कमला केली वास, वासव नित्य पूजित ॥ तुज सेवा सहकार वर, करतां कव कुंजित ॥ योजित युग आदि जिणे ए, सकल कला विज्ञान ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि गुण तणो, अनुपम निधि जगवान् ॥१॥

॥ अथ द्वितीय चैत्यवंदन ॥

॥ वंश इख्खाग सोहावतो, सोवन वन काय ॥ नाभिराय कुल मंरूणो, मरुदेवी माय ॥ भरतादिक शत पुत्रनो, जे जनक सोहाय ॥ नारी सुनंदा सुमंगला, तस कंत कहाय ॥ ब्राह्मी सुंदरी जेहनी ए तनया बहु गुण खाण, ज्ञानविमल गुण तेहना संभारो सुविहाण ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ तृतीय चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथमनाथ प्रगट प्रताप, जेहनो जगे राजे। पाप ताप संताप व्याप, जस नामे भाजे ॥ परम तत्त्व परमात्म रूप, परमानंद दाइ ॥ परम ज्योति जस जलहले, परम प्रभुता पाइ ॥ चिदानंद सुख संपदा ए, विलसे अक्षय सनूर ॥ ऋषभदेव चरणे नमे श्री ज्ञानविमल गुण सूर ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंरुण, रिसह जिणेसर देव। सुर नर विद्याधर, सारे जेहनी सेव ॥ सिद्धाचल शिखरे, सोहाकर शृंगार ॥ श्रीनाभि नरेसर, मरुदेवीनो मल्हार ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवी-

श उदार ॥ एक नेम विना सवि, समवसर्या सुखकार ॥ गिरि कंरूणे आवी, पहोता गढ गिरनार ॥ चैत्री पूनम दिने, ते वंडुं जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्मकथांगे, अंतगरू सूत्र मजार ॥ सिद्धाचल सीधा, वोल्या वहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिणे जेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गोमुख चक्रेश्वरी, शासननी रखवाली ॥ ए तीरथ केरी, सान्निध्य करे संजाली ॥ गिरुउं जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोमो ॥

॥ त्रेसठ लख पूरव राज करी, लीये संयम अति आणंद धरी ॥ वरस सहसे केवल लच्छी वरी, एक लख पूर्वे शिवरमणी वरी ॥ १ ॥ चोवीशे पहिला रुषन्न थया, अनुक्रमे त्रेवीशे जिणंद जया ॥ चैत्री पूनम दिन तेह नमो, जिम डुर्गति डुःखडां दूर गमो ॥ २ ॥ एकवीश एकतालीश नाम कह्यां, आगमे गुरुवयणे तेह लह्यां ॥ अतिशय महिमा इम जाणीए, ते निशिदिन मनमां आणीए ॥ ३ ॥ शत्रुंजय

गिरिनां सवि विघन हरे, चक्केसरी देवी जगति करे ॥ कहे ज्ञानविमल सूरीसरु, जिन शासनने होजो जयकरु ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ लाछलदे मात मल्हार ॥ ए देशी ॥ सिद्धाचल गुणगेह, जवि प्रणमो धरी नेह, आज हो सोहे मन मोहे तीरथ राजीयो जी ॥ १ ॥ आदीश्वर अरिहंत, मुगति वधूनो कंत, आज हो पूरव वार नवाणुं आवी समोसर्या जी ॥ २ ॥ सकल सुरासुर राज, किन्नर देव समाज, आज हो सेवा से सारे कर जोडी करी जी ॥ ३ ॥ दरशनथी दुःख दूर, सेवे सुख जरपूर, आज हो एणे रे कलिकाले कल्पतरु अछे जी ॥ ४ ॥ पुंडरीक गिरिध्यान, लहीए बहु यश मान, आज हो दीपे रे अधिकी तस ज्ञानकला घणी जी ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥

॥ अथ विधि ॥

॥ शांतिकरं कहीए. पछी नवकार दश गणवा. पछी श्री शत्रुंजयनां एकवीश नाम नमस्कारपूर्वक . जेम श्री शत्रुंजयाय नमः श्रीपुंडरीकाय नमः

इत्यादि एकवीश नाम केइ पठी भंडार ढोइए. पठी खमासमण दश देइ प्रदक्षिणा दश देवी, एटले एक जोमानो विधि थयो ॥ इति ॥

॥ अथ देववंदनना बीजा जोमानो विधि पण प्रथमनी प्रमाणेज छे. वस्तु पण तेहीज सर्व मेलववी, परंतु एटलो फेर के दश दश वस्तुने ठेकाणे वीश वीश वस्तु मूकवी. अखीयाणुं तेहीज मूकवुं, अने शांतिकरंने स्थानके नमिऊण कहेवुं ॥ इति विधि ॥

॥ अथ वीजा जोडानां त्रण चैत्यवंदन ॥

॥ नाभिनरेसर वंश मलय, गिरि चंदन सोहे ॥ जस परिमलशुं वासीयो,, त्रिभुवन मन मोहे ॥ अपछर रंभा उर्वशी, जेहना अवदात ॥ गाये अहोनिश हर्षेशुं, मरुदेवी मात ॥ निरुपाधिक जस तेजशुं ए, सममय सुखनो गेह ॥ ज्ञानविमल प्रभुता घणी, अक्षय अनंती जेह ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ वीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ जिम चैत्री पूनम तणो, अधिको विधु दीपे ॥ ग्रहगण तारादिक तणा, परम तेजने जीपे ॥ तिम लौकिकना देव ते, तुम्ह आगे हीणा ॥ लोकोत्तर

अतिशय गुणे, रहे सुर नर लीना ॥ निर्वृत्ति नगरे जायवा ए, एहीज अविचल साथ ॥ ज्ञानविमल सूरि एम कहे, नव नव ए मुफ नाथ ॥ २ ॥

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ अजर अमर अकलंक अरुज, निरुज अविनाशी ॥ सिद्ध सरूपी शंकरो, संसार उदासी ॥ सुख संसारे नोगवी, नहीं नोगविलासी ॥ जीती कर्म कषायने, जे थयो जितकाशी ॥ दासी आशि अवगणी ए, समीचीन सर्वांग ॥ नय कहे तस ध्यांने रहो, जिम होय निर्मल अंग ॥ ३ ॥

॥ अथ थोयो जोडा बे ॥

॥ श्री शत्रुंजय मंमण रिसह जिणंद, पाप तणो उन्मूले कंद ॥ मरुदेवी मातानो नंद, ते वंदु मन धरी आनंद ॥ १ ॥ त्रण चोवीशी बहुत्तर जिना, नाव धरी वंदुं एक मना ॥ अतीत अनागत ने वर्तमान, तिम अनंत जिनवर धर्यो ध्यान ॥२॥ जेहमां पंच कह्या व्यवहार, नय प्रमाण तणा विस्तार ॥ तेहना सुणवा अर्थ विचार, जिम होय प्राणी अल्प संसार ॥ ३ ॥ श्री जिनवरनी आणा करे, जग जस-

वाद घणो विस्तरे ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि सान्निध्य करे, शासनदेवी संकट हरे ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ प्रणमो नविया रिसह जिणेश्वर, शत्रुंजय केरो राय जी ॥ वृषन्न लंछन जस चरणे सोहे, सोवन वरणी काय जी ॥ नरतादिक शत पुत्र तणो जे, जनक अयोध्या राय जी ॥ चैत्री पूनमने दिन जेहना, महोटा महोत्सव थाय जी ॥ १ ॥ अष्टापद गिरि शिवपद पाम्या, श्री रिसहेसर स्वामी जी ॥ चंपाए वासुपूज्य नरेसर, नंदन शिवगति गामी जी ॥ वीर अपापापुर गिरनारे, सिद्धा नेम जिणंदो जी ॥ वीश समेत गिरि शिखरे पहोता, एम चोवीशे वंदो जी ॥ २ ॥ आगम नागमता परे जाणो, सवि विषनो करे नाश जी ॥ पाप ताप विष दूरे करवा, निशिदिन जेह उपासे जी ॥ ममता कंचूकी कीजे अलगी, निर्विषता आदरीये जी ॥ इणी परे सहज थकी नव तरीये, जिम शिवसुंदरी वरीये जी ॥ ३ ॥ कवड जक्ष प्रत्यक्ष थइने, जेहना परता पूरे जी ॥ दोहग दुर्गति दुर्जननो कर, संकट सघलां चूरे

॥ अथ त्रीजुं चैत्यवंदन ॥

॥ चैत्री पूनमने दिने, जे इण गिरि आवे ॥ आठ सत्तर बहु भेदशुं, जे भक्ति रचावे ॥ आदीश्वर अरिहंतनी, तस सघलां कर्म ॥ दूरे टले संपद मले, भांजे भव भर्म ॥ इह भव परभव भव भवे ए, रूद्धि वृद्धि कल्याण ॥ ज्ञानविमल गुणमणि तणो, त्रिभुवन तिलक समान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा बे प्रारंभः ॥

॥ चैत्री पूनम दिन, शत्रुंजय गिरि अहिठाण ॥ पुंडरीक वर गणधर, तिहां पाम्या निर्वाण ॥ आदीश्वर केरा, शिष्य प्रथम जयकार ॥ केवल कमला वर, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १ ॥ चार जंबुद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरू धातकी खंडे, सुर नर सारे सेव ॥ अरू पुष्कर अर्धे, इणी परे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण सम, भवजल निधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मत्स्य तणा भय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशासन सान्निध्य, कारी

विघन विदारे ॥ समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरि सेवो, जेम पामो जवपार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ वंडु सदा शेत्रुंज तीर्थराजे, चूमामणि आदि जिणंद गाजे ॥ डुठ्ठ कम्मठ्ठ विरोध जांजे, मानुं शिवारोहण एह पाजे ॥ १ ॥ देवाधिदेवा कृत देव सेवा, संजारीए ज्युं गज चित्त रेवा ॥ सव्वेवित्ते थुत्ति थुया महीया, अणागया संपइ जे अईया ॥ २ ॥ जे मोहना योध वमा कहाया, चत्तारि डुठ्ठा कसिणा कसाया ॥ ते जीतीए आगम चक्खु पामी, संसार पारुत्तरणाय धामी ॥ ३ ॥ चक्केसरी गोमुह देह जुत्ता, रक्षा करी सेवय जाव पत्ता ॥ दीयो सया निम्मल नाण लछी, होवे पसन्ना शिव सिद्धि लछी ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंजः ॥

॥ शेत्रुंजे जइए लालन ॥ ए देशी ॥ सिद्धगिरि ध्यावो जविका, सिद्धगिरि ध्यावो ॥ घरे बेठां पण बहु फल पावो, जविका बहु फल पावो ॥ १ ॥ नंदीश्वर यात्राए जे फल होवे ॥ तेहथी बमणुं फल ते कुंमल-

किन्नर नमे तुज, नगतिशुं पाया ॥ पापपंक फेरे समउ, प्रज्ञु त्रिज्ञुवन राया ॥ ज्ञानविमल प्रज्ञु तुम तणे, चरणे शरणे राखो ॥ कर जोमीने विनवे, मुक्तिमार्ग मुज दाखो ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडा बे लिख्यते ॥

॥ रुषन्न देव नमुं गुण निर्मला, दूध मांहे जेली सीतोपला ॥ विमल शैल तणा शणगार छे, नव नव मूऊ चित्ते ते रुचे ॥ १ ॥ जेह अनंत थया जन केवली, जेह हशे विचरंता ते वली ॥ जेह असासय सासय त्रिहुं जगे, जिन पमिमा पणमुं निछु ऊगमगे ॥ २ ॥ सरस आगम अक्षर महोदधि, त्रिपदी गंग तरंग करी वधी ॥ नविक देह सदा पावन करे, डुरित ताप रजो मल अपहरे ॥ ३ ॥ जिनशासन नासन कारिका, सुर सुरी जिन आणा धारिका ॥ ज्ञानविमल प्रज्ञुता दीए दंपती, डुरित डुष्ट तणा नय ऊंपती ॥ ४ ॥ इति प्रथम थोय ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ श्लोक ॥ मालीनी वृत्तं ॥ सवि मली करी आवो, नावना नव्य नावो ॥ विमलगिरि वधावो, मो-

तीया थाल लावो ॥ जो होय शिव जावो, चित्त तो वान जावो ॥ न होय डुशमन दावो, आदि पूजा रचावो ॥ १ ॥ शुन्न केशर घोली, मांहे कर्पूर न्नोली ॥ पहेरी सित पटोली, वासीए गंध धूली ॥ न्नरी पुष्कर नोली, टालीए डुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीए न्नाव न्नोली ॥ २ ॥ शुन्न अंग अग्यार, तेम उपांग वार ॥ वली मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोग द्धार ॥ दश पयन उदार, छेद षट् वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, न्नाष्य निर्युक्ति सार ॥ ३ ॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टि सूरींदा ॥ करे परमानंदा, टालता डुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरींदा, साम्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरींदा, ध्यानथी नित्य न्नद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ आज सखी संखेसरो ॥ ए देशी ॥ ए गिरुउं गिरि राजीउं, प्रणमीजे न्नावे ॥ न्नव न्नव संचित आकरां, पातकमां जावे ॥ वज्रलेप सम जे होवे, ते पण तेम दूरे ॥ एहतुं दर्शन कीजीए, धरी न्नक्ति पडूरे ॥ २ ॥ चंद्रशेखर राजा थयो, निज न्नगिनी लुब्धो ॥ ते पण ए गिरि सेवतां, क्षण मांहे सीधो

॥ अथ थोय जोडा बे लिख्यते ॥

॥ जिहां ठंगणयोतेर कोमा कोमी, तेम पंचाशी लख वली जोमी, चुमालीश सहस कोमी ॥ समवसरया जिहां एती वार, पूर्व नवाणुं एम प्रकार, नाभि नरिंद मल्हार ॥ १ ॥ सहसकूट अष्टापद सार, जिन चोवीश तणा गणधार, पगलाना विस्तार॥ वली जिनबिंब तणो नहीं पार, देहरी थंभे बहु आकार, वंडुं विमलगिरि सार ॥ २ ॥ एंशी सीत्तेर साठ पंचास,बार जोयण माने जस विस्तार, इग डुती चउ पण आर॥ मान कह्युं एहनुं निरधार, महिमा एहनो अगम अपार, आगम मांहे उदार ॥ ३ ॥ चैत्रीपूनम दिन शुभ भावे, समकितदृष्टि सुर नर आवे, पूजा विविध रचावे ॥ ज्ञानविमल सूरि भावना भावे, डुरगति दोहग दूर गमावे, बोधबीज जस पावे ॥ इति ॥

॥ अथ द्वितीय थोय जोडो ॥

॥ शत्रुंजय साहेब प्रथम जिणंद,नाभि भूप कुल कमल जिणंद, मरुदेवीनो नंद ॥ जस मुख सोहे पूचंद, सेवा सारे इंद्र नरिंद, जन्मले डुःख दंद

॥ वांछित पूरण सुरतरु कंद, लंछन जेहने सुरनि नं-
द, फेडे नव नय फंद ॥ प्रणमे ज्ञानविमल सूरींद,
जेहना अहोनिश पद अरविंद, नामे परमानंद ॥ १॥
श्री सीमंधर जिनवर राजे, महाविदेहे वार समा-
जे, नावे इम नविका जे ॥ सिद्धक्षेत्र नामे गिरि रा-
जे, एहज नरत मांहे ए ढाजे, नवजल तरण जहा-
जे ॥ अनंत तीर्थंकर वाणी गाजे, नवि मन केरा सं-
शय नांजे, सेवक जनने निवाजे ॥ वाजे ताल कं-
साल पवाजे, चैत्री महोत्सव अधिक दीवाजे, सुर
नर सजी बहु साजे ॥२॥ राग रूप विष खीलण मं-
त, नांजी नव नय नावठ भ्रांत, टाले दुःख दुरंत ॥
सुख संपत्ति होये जे समरंत, ध्याये अहोनिश सघ-
ला संत, गाये गुण महंत ॥ शिवसुंदरी वश कर-
वा तंत, पाप ताप पीलण ए जंत, सुणीए ते सिद्धांत
॥ आणी मोटी मननी खांत, नवियण ध्यावो एक-
ण चित्त, रान वेलाउल हुंत ॥ ३ ॥ आदि जिनेश्व-
र पद अनुसरती, चतुरंगुल उंची रहे धरती, दुरित
उपद्रव हरती ॥ सरस सुधारस वयण करंती, ज्ञान-
विमल गिरि सानिध्य करंती, दुशमन दुष्ट दलंती ॥
दाडिम पक्क कलीसम दंती, ज्योतिगुण इहां राजी पं-

ती, समकित बीज वपंती॥चक्केसरी सुरसुंदरी हुंती, चैत्री पूनम दिने आवंती, जय जयकार ज्ञणंती॥४॥इति॥

॥ अथ स्तवन प्रारंज्ञः ॥

॥ तीरथ वारु ए तीरथ वारु, सांज्ञलजो सो तारु रे ॥ ज्ञवजलनिधि तरवा ज्ञविजनने, प्रवहणपरे ए तारु रे ॥ १ ॥ ती०॥ ए तीरथनो महिमा मोटो, नवि माने ते कारु रे ॥ पार न पामे कहेतां कोइ, पण कहीये मति सारु रे ॥ ती० ॥ २ ॥ साधु अनंता इहां कणे सीधा, अंत कर्मना कीधा रे ॥ अनुज्ञव अमृत रस जिणे पीधा, अज्ञयदान जगे दीधां रे ॥ ती० ॥ ३ ॥ नमि विनमि विद्याधर नायक, द्रविड वारिखिल्ल जाणो रे ॥ थावच्चा शुक सेलग पंथग, पांडव पांच वखाणो रे ॥ ती० ॥ ४ ॥ राम मुनि ने नारद मुनिवर, शांब प्रद्युम्न कुमार रे ॥ महानंद पद पाम्या तेहना, मुनिवर बहु परिवारो रे ॥ ती० ॥ ॥ ५ ॥ तेह ज्ञणी सिद्धक्षेत्र एहनुं, नाम थयुं निरधार रे ॥ शत्रुंजय कल्पे माहात्म्ये, एहनो बहु अधिकार रे ॥ ती० ॥ ६ ॥ तीरथ नायक वांछित दायक, विमलाचलने पावे रे ॥ ज्ञानविमल सूरि कहे ते ज्ञविने, धर्म शर्म घरे आवे रे॥ ती० ॥ ७ ॥ इति स्त-

वनं समाप्तं ॥ ए देव वांदवाना पांचमा जोमानो विधि थयो. इहां पठवाडेथी चैत्यवंदन नाष्य कहेवुं ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमल सूरि कृत अगीयार गणधरना देववंदन प्रारंज्ञः ॥

॥ एनो विधि आवी रीते के प्रथम थापना थापी इरियावही पमिक्कमीने चैत्यवंदन कहेवुं ते लखे ठेः–

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंज्ञः ॥

॥ विरुद धरी सर्वज्ञनुं, जिन पासे आवे ॥ मधुर वचने वीरजी, गौतम बोलावे ॥ पंच नूत मांहे थकी, ए उपजे विणसे ॥ वेद अरथ विपरीतथी, कहो किम नव तरशे ॥ दान दया दम त्रिहुं पदे ए, जाणे तेहज जीव ॥ ज्ञानविमल घन आतमा, सुख चेतना सदैव ॥ इति चैत्यवंदन समाप्त ॥ इहां जं किंचि नाम तिष्ठं, नमुथ्थुणं०, अरिहंत चेइयाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करी नमो अरिहंताणं संपूर्ण कहीने पठी थोय कहीए ते लखीए ठीए॥

॥ अथ थोय लिख्यते ॥

॥ कनक तिलक नाले ॥ ए देशी ॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गुरु गणपति गाउं, गौतम ध्यान ध्याउं ॥ स-

वि सुकृत सवाउं, विश्वमां पूज्य थाउं ॥ जग जीत वजाउं, कर्मने पार जाउं ॥ नव निधि रिद्धि पाउं, शुद्ध समकित ठाउं ॥ १ ॥ सवि जिनवर केरा, साधु मांहे वडेरा ॥ डुगवन अधिकेरा, चउद सय सुभलेरा ॥ टाल्या डुरित अंधेरा, वंदीये ते सवेरा ॥ गणधर गुण घेरा, नाम छे तेह मेरा ॥ २ ॥ सवि संशय कापे, जैन चारित्र छापे ॥ तव त्रिपदी आपे, शिष्य सौजाग्य व्यापे ॥ गणधर पद थापे, द्वादशांगी समापे ॥ जवडुःख न संतापे, दासने इष्ट आपे ॥ ॥ ३ ॥ करे जिनवर सेवा, जेह इंद्रादि देवा ॥ समकित गुण मेवा, आपता नित्यमेवा ॥ जवजलनिधि तरेवा, नौ समी तीर्थसेवा ॥ ज्ञानविमल लहेवा, लील लच्छी वरेवा ॥ ४ ॥ इति थोय ॥ इहां नमुत्थुणं० जावंति अने नमो० कहीने स्तवन कहीए ते लखे छे ॥

॥ अथ गौतम स्तवन प्रारंजः ॥

॥ आज सखी संखेसरो, में नयणे निरख्यो ॥ ए देशी ॥ सकल समीहित पूरणो, गुरु गौतम स्वामी ॥ इंद्रजूति नामे जलो, प्रणमुं शिर नामी ॥ हा० ॥ १ ॥ मगध देशमां उपन्यो, गोबर इति गाम ॥ वसुजूति द्विज पृथिवी तणो, नंदन गुणधाम ॥ २ ॥ ज्ये-

ष्ठा नक्षत्रे जएयो, सोवन वन देह ॥ वरस पंचास घरे वसी, धर्यो वीरशुं नेह ॥ ३ ॥ त्रीश वरस छद्मस्थनो, पर्याय आराधे ॥ बार वरस लगे केवली, पछी शिवसुख साधे ॥ ४ ॥ वीर मोक्ष पहोता पछी, लह्या केवल मुक्ते ॥ राजगृहे ते पामीया,सवि लब्धिनी शक्ते ॥ ५ ॥ वाणुं वरस सवि आउखुं, थया मास संलेपे ॥ जेहने शिर निज कर दीये, ते केवल देखे ॥ ६ ॥ पंच सया मुनिनो धणी, सवि श्रुतनो दरियो ॥ ज्ञानविमल गुणश्री जिणे, तार्यो निज परियो ॥ ७ ॥ इति गौतम स्तवनं ॥

अहींयां जयवीयराय संपूर्ण कहीए, पछी गौतमस्वामी सर्वज्ञाय नमः ए पाठ अगीयार वार गणीए. पछी अगीयार नवकार गणीए. पछी उना थइने श्रीगोतमस्वामी गणधर आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं एम कही अगीयार लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक लोगस्स प्रगट कहीए. ए श्री प्रथम गणधर देवने वांदवानो विधि संपूर्ण थयो. एज रीते बीजा दश गणधरोने पण वांदवा, परंतु प्रत्येक गणधरनुं नाम, नमस्कार, स्तुति अने स्तवन ए चार जुदां कहेवां. तेमां पण वली चार थोयो मांहेली पा-

ढली त्रण थोयो तो तेहीज कहीए अने एक प्रथम थोयमां गणधर देवनुं नाम फेरवाय छे, माटे ते प्रत्येक गणधरनी जूदी करेली छे, ए रीते सर्वत्र विधि जाणवो.

॥ अथ द्वितीय श्रीअग्निभूतिजी देववंदनविधिः ।

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ कर्म तणो संशय धरी, जिन चरणे आवे ॥ अग्निभूति नामे करी, तव ते बोलावे ॥ एक सुखी एक छे दुःखी, एक किंकर स्वामी ॥ पुरुषोत्तम एके करी, केम शक्ति पामी ॥ कर्म तणा परभावथी ए, सकल जगत मंमाण ॥ ज्ञानविमलथी जाणीए, वेदारथ सुप्रमाण ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारंभः ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ अग्निभूति सोहावे, जेह बीजो कहावे ॥ गणधर पद पावे, बंधुने पक्ष आवे ॥ मन संशय जावे, वीरना शिष्य थावे ॥ सुर नर गुण गावे, पुष्पवृष्टि वधावे ॥ १ ॥ ए प्रथम थोय कहीने पछी फरी प्रथम गणधरना देववंदनमां जे "सवि जिनवर केरा" ए त्रण थोय कहेली छे ते कहीए ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ ढाल ॥ ललनानी देशी ॥ बीजो गणधर गाइए, अग्निभूति इति नाम ॥ ललना ॥ वसुभूति द्विज पृथिवी मायनो, नंदन गुण अभिराम ॥ ल०॥ ॥ १ ॥ बी० ॥ गोबर गाम मगध देशे, गौतम गोत्र रतन्न ॥ ल० ॥ कृत्तिका नक्षत्रे जनमीयो, संशय कर्मनो मर्म ॥ ल० ॥ २ ॥ वरस बेंतालीश घर वस्या, व्रत पर्याये बार ॥ ल० ॥ सोल वरस केवलपणे, पंच सया परिवार ॥ ल० ॥ ३ ॥ वी० ॥ चिहुंत्तेर वरसनुं आउखुं, पाली पाम्या सिद्धि ॥ ल० ॥ मास भक्त संलेषना, पूर्ण ऋद्धि समृद्धि ॥ ल० ॥ ४ ॥ ॥ बी० ॥ वीर थकां शिव पामीया,राजगृही सुखकार ॥ ल० ॥ कंचन कांति झलहले, ज्ञानविमल गुणधार ॥ ल० ॥ ५ ॥ बी०॥ इति श्रीअग्निभूति स्तवनं संपूर्णम्॥

॥अथ तृतीय श्रीवायुभूतिजी देववंदन विधिः॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ वायुभूति त्रीजो कह्यो, तस संशय एह ॥ जीव शरीर बेहु एक छे, पण भिन्न न देह ॥ १ ॥ ब्रह्मज्ञान तपे करी, ए आतम लहीये ॥ कर्म शरीर-

थी वेगलो, ए वेद सद्दहीये ॥ २ ॥ ज्ञानविमल गुण धणी ए, जडमां केम होय एक ॥ वीर वयणथी ते लह्यो, आणी हृदय विवेक ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ वायुभूति वली भाइ, जेह त्रीजो सहाइ ॥ जिणे त्रिपदी पाइ, जीत भंभा वजाइ ॥ जिनपद अनुयायी, विश्वमां कीर्ति गाइ ॥ ज्ञानविमल भलाइ, जेहने नामे पाइ ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति थोय ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ महाविदेह क्षेत्र सोहामणुं ॥ ए देशी ॥ त्रीजो गणपति गाइए, वसुभूति पृथिवी नंद लाल रे ॥ स्वाती नक्षत्रे जाइउं, गौतम गोत्र अमंद ॥ ला० ॥ १ ॥ त्री० ॥ मगध देश गाम गोबरे, सगा सहोदर तीन ॥ ला० ॥ वरस बेंतालीश घरे वस्या, पछे जिन चरणे लीन ॥ ला० ॥ २ ॥ त्री० ॥ छद्मस्थ दश वरसनी, केवली वरस अढार ॥ ला० ॥ कंचन वन सवि आउखुं, सीत्तेर वरस उदार ॥ ला० ॥ ३ ॥ त्री० ॥ राजगृहीए शिव पामीया, मास भगत सुख-

कार ॥ ला० ॥ पांचसें परिकर साधतो, सवि श्रुतनो ज्ञंडार ॥ ला० ॥ ४ ॥ त्री० ॥ वीर छते थया अणसणी, लब्धि सिद्धि दातार ॥ ला० ॥ ज्ञानविमल गुण आगरु, वायुज्ञूति अणगार ॥ ला० ॥ ५ ॥ त्री० ॥ इति वायुज्ञूति स्तवनम् ॥

॥ अथ चतुर्थ श्री व्यक्तजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ पंच ज्ञूतनो संशयी, चोथो गणि व्यक्त ॥ इंद्रजाल परे जग कह्यो, तो किम तस सक्त ॥ १ ॥ पृथिवी पाणी देवता, इम ज्ञूतनी सत्ता ॥ पण अध्यातम चिंतने, नहीं तेहनी ममता ॥ २ ॥ इम स्याद्वाद मते करीए, टाल्यो तस संदेह ॥ ज्ञानविमल जिन चरणशुं, धरतो अधिक सनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ चोथो गणधर व्यक्त, धर्म कर्म सुसक्त ॥ सुर नर जस ज्ञक्त, सेवता दिन नक्त ॥ जिनपद अनुरक्त, मूढता विप्र मुक्त ॥ कृतकरम विमुक्त, ज्ञान लीला प्रसक्त ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" ए त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कुंबखमानी देशी ॥ चोथो गणधर चोपशुं रे, वंडुं चित्त धरी भाव ॥ सलूणे साजनां ॥ कोल्लाग सन्निवेशे थयो रे, पाम्यो भवजल नाव ॥ स० ॥ १ ॥ धन मित्र द्विज वारुणी प्रिया रे, नंदन दीये आणंद ॥ स० ॥ श्रवण नक्षत्रे जनमीयो रे, भारद्वाज गोत्र अमंद ॥ स० ॥ २ ॥ वरस पचास घरे रह्या रे, बार छद्मस्थ पर्याय ॥ स० ॥ वरस अढारह केवली रे, वरस एंशी सवि आय ॥ स० ॥ ३ ॥ पांचसें शिष्य कंचनवने रे, संपूरण श्रुत लब्धि ॥ स० ॥ मास भगत राजगृहे रे, वीर थके लह्या सिद्धि ॥ स० ॥ ४ ॥ पढम संघयण संस्थान छे रे, वीर तणो ए शिष्य ॥ स० ॥ ज्ञानविमल तेजे करी रे, दीपे अधिक जगीश ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ पंचम श्री सुधर्माजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सोहम स्वामीने मने, छे संशय एहवो ॥ जे इहां होये जेहवो, परभवे ते तेहवो ॥ १ ॥ शालि थकी शालि नीपजे, पण भिन्न न थाय ॥ सुणी एह-

वो निश्चय नथी, इम कहे जिनराय ॥ २ ॥ गोमयथी विंछी होवे ए, एम विसदृश पण होय ॥ ज्ञानविमल मतिशुं करी, वेदारथ शुद्ध जोय ॥ ३ ॥ इति सुधर्माजी चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गणधर अभिराम, सोहम स्वामी नाम ॥ जित दुर्जय काम, विश्वमां वृद्धि माम ॥ दुप्पसह गणि जाम, तिहां लगे पट्ट ठाम ॥ बहु दोलत दाम, ज्ञानविज्ञान धाम ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ देशी नायकानी ॥ सोहम गणधर पांचमा रे लाल, अग्निवेसायन गोत्र ॥ सुखकारी रे ॥ कोल्लाग सन्निवेशे थयो रे लाल, भद्दिला धम्मिल पुत्र ॥ सु० ॥ १ ॥ सो० ॥ उत्तराफाल्गुनीए जणयो रे लाल, पंच सया परिवार ॥ सु० ॥ वरस पचास घरे रह्या रे लाल, व्रत बेंतालीश सार ॥ सु० ॥ २ ॥ सो० ॥ आठ वरस केवलीपणे रे लाल, एक शत वरसनुं आय ॥ सु० ॥ वाधे पट्ट परंपरा रे लाल, आज लगे

जस थाय ॥ यावत् दुप्पसह राय ॥ सु० ॥ ३ ॥ सो० ॥ संपूरण श्रुतनो धणी रे लाल, सर्व लब्धि भंडार ॥ सु० ॥ वीश वरस जिनथी पछी रे लाल, शिव पाम्या जयकार ॥ सु० ॥ ४ ॥ सो० ॥ उदय अधिक कंचनवने रे लाल, शत शाखा विस्तार ॥ सु० ॥ नाम थकी नव निधि लहे रे लाल, ज्ञानविमल गणधार ॥ सु० ॥ ५ ॥ सो० ॥ इति ॥

॥ अथ षष्ठ श्री मंडितजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ छठो मंडित बंभणो, बंध मोक्ष न माने ॥ व्यापक विगुण जे आतमा, ते किम रहे छाने ॥ १ ॥ पण सावरण थकी नहे, केवल चिद्रूप ॥ तेह निरावरण थइ, होये ज्ञान सरूप ॥ २ ॥ तरणि किरण जेम वादले ए, होय निस्तेज सतेज ॥ ज्ञान गुणे संशय हरी, वीर चरणे करे हेज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ गणि मंडित वारु, जेह छठो करारु भवजलनिधि तारु, दीसतो जे दिदारु ॥ सकल लबधि धारु, कामगद तीव्र दारु ॥ दुशमन

त्तय वारु, तेहने ध्यान सारु ॥१॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंत्नः ॥

॥ जीहो जाणुं अवधि प्रयुंजीने ॥ ए देशी ॥

जीहो छठो मंमित गणधरु, जीहो मोरी सान्निवेश गाम ॥ जीहो विजया माता जेहनी, जीहो धनदेव जनकनुं नाम ॥१॥ त्तविक जन वंदो गणधर देव ॥ जीहो वीर तणी सेवा करे, जीहो त्ताव धरी नित्यमेव ॥ त्त० ॥ ए आंकणी ॥ जीहो जनम नक्षत्र जेहनुं मघा, जीहो वरस त्रेपन घरवास ॥ जीहो चोद वरस छद्मस्थमां, जीहो केवल सोलह वास ॥ त्त० ॥ २ ॥ जीहो त्र्याशी वरस सवि आउखुं, जीहो सयल लब्धि आवास ॥ जीहो संपूरण श्रुतनो धणी, जीहो कंचन वरणे खास ॥ त्त० ॥ ३ ॥ जीहो मास तणी संलेषणा, जीहो आराधी अति सार ॥ जीहो वीर छते शिव पामीया, जीहो उठ सया परिवार ॥त्त०॥ ४ ॥ जीहो वशिष्ठ गोत्र सोहामणुं, जीहो नाम थकी सुख थाय ॥ जीहो ज्ञानविमल गणधर तणा, जीहो वाधे सुजश सवाय ॥ त्त० ॥ ५ ॥ इति षष्ट गणधर स्तवनं ॥

॥ अथ सप्तम मौर्यपुत्र देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ सातमो मौर्य पुत्र जे, कहे देव न दीसे ॥ वेद पदे जे भाखीया, तिहां मन नवि हीसे ॥ १ ॥ जज्ञ करतो लहे सर्ग, ए वेदनी वाणी ॥ लोकपाले इंद्रादिक, सत्ता किम जाणी ॥ २ ॥ इम संदेह निराकरी ए, वीर वयणथी तेह ॥ ज्ञानविमल जिनने कहे, हुं तुम पगनी खेह ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ मौर्य पुत्र गणीश, सातमो वीर शिष्य ॥ नहीं राग ने रीश, जागती छे जगीश ॥ नमे सुर नर ईश, अंग लक्षण छतीश ॥ ज्ञानविमल सूरीश, संथुणे राति दिस ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कर्म न छूटे रे प्राणीया ॥ ए देशी ॥ मौर्यपुत्र गणि सातमो, मौर्य सन्निवेश गाम ॥ देवी विजया रे माऊली, मौरीय जनकनुं नाम ॥ १ ॥ वंदो गणगुणनीलो ॥ ए आंकणी ॥ रोहिणी नक्षत्र जे-

हनुं, जनमे चंदशुं जोग ॥ पांसठ वरस घरे रह्या, दश चउ छउमठे जोग ॥ वं० ॥ २ ॥ सोल वरस लगे केवली, वरस पंचाणुं रे आय ॥ छठ सय मुनिवर जेहने, परिवारे सुखदाय ॥ वं० ॥ ३ ॥ संपूरण श्रुतनो धणी, कंचन कोमल गात्र ॥ लब्धि सयलना रे आगरु, काश्यप गोत्र विख्यात ॥ वं० ॥ ४ ॥ वीर छते शिवसुख लह्या, मास संलेषण लीध ॥ राजगृहे गुणना धणी, ज्ञानविमल सुख दीध ॥ वं० ॥ ॥ ५ ॥ इति सप्तम गणधर स्तवनम् ॥

॥ अथ अष्टम श्रीअकंपितजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन प्रारंजः ॥

॥ अकंपित द्विज आठमो, संशय छे तेहने ॥ नारक होय परलोकमां, ए मिथ्या जनने ॥ १ ॥ जे द्विज शूद्राशन करे, तस नारक सत्ता ॥ दाखी वेदे नवि कहे, ए तुज उन्मत्ता ॥ २ ॥ मेरु परे शाश्वत कहे ए, प्रायिक एहवी जाखी ॥ ते संशय दूरे कर्यो, ज्ञानविमल जिन साखी ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ अकंपित नमीजे, आठमो जे

कहीजे ॥ तस ध्यान धरीजे,पाप संताप छीजे ॥ समकित सुख दीजे,प्रह समे नाम लीजे ॥ दुशमन सवि खीजे, ज्ञान लीला लहीजे ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा " इत्यादिक त्रण थोय कहेवी ॥

॥ अथ स्तवन लिख्यते ॥

॥ वाडी फूली अति नली मन नमरा रे ॥ ए देशी ॥ अकंपित नामे आठमो ॥ नवि वंदो रे ॥ गणधर गुणनी खाण ॥ सदा आणंदो रे ॥ मिथिला नगरी दीपती ॥ न० ॥ गोतम गोत्र प्रधान ॥ स० ॥ १ ॥ देव नामे जेहनो पिता ॥ न० ॥ जयंती जस मात ॥ स० ॥ उत्तराषाढाए जएया ॥ न० ॥ चातुर्वेदी कहाय ॥ स० ॥ २ ॥ वरस अमतालीश घर रह्या ॥ न० ॥ छद्मस्थे नव वास ॥ स० ॥ एकवीश वरस लगे केवली ॥ न० ॥ वीर चरणकज वास ॥ स० ॥ ३ ॥ वरस अठ्योतेर आउखुं ॥ न० ॥ त्रण सय मुनि परिवार ॥ स० ॥ संपूरण श्रुत केवली ॥ न० ॥ लब्धि तणा नंमार ॥ स० ॥ ४ ॥ कंचन वन मास अणसणी ॥ न० ॥ वीर छते गुणगेह ॥ स० ॥ राजगृहे शिव पामीया ॥ न० ॥ ज्ञानगुणे नव मेह ॥ स० ॥ ५ ॥ इति अष्टम गणधर स्तवनं ॥

॥ अथ नवम श्री अचलभ्रातजी देववंदन ॥

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ अचलभ्रातने मन वश्यो, संशय एक खोटो ॥ पुण्य पाप नवि देखीये, ए अचरिज मोटो ॥ १ ॥ पण प्रत्यक्ष देखीए, सुख दुःख घणेरां ॥ बीजानी परे दाखीयां, वेदपदे वहोत्तरां ॥ २ ॥ समजावीने शिष्य कर्यो ए, वीरे आणीने नेह ॥ ज्ञानविमल पाम्या पछी, गुण प्रगट्या तस देह ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

मालिनी वृत्तम् ॥ नवमो अचलभ्रात, विश्वमां जे विख्यात ॥ सुत नंदा मात, धर्म कुंदावदात ॥ कृत-संशय पात, संयमे पारीजात ॥ दलित दुरित व्रात, ध्यानथी सुखशात ॥ १ ॥ तथा " सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोय कहेवी॥ इति थुइ संपूर्ण ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ नमो रे नमो श्री शत्रुंजा गिरिवर ॥ ए देशी ॥ नवमो अचलभ्रात कहीजे, गणधर गिरुउं जाणो रे ॥ कोशला नगरीए उपनो, हारिय गोत्र वखाणो रे ॥ १ ॥ भाव धरीने भवियण वंदो ॥ ए आं-

थके शिव लहीया जी ॥ ज्ञानविमल चरणादिकन गुण, किणही न जाये कहीया जी ॥ ग० ॥ ५ ॥ इति।

॥ अथ एकादश श्री प्रभासजी देववंदन ।

॥ तत्र प्रथम चैत्यवंदन ॥

॥ एकादशम प्रभास नाम, संशय मन धारे। भव निर्वाण लहे नहीं, जीव इणे संसारे ॥ १ । अग्निहोत्र नित्ये करे, अजरामर पामे ॥ वेदारथ इम दाखवे, तस संशय वामे ॥ २ ॥ वीर चरणने रागीयो ए, तेह थयो ततकाल ॥ ज्ञानविमल जिन चरण तणी, आण वहे निज भाल ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ मालिनी वृत्तम् ॥ एकादश प्रभास, पूरतो विश्व आस ॥ सुर नर जस दास,वीर चरणे निवास ॥ जग सुजस सुवास, विस्तर्यो ज्युं वरास ॥ ज्ञान-विमल निवास, हुं जपुं नाम तास ॥ १ ॥ तथा "सवि जिनवर केरा" इत्यादि त्रण थोयो केहवी ॥ इति।

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ कनक कमल पगलां ठवे ए ॥ ए देशी ॥ गण-धर जे अग्यारमो ए, आशपूरण प्रभास ॥ नमो भवि

जावशुं ए ॥ कोडिन गोत्र छे जेहनुं ए, राजगृहे जस वास ॥ न० ॥ १ ॥ अतिजद्रा जस मावडी ए, वलजद्र नामे ताय ॥ न० ॥ पुष्य नक्षत्रे जन्मीया ए, घर घर उत्सव थाय ॥ न० ॥ २ ॥ सोल वरस घरमां वस्या ए, आठ वरस मुनिराय ॥ न० ॥ सोल वरस रह्या केवली ए, चालीश वरस सवि आय ॥ न० ॥ ३ ॥ त्रण शय मुनि परिकर जलो ए, संपूरण श्रुतधार ॥ न० ॥ लब्धिनिधान कंचन वने ए, करता जवि उपकार ॥ न० ॥ ४ ॥ वीर उते शिव पामीया ए, मास संलेषण जास ॥ न० ॥ ज्ञानविमल कीरति घणी ए, सुंदर जिम केलास ॥ न० ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ इति श्री एकादश गणधर देववंदनं संपूर्ण ॥ एटले गणधर एकादशी दिने देव वांदवानो विधि संपूर्ण थयो ॥

तथा प्रथम गणधरना देववंदनमां चार गाथानी चार थोय अने पछीना दश गणधरना देववंदनमां एकेक गाथानी एकेक थोय मलीने चौद गाथानुं मालिनी छंदे कमलबंध स्तवन पण थाय, तेमज अगीयार चैत्यवंदननुं पण स्तवन थाय एम पण लखेलुं छे. तथा वली उपर एक चैत्यवंदन कही सर्व गण-

संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? एम कही चैत्य-वंदन कहीए, ते लखीए छीए ॥

॥ अथ चैत्यवंदन प्रारंभः ॥

॥ दोहा ॥ श्री शंखेश्वर ईश्वरं, प्रणमी त्रिकरण योग ॥ देव नमन चउमासीए, करशुं विधि संयोग ॥ १ ॥ ऋषभाजित संभव तथा, अभिनंदन जिन-चंद ॥ सुमति पद्मप्रभ सातमा, स्वामी सुपास जिणंद ॥ २ ॥ चंद्रप्रभ सुविधि जिन, श्रीशीतल श्रेयांस ॥ वासुपूज्य विमल तथा, नंत धर्म वरवंश ॥ ३ ॥ शांति कुंथु अर प्रभु, मल्ली सुव्रत स्वाम ॥ नमि नेमीसर पास जिन, वर्द्धमान गुणधाम ॥ ४ ॥ वर्त्तमान जिन वंदतां ए, वंद्या देव त्रिकाल ॥ प्रभु शुभ गुण मुगता तणी, वीर रचे वरमाल ॥ ५ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ अहीं नमुत्थुणं कही अर्धा जय-वीयराय कहीए. पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ऋषभ जिन आराधनार्थं चैत्यवंदन करुं? एम कही चैत्यवंदन कहीए, ते लखीए छीए॥

॥ अथ ऋषभ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वार्थसिद्धे थकी, चवीया आदि जिणंद ॥

प्रथम राय वनिता वसे, मानवगण सुखकंद ॥ १ ॥ योनि नकुल जिणंदने, हायन एक हजार ॥ मौनातीते केवली, वरू हेठे निरधार ॥ २ ॥ उत्तरापाढा जनम ठे ए, धन राशि अरिहंत ॥ दश सहस परिवारशुं, वीर कहे शिव कंत ॥ ३ ॥ इति ॥ अहीं नमुत्थुणं कही पठी अरिहंत चेइयाणं करेमि काउस्सग्गं वंदणवत्तिआए कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहीए, ते लखीए ठीए ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्र्याशी लाख पूरव घरवासे, वसीया परिकर युक्ता जी ॥ जनम थकी पण देवतरु फल, क्षीरोदधि जल जोक्ता जी ॥ मइ सुअ ठही नाणे संयुत, नयण वयण कज चंदा जी ॥ चार सहसशुं दीक्षा शिक्षा, स्वामी ऋषभ जिणंदा जी ॥ १ ॥ अहीं लोगस्स० ॥ कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीए, पठी ॥ मनःपर्यव तव नाण उप्पन्नुं, संयत लिंग सहावा जी ॥ अढीय द्वीपमां सन्नी पंचेंद्रिय, जाणे मनोगत जावा जी ॥ द्रव्य अनंतां सूक्ष्म तीर्छा, अढारसें खित्त गाया जी ॥ पलिय असंखम जाग त्रिकालिक, द्रव्य

असंख्य परजाया जी ॥ २ ॥ अर्हीं पुख्करवरदी० ॥ कहीं एक नवकारनो काउस्सग्ग करीए ॥ ऋषन्न जिणेसर केवल पामी, रयण सिंहासण ठाया जी ॥ अनन्निलप्प अन्निलप्प अनंता, न्नाग अनंत उच्चराया जी ॥ तास अनंतमे न्नागे धारी, न्नाग अनंते सूत्र जी ॥ गणधर रचीया आगम पूजी, करीए जनम पवित्र जी ॥ ३ ॥ अर्हीं सिद्धाणं बुद्धाणं कही एक नवकारनो काउस्सग्ग करीए ॥ गोमुख जक्ष चक्केसरी देवी, समकित शुद्ध सोहावे जी ॥ आदि देवनी सेव करंती, शासन शोन्न चढावे जी ॥ श्रद्धा संयुत जे व्रत धारी, विघन तास निवारे जी ॥ श्री शुन्नवीर विजय प्रन्नु न्नगते, समरे नित्य सवारे जी ॥ ॥ ४ ॥ इति थोय ॥ अर्हीं नमुत्थुणं० ॥ जावंति चेइ० ॥ जावंत के० ॥ नमोऽर्हत् सिद्धा० ॥ कहीए ॥

॥ अथ स्तवन प्रारन्यते ॥

॥ कपूर होये अति उजलो रे ॥ ए देशी ॥ ज्ञान रयण रयणायरु रे, स्वामी ऋषन्न जिणंद ॥ उपकारी अरिहा प्रन्नु रे, लोक लोकोत्तरानंद रे ॥ न्नविया ॥ १ ॥ न्नावे न्नजो न्नगवंत ॥ महिमा अतुल रे ॥ न्न० ॥ न्ना० ॥ ए आंकणी ॥ तिग तिग

आकर सागरु रे, कोडा कोडि अढार ॥ युगला धर्म निवारीयो रे, धर्म प्रवर्तन हार रे ॥ ज० ॥ ॥ २ ॥ ज्ञानातिशये जव्यना रे, संशय छेदन हार ॥ देव नरा तिरि समजीया रे, वचनातिशय विचार रे ॥ ज० ॥ ३ ॥ चार घने मघवा स्तवे रे, पूजातिशय महंत ॥ पंच घने योजन टले रे, कष्ट ए तुर्य प्रसंत रे ॥ ज० ॥ ४ ॥ योगक्षेमंकर जिनवरु रे, उपशम गंगानीर ॥ प्रीति जक्तिपणे करी रे, नित्य नमे शुजवीर रे ॥ ज० ॥ ५ ॥ इति स्तवनं ॥ पठी जयवीयराय अर्धा कहेवा ॥ इति ॥

अहीं खमासमण० ॥ इछाकारेण० ॥ श्री अजितनाथ आराधनार्थ चैत्यवंदन करुं ॥

॥ अजितनाथ चैत्यवंदन प्रारंजः ॥

॥ आव्या विजय वैमानथी, नयरी अयोध्या ठाम ॥ मानवगण रिखरोहिणी, मुनिजनना विशराम ॥ १ ॥ अजितनाथ वृष राशिए, जनम्या जगदाधार ॥ योनि जुजंगम जयहरु, मौने वर्ष ते वार ॥ २ ॥ सत्त परण तरु हेठले ए. ज्ञान महोत्सव सार ॥ एक सहसशुं शिव वस्या.वीर धरे बहु प्यार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदनं ॥ पठी नमुथ्थुणं० ॥ अरिहंत चेइ० ॥

कही एक नवकारनो काउस्सग्ग पारी थोय कहेवी।

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ प्रह उठी वंदुं ॥ ए देशी ॥ जब गर्भे स्वामी पामी विजया नार ॥ जीते नित्य पीयुने, अक्ष क्रीडत हुशीयार ॥ तिणे नाम अजित छे, देशना अमृतधार ॥ महाजक्ष अजिता, वीर विघन अपहार ॥ १ ॥ ए थोय कही उन्ना थकां जयवीयराय अर्धा कहेवा ॥ इति अजित जिन स्तवनं ॥ ए रीते सर्व तीर्थंकरनां चैत्यवंदन, थोयो अने स्तवन कहेवां ॥ यावत् शाश्वता जिन सुधीनां पण केहेवां ॥

॥ अथ संभव जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम गेविज चवन छे, जनम्या मृगशिर मांहि ॥ देवगणे संभव जिना, नमीए नित्य उत्साहि ॥ १ ॥ सावछीपुरी राजीयो, मिथुन राशि सुखकार ॥ पन्नग योनि पामीया, योनि निवारणहार ॥ २ ॥ ॥ चउद वरस छद्मस्थमां ए, नाण शाल तरु सार ॥ सहस व्रतीशुं शिव वर्या, वीर जगतआधार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीए ॥ ए देशी ॥ संभव

स्वामी सेवीए, धन्य सज्जन दीहा ॥ जिन गुण माला गावतां, धन्य तेहनी जीहा ॥ वयण सुगंग तरंगमां, न्हाता शिवगेही ॥ त्रिमुख सुर दुरितारिका, श्रीवीर सनेही ॥ १ ॥ इति थोय समाप्त ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, अभिनंदन जिनचंद ॥ पुनर्वसुमां जनमीया, राशि मिथुन सुखकंद ॥ १ ॥ नयरी अयोध्यानो धणी, योनि वर मंजार ॥ उग्र विहारे तप तप्या, नूतल वरस अढार ॥ २ ॥ वली रायण पादप तले ए, विमल नाण गण देव ॥ मोक्ष सहस मुनिशुं गया, वीर करे नित्य सेव ॥३॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥

॥अपा पदम लंघनं॥ ए चाल ॥ अभिनंदन गुण मालिका, गावती अमरालिका ॥ कुमतिकी परजालिका, शिववधू वर मालिका ॥लगे ध्यानकी तालिका, आगमनी परनालिका ॥ ईश्वरी सुरबालिका, वीर नमे नित्य कालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमति जयंत विमानथी, रत्ना अयोध्या गाम ॥

राक्षसगण पंचम प्रभु, सिंह राशि गुणधाम ॥ १ ॥ मघा नक्षत्रे जनमीया, मूषक योनि जगदीश ॥ मोहराय संग्राममां, वरस गयां छवीश ॥ २ ॥ जीत्यो प्रियंगु तरु ए, सहस मुनि परिवार ॥ अविनाशी पदवी वर्या, वीर नमे सो वार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुभान्यभिनंदननंदिता ॥ ए देशी ॥ सुमति स्वर्ग दीये असुमंतने, ममत्व मोह नहीं भगवंतने ॥ प्रगट ज्ञान वरी शिव बालिका ॥ तुंबरु वीर नमे महाकालिका ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ ग्रैवेयक नवमे थकी, कौसंबी घरवास ॥ राक्षसगण नक्षतरु, चित्रा कन्या राश ॥ १ ॥ वृश्चिक योनि पद्मप्रभ, छद्मस्था षट् मास ॥ तरु छत्रौघे केवली, लोकालोक प्रकाश ॥ २ ॥ त्रण अधिक शत आठशुं ए, पाम्या अविचल धाम ॥ वीर कहे प्र माहरे, गुणश्रेणि विश्राम ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नंदीश्वर वर द्वीप संभारुं ॥ ए चाल ॥ पद्मप्र-

प्नु हत ठद्म अवस्था, शिव सद्मे सिद्धा अरुपस्था ॥ नाण ने दंसण दोय विलासी, वीर कुसुम श्यामा जिनुपासी ॥ १ ॥ इति पद्मप्रन्न स्तुति ॥

॥ अथ श्री सुपास जिन चैत्यवंदन ॥

॥ गेवीज ठठेथी चव्या, वाणारसीपुरी वास ॥ तुला विशाखा जन्मीया, तप तपीया नव मास ॥ ॥ १ ॥ गण राक्षस वृक योनिए, शोन्ने स्वामी सुपास ॥ सरिस तरु तले केवली, ज्ञेय अनंत विलास ॥ २ ॥ महानंद पदथी लही ए, पाम्या न्नवनो पार ॥ श्रीशुन्नवीर कहे प्रन्नु, पंच सया परिवार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥

॥ श्रावण सुदि दिन पंचमी ए ॥ ए देशी ॥ अष्ट महा प्रतिहारशुं ए, शोन्ने स्वामी सुपास तो ॥ महा न्नाग्य अरिहा प्रन्नु ए, सुर नर जेहना दास तो ॥ गुण अतिशय वरणव्या ए, आगम ग्रंथ मोझार तो ॥ मातंग शांता सुर सुरी ए, वीर विघन अपहार तो ॥ १ ॥ इति स्तुति ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रन्न चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रन्न चंद्रावती, पुरी चवीया वैजयंत ॥ अ-

नुराधाए जनमीया, वृश्चिक राशि महंत ॥ १ ॥ मृग-योनि गण देवनो, केवल विण त्रिक मास ॥ पाम्या नाग तरु तले, निर्मल नाण विलास ॥ २ ॥ परमानंद पद पामीया ए, वीर कहे निरधार ॥ साथे सलूणा शोभता, मुनिवर एक हजार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीये ॥ ए देशी ॥ चंद्रप्रभ मुखचंद्रमा, सखी जोवा जइए ॥ द्रव्य भाव प्रभु दरिसणे, निर्मलता थइए ॥ वाणी सुधारस वेल-डी, सुणीए ततखेव ॥ भजे भदंत भृकुटिका, वीरवि-जय ते देव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधिनाथ सुविधे नमुं, श्वान योनि सुखका-र ॥ आव्या आणत स्वर्गथी, काकंदी अवतार ॥ १ ॥ राक्षसगण गुणवंतने, धन राशि रिख मूल ॥ वरस चार छद्मस्थमां, कर्म शशक शार्दूल ॥ २ ॥ मल्ली तरु तले केवली ए, सहस मुनि संघात ॥ ब्रह्म महोदय पद वर्या, वीर नमे परभात ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि सेवा करंता देवा तजी विषयवासना ॥ शिवसुख दाता ज्ञाता त्राता हरे दुःख दासना ॥ नय गम जंगे रंगे चंगे वाणी जव हारिका ॥ अमर अतीते मोहातीते विरंच सुतारिका ॥ १ ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा स्वर्ग थकी चव्या, दशमा शीतलनाथ ॥ जद्दिलपुर धन राशि ए, मानवगण शिवसाथ ॥ ॥ १ ॥ वानर योनि जिणंदने, पूर्वाषाढा जात ॥ तिग वरसांतर केवली, प्रियंगु विख्यात ॥ २ ॥ संयमधर सहसे वस्या ए, निरुपम पद निर्वाण ॥ वीर कहे प्रजु ध्यानथी, जव जव कोम कल्याण ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ प्रह उठी वंदुं ॥ ए देशी ॥ शीतल प्रजु दर्शन, शीतल अंग उवंगे ॥ कल्याणक पंचे, प्राणी गण सुख संगे ॥ तो वचन सुणंतां, शीतल किम नहीं लोका ॥ शुजवीर ते ब्रह्मा, शासनदेवी अशोका ॥ १ ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युतथी प्रजु उतर्या, सिंहपुरे श्रेयांस ॥

योनि वानर देवगण, देव करे परशंस ॥ १ ॥ श्रवणे स्वामी जनमीया, मकर राशि ड्डगवास ॥ छद्मस्था तिड्डुक तले, केवल महिमा जास ॥ २ ॥ वाचंयम सहसे सहीए, नव संततिनो गेह ॥ श्री शुजवीरने सांइशुं, अविचल धर्मसनेह ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ श्री सीमंधर देव सुहंकर ॥ ए देशी ॥ श्री श्रेयांस सुहंकर पामी, इबे अवर कुण देवा जी ॥ कनक तरु सेवे कुण प्रजुने, बंमी सुर तरु सेवा जी ॥ पूर्वापर अविरोधी स्यात्पद, वाणी सुधारस वेली जी ॥ मानवी मणु ए सर सुपसाये, वीर हृदयमां फेली जी ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य जिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी प्रजु पांगस्या, चोंपे चंपा गाम ॥ शिवमारग जातां थकां, चंपा तरु विशराम ॥ १ ॥ अश्व योनि गण राक्षस, शतभिषा कुंज राशि ॥ पामल हेठे केवली, मौनपणे इग वासी ॥ २ ॥ षट् शत साथे शिव थया ए, वासुपूज्य जिनराज ॥ वीर कहे धन्य ते घमी, जब निरख्या महाराज ॥३॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ कनक तिलक जाले ॥ ए देशी ॥ विमल गुण अगारं, वासुपूज्यं सफारं, निहत विष विकारं, प्राप्त कैवल्य सारं ॥ वचन रस उदारं, मुक्ति तत्त्वे विचारं, वीर विघन निवारं, स्तौमि चंकी कुमारं ॥१॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम स्वर्ग थकी चवी, कंपितपुरमां वास ॥ उत्तर जाद्रपदे जनी, मानवगण मीन राशि ॥ १ ॥ योनि गग सुहंकरु, विमलनाथ जगवंत ॥ दोय वरस तप निर्जली, जंबू तले अरिहंत ॥ २ ॥ षट् सहस मुनि साथशुं ए, विमल विमल पद पाय ॥ श्री शुजवीरने सांइशुं, मलवानुं मन थाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ चोपाइनी चाल ॥ विमलनाथ विमल गुण वस्या, जिनपद जोगी जव विस्तस्या ॥ वाणी पांत्रीश गुण लक्षणी, उम्मुह सुर प्रवरा जक्षणी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ देवलोक दशमा थकी, गया अयोध्या ठाम ॥ हस्ति योनि अनंतने, देवगणे अजिराम ॥ १ ॥

रेवतीए जनम्या प्रभु, मीन राशि सुखकार ॥ त्रएय वरस छद्मस्थमां, नहीं प्रश्नादि उच्चार ॥ २ ॥ पींपल वृक्षे पामीया ए, केवल लक्ष्मी निदान ॥ सात सहसशुं शिव वस्या, वीर कहे बहुमान ॥ ३ ॥ इति

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥

॥ वसंततिलका वृत्तम् ॥ ज्ञानादिकाः गुणवरा निवसंत्यनंते, वज्री सुपर्वमहिते जिनपादपद्मे ॥ ग्रंथार्णवे मतिवराः प्रणतिस्म जक्त्या, पाताल चांकुशि सुरी शुजवीर दक्षाः ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ विजय विमान थकी चव्या, रत्नपुरे अवतार ॥ धर्मनाथ गण देवता, कर्क राशि मनोहार ॥ १ ॥ जनम्या पुष्य नक्षतरे, योनि छाग विचार ॥ दोय वरस छद्मस्थमां, विचर्या धर्म दयाल ॥ २ ॥ दधिपर्णाधो केवली, वीर वस्या बहु रिद्ध ॥ कर्म खपावीने हुवा, अड सय साथे सिद्ध ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारम्यते ॥

॥ शंखेश्वर पासजी पूजीए ॥ ए देशी ॥ सखी धर्म जिणेसर पूजीए, जिन पूजे मोहने धूजीए ॥

प्रभु वयण सुधारस पीजीए, किन्नर कंदर्प्पा रीजीए १

॥ अथ श्री शांति जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सर्वारथसिद्ध थकी, चवीया शांति जिनेश ॥ हस्तीनागपुर अवतर्या, योनि हस्ति विशेष ॥ १ ॥ मानवगण गुणवंतने, मेष राशि सुविलास ॥ नरपीए जनम्या प्रभु, छद्मस्था इग वास ॥ २ ॥ केवल नंदी तरु तले ए, पाम्या अंतर जाण ॥ वीर करमने क्षय करी, नव शतशुं निरवाण ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शांति जिनेसर समरीए ॥ ए देशी ॥ शांति सुहंकर साहिबो, संयम अवधारे ॥ सुमतिने घरे पारणुं, जवपार उतारे ॥ विचरंता अवनी तले, तप उग्र विहारे ॥ ज्ञान ध्यान एकतानथी, तिरयंचने तारे ॥ १ ॥ पास वीर वासुपूज्य ने, नेम मल्ली कुमारी ॥ राज्य विहूणा ए थया, आपे व्रतधारी ॥ शांतिनाथ प्रमुखा सवि, लही राज्य निवारी ॥ मल्ली नेम परण्या नहीं, बीजा घरबारी ॥ २ ॥ कनक कमल पगलां ठवे, जय शांति करीजे ॥ रयण सिंहासन बेसीने, भली देशना दीजे ॥ योगावंचक प्राणीया, फल लेता

रीझे ॥ पुष्करावर्तना मेघमां, मगसेल न जींजे ॥ ३ ॥ क्रोरू वदन शुकरारूढो, श्याम रूपे चार ॥ हाथ बीजोरुं कमल छे, दक्षिण कर सार ॥ जक्ष गरुरू वाम पाणीए, नकुलाक्ष वखाणे ॥ निर्वाणीनी वात तो, कवि वीर ते जाणे ॥ ४ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ राग पूर्वी ॥ क्षण क्षण सांभरो शांति सलूणा ॥ ध्यान भुवन जिनराज परूणा ॥ क्ष० ॥ शांति जिनंदको नाम अमीसें, उल्लसित होत हमारो भव पुना ॥ क्ष० ॥ भव चोगानमें फिरते पाए, छोरत में नहीं चरण प्रभुना ॥ क्ष० ॥ १ ॥ छील्लरमें रति कबहूं न पावे, जे झीले जल गंग यमुना ॥ क्ष०॥ तुम सम हम शिर नाथ न थाशे, कर्म अधूना हूना धूना ॥ क्ष० ॥ २ ॥ मोह लराइमें तेरी सहाइ, तो क्षणमें छिन्न छिन्न करुना ॥ क्ष० ॥ नाहे घटे प्रभु आना कूना, अचिरासुत पति मोक्ष वधूना ॥ क्ष० ॥ ३ ॥ उरकी पासमें आसन करतें, चार अनंत पसाय करुन्ना ॥ क्ष० ॥ क्युं कर मागत पास धत्तूरे, युगलिक याचक कल्पतरुना ॥ क्ष० ॥ ४ ॥ ध्यान खड्ग वर तेरे आसंगे, मोह मरे सारी भीक भरुना ॥ क्ष० ॥ ध्यान

अरूपी तो सोइ अरूपी, जक्के ध्यावत ताना तूना ॥ कु० ॥ ५ ॥ अनुजव रंग वध्यो उपयोगे, ध्यान सुपानमें काथा चूना ॥ कु० ॥ चिदानंद ऊकऊोल घटासें, श्री शुजवीरविजय-पम्पिुन्ना ॥ कु० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ लव सत्तम सुरजव तजी, गजपुर नयर निवास ॥ राक्षसगण कृत्तिका जनी, कुंथुनाथ वृष राशि ॥ १ ॥ सोल वरस छद्मस्थमां, जिनवर योनि छाग ॥ घातीकर्म घाते करी, तिलक तले वीतराग ॥ २ ॥ शैलेशी करणे करी ए, एक सहस परिवार ॥ शिवमंदिर सिधावतां, वीर घणुं हुशीयार ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ द्विजराज मुखी ॥ ए देशी ॥ वशी कुंथु व्रती तिलको जगति, महिमा महती नत इंद्रतती ॥ प्रतितागम ज्ञानगुणा विमला, शुजवीर मतां गभराव यला ॥ १ ॥ इति कुंथु स्तवन ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ छाण सवछ थकी चव्या, नागपुरे अरनाथ ॥ रेवती जन्म महोत्सवा, करता निर्जर नाथ ॥ १ ॥

जयकर योनि गजवरु, राशि मीन गण देव ॥ त्रणय
वरसमां थिर थइ, टाले मोहनी टेव ॥ २ ॥ पाम्या
अंब तरु तले ए, खायिक ज्ञावे नाण ॥ सहस मुनि-
वर साथशुं, वीर कहे निर्वाण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ त्वमशुज्ञान्यज्जिनंदन नंदिता ॥ ए देशी ॥ अ-
रविन्नू रवि नूतलद्योतकं, सुमनसा मनसार्चित
पंकजं ॥ जिनगिरा न गिरा परतारिणी, प्रणत
यक्षपति वीर धारिणी ॥ १ ॥ इति स्तुतिः ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ मल्ली जयंत विमानथी, मिथिला नयरी सार ॥
अश्विनी योनि जयंकरु, अश्विनीए अवतार ॥ १ ॥
सुरगण राशि मेष ठे, वंदित स्वर्गी लोक ॥ छद्मस्थ
अहोरातिनी, केवल वृक्ष अशोक ॥ २ ॥ समवस-
रणे बेसी करी ए, तीर्थ प्रवर्तन हार ॥ वीर अचल
सुखने वर्या, पंच सया परिवार ॥३॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नंदीश्वर वर द्वीप संज्ञालुं ॥ ए देशी ॥ मल्ली-
नाथ मुखचंद निहालुं, अरिहा प्रणमी पातक टालुं

॥ ज्ञानानंद विमल पुर सेर, धरण प्रिया शुभवीर कुवेर ॥ १ ॥ इति मल्ली स्तुति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत चैत्यवंदन ॥

॥ सुव्रत अपराजितथी, राजगृही रे ठाण ॥ वानर योनि राजती, सुंदर गण गिर्वाण ॥ १ ॥ श्रवण नखेतर जनमीया, सुरवर जय जयकार ॥ मकर राशि छद्मस्थमां, मौन मास अगीयार ॥ २ ॥ चंपक हेठे चांपीयां ए, जे घनघाती चार ॥ वीर वन्दो जगमां प्रभु, शिवपद एक हजार ॥ ३ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अहह मुदिरे ॥ ए देशी ॥ सुव्रत स्वामी आतमरामी, पूजो भवि मन रूली ॥ जिनगुण थुणीए पातक हणीए, भावस्तव सांकली ॥ वचने रहीए जूठ न कहीए, टले फल वंचको ॥ वीर जिणपासी नरदत्ता, वरुण जिनार्चको ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ दशमा प्राणत स्वर्गथी, आव्या श्री नमिनाथ ॥ मिथिला नयरी राजीयो, शिवपुर केरो साथ ॥ १ ॥ योनि अश्व अलंकरी, अश्विनी उदयो भाण ॥

होत बुराइ लाजडीयां ॥ र० ॥ प्रीतम प्यारे केह कर जानां, जे होत हम शिर बांकडीयां ॥ र० ॥ हाथसें हाथ मिलादे सांइ, फूल बिछावं सेजडीयां ॥ र० ॥ ३ ॥ प्रेमके प्याले बहुत मसाले, पीवत मधुरे सेलडीयां ॥ र० ॥ समुद्रविजय कुल तिलक नेमकुं, राजुल ऊरती आंखडीयां ॥ र० ॥ ४ ॥ राजुल छोर चले गिरनारे, नेम युगल केवल वरीया ॥ र० ॥ राजिमती पण दीक्षा लीनी, भावना रंगरसे चडीयां ॥ र० ॥ ५ ॥ केवल लइ करी मुगति सिधारे, दंपती मोहन वेलडीयां ॥ र० ॥ श्री शुभवीर अचल भइ जोडी, मोहराय शिर लाकडीयां ॥ र० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नयरी वाणारसीए थया, प्राणतथी परमेश ॥ योनि व्याघ्र सुहंकरी, राक्षसगण सुविशेष ॥ १ ॥ जन्म विशाखाए थयो, पार्श्व प्रभु महाराय ॥ तुला राशि छद्मस्थमां, चोराशी दिन जाय ॥ २ ॥ धवतरु पासे पामीयाए, खायिक डुग उपयोग ॥ मुनि तेत्रीशे शिव वस्या, वीर अक्षय सुख भोग ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारंभः ॥

॥ सुविधि सेवा ॥ ए देशी ॥ पास जिणंदा वामानंदा, जब गरन्ने फली ॥ सुपनां देखे अर्थ विशेषे, कहे मघवा मली ॥ जिनवर जाया सुर हुलराया, हुया रमणि प्रिये ॥ नेमि राजी चित्त विराजी, विलोकित व्रत लीए ॥ १ ॥ वीर एकाकी चार हजारे, दीक्षा धुर जिनपति, पास ने मल्लि त्रय शत साथे, बीजा सहस्से व्रती ॥ षट् शत साथे संयम धरता, वासुपूज्य जगधणी ॥ अनुपम लीला ज्ञान रसीला, देजो मुजने घणी ॥ २ ॥ जिनमुख दीठी वाणी मीठी, सुरतरु वेलमी ॥ डाख विहासे गइ वनवासे, पीले रस सेलमी ॥ साकरसेंती तरणा लेती, मुखे पशु चावती ॥ अमृत मीठुं स्वर्गे दीठुं, सुरवधू गावती ॥ ३ ॥ गज मुख दक्षो वामन यक्षो, मस्तके फणावली ॥ चार ते बांही कछप वाही, काया जस शामली ॥ चउ कर प्रौढा नागारूढा, देवी पद्मावती ॥ सोवन कांति प्रजु गुण गाती, वीर घरे आवती ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ जिनंदराय हे ॥ ए देशी ॥ आज शंखेश्वर जिन

भेटीए, भेटतां भवदुःख नासे ॥ साहेब मोरा रे ॥ जयो अश्वसेन कुल चंद्रमा, माता वामा सुत पासे ॥ सा० ॥ आ० ॥१॥ भक्तवत्सल जन भयहरु, हसतां हणीयां षट् हास्य ॥सा०॥ दानादिक पांचने दुहव्या, फरी नावे पासनी पास ॥ सा० ॥ आ० ॥ २ ॥ करी कामने कारमी कम कमी, मिथ्यात्वने न दीधुं मान ॥ सा० ॥ अविरतिने रति नहि एक घडी, अवगुणी अलगुं अज्ञान ॥ सा० ॥ आ० ॥ ३ ॥ निंदक निद्राने नासवी, मृतरागने रोग अपार ॥ सा० ॥ एक धक्के द्वेषने टालीयो, एम नाठा दोष अढार ॥ सा० ॥ आ० ॥ ४ ॥ वली मत्सर मोह ममत गयो, अरिहा निरिहा निरदोष ॥ सा० ॥ धरणेंद्र कमठ सुर बिहुं परे, तुस मात्र नहीं तोष रोष ॥ सा० ॥ आ० ॥ ५ ॥ अचरिज सुणजो एक तेणे समे, शत्रुने समकित दाय ॥ सा० ॥ चंदन पारस गुण अति घणा, अक्षर थोडे न कहाय ॥ सा० ॥ आ० ॥ ६ ॥ जागरण दिशा उपर चढ्या, उजागरणे वीतराग ॥ सा० ॥ आलंबन धरतां प्रभु तणो, प्रभुता सेवक सौभाग्य ॥ सा० ॥ आ० ॥ ७ ॥ उपादान कारण कारिय सिधे, असाधारण कारण नित्य ॥ सा० ॥ जो अपेक्षा

कारण नवि लहे, फलदायी कारण निमित्त ॥ सा० ॥ आ० ॥ ८ ॥ प्रनु नायक सायकता धरी, दायक नायक गंनीर ॥ सा० ॥ निज सेवक जाणी निवाजीए, तुम चरणे नमे शुनवीर ॥ सा० ॥ आ० ॥ ए ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान जिन चैत्यवंदन ॥

॥ ऊर्द्ध लोक दशमा थकी, कुंमपुरे मंमाण ॥ वृपन योनि चउवीशमा, वर्धमान जिननाण ॥ १ ॥ उत्तराफाल्गुनी उपना, मानवगण सुखदाय ॥ कन्या राशि उद्मस्थमां, बार वरस वही जाय ॥ २ ॥ शाल विशाल तरु तले ए, केवल निधि प्रगटाय ॥ वीर विरुद धरवा नणी, एकाकी शिव जाय ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥

॥ गोतम बोले ग्रंथ संनाली ॥ ए देशी ॥ वीर जगत्पति जन्मज थावे, नंदन निश्चित शिखर रहावे, आठ कुमारी गावे ॥ अरु गजदंता हेठे वसावे, रुचक गिरिथी उत्रीश जावे, द्वीप रुचक चउ नावे ॥ उप्पन दिगकुमरी हुलरावे, सूती करम करी निज घर पावे, शक्र सुघोपा वजावे ॥ सिंहनाद करी ज्योतिषी आवे, नवन व्यंतर शंख पमहे मिलावे, सुर-

गिरि जन्म मल्हावे ॥ १ ॥ ऋषन्न तेर शशि सात-कहीजे, शांतिनाथ न्नव चार सुणीजे, मुनिसुव्रत नव कीजे॥ नव नेमीश्वर नमन करीजे, पास प्रन्नुना दश समरीजे, वीर सत्तावीश लीजे॥ अजितादिक जिन शेष रहीजे, त्रण्य त्रण्य न्नव सघले ठवीजे, न्नव समकितथी गणीजे॥ जिन नाम वंध निकाचित कीजे, त्रीजे न्नव तप खंती धरीजे, जिनपद उदये सीऊे ॥ २ ॥ आचार आदे अंग अग्यार, उववाइ आदे उपांग ते बार, दश पयन्ना सार॥ ब छेद सूत्र विचित्र प्रकार, उपगारी मूल सूत्र ते चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ ए पीस्तालीश आगम सार, सुणतां लहीए तत्त्व उदार, वस्तु स्वन्नाव विचार ॥ विष-न्नुजंगिनी विष अपहार, ए समो मंत्र न को सं-सार, वीरशासन जयकार ॥ ३ ॥ नकुल बीजोरुं दोय कर जाली, मातंग सुर शाम कंती तेजाली, वाहन गज शुंढाली॥ सिंह उपर बेठी रढीयाली, सिद्धायिका देवी लटकाली, हरितान्ना चार न्नुजाली॥ पुस्तक अ-न्नया जिमणे जाली, मातुलिंग ने वीणा रसाली, वाम न्नुजा नहीं खाली॥ शुन्न गुरुगुण प्रन्नु ध्यान घटाली, न्नव नेहशुं देती ताली, वीरवचन टंकशाली॥ ४॥

॥ अथ स्तवन प्रारंजः ॥

॥ त्रिशलानंदन चंदन शीत, दर्शन अनुजव करीए नित्य ॥ स्वामी सेवीए ॥ तुम दरशनथी अलगा जेह, वलगा कर्म पिशाचने तेह ॥ स्वामी सेवीए ॥ १ ॥ हुं पण जमीयो आ संसार, दर्शन दीठा विण निरधार ॥ स्वा० ॥ अब तुम दर्शन दीठुं रत्न, निज घरमां रही करशुं यत्न ॥ स्वा० ॥ २ ॥ दर्शनथी जो दर्शन थाय, ते आणंद तो जगत न माय ॥ स्वा० ॥ जवज्रमणादिक दूरे जाय, जवथिति चिंतन अल्प ठराय ॥ स्वा० ॥ ३ ॥ तस लक्षण प्रगटे घट मांहि, वैशालिक प्रजु तुठो उठांहीं ॥ स्वा० ॥ अमृत लेश लहे एक वार, रोग नहीं फरी अंग मोझार ॥ स्वा० ॥ ॥ ४ ॥ दर्शन फरशन होवे तास, संवेदन दर्शननो नाश ॥ स्वा० ॥ पण जो जाय पलांडु पास, तो महमहके वास वरास ॥ स्वा० ॥ ५ ॥ देव कुदेवनी सेवा करंत, न लह्युं दर्शन श्री जगवंत ॥ स्वा० ॥ एक चित्त नहीं एकनी आश, पग पग ते डुनियाना दास ॥ स्वा० ॥ ६ ॥ वेश खाट परे क्षीण केइ घाट, तस मुख दर्शन दूरे दाट ॥ स्वा० ॥ लोक कहे धिग चित्त उच्चाट, घर घर जटके ते वारे वाट ॥ स्वा०

॥ ११ ॥ इति शाश्वतमुख्यविनोः स्तवनं, रचितं लब्धितं सुगुणैः प्रवरं ॥ परिरंजितदक्षसन्नानिकरं, कुरुतां शुनवीर सुखे सखरं ॥ न० ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयद्वय प्रारंनः ॥

॥ नंदी सरवर ॥ ए देशी ॥ नमोऽर्हत्० ॥ ऋषना-नन चंद्रानन जाणो, वारिषेण शाश्वत वर्द्धमानो ॥ पूरव पश्चिम उत्तर ठाणो, दक्षिण पमिमा नाग प्र-माणो ॥ १ ॥ एक लोगस्सनो काउस्सग्ग करी एक नवकार गणवो ॥ ऊर्ध्व लोके जिनबिंब घणेरां, नव-नपतिमां घर घर देहरां ॥ व्यंतरज्योतिषी त्रीठे अ-नेरां, चारे शाश्वत नाम नलेरां ॥ २ ॥ पुक्खर० ॥ न० ॥ नरतादिक जे क्षेत्र सुहावे, काल त्रिके जे अरिहा आवे ॥ चार नाम ए निश्चय थावे, अंग उवंगे वात जणावे ॥ ३ ॥ सिद्धाणं० ॥ काउ० ॥ न० ॥ १ ॥ नमोऽर्हत्० ॥ पंच कल्याणके हर्ष अधुरे, नंदीश्वर द्वीपे जइ पूरे ॥ हर्ष महोत्सव करत अ-ठाइ, देव देवी शुनवीरे वधाइ ॥ ४ ॥ पठी बेसी नमु-थ्थुणं कही जावंति० कहेवी ॥ नमोऽर्हत्०॥ कहेवुं॥

॥ अथ स्तवन प्रारंनः ॥

॥ राग फाग ॥ थोया गप्नय ॥ ए देशी ॥ सासय

पडिमा सुंदर, जिनघर केहशुं तेह ॥ चारण मुनिवर वंदी, जगवइ मांहे जेह ॥ ऊर्ध्व लोक चुलसी लख, सहस सत्ताणुं त्रेवीश ॥ सात कोडि लख बिहुत्तर, जवणे चैत्य गणीश ॥ १ ॥ जोइ वणेसु असंखा, कुंडले रुचके चार ॥ नंदीसर वर बावन, ए साठे चउ वार ॥ ति डुवारां शेप जिनघर, द्वार द्वार तिहां दीठ ॥ मुखमंडप रंगमंडप, सखरी मणिमय पीठ ॥ २ ॥ तस उपर वर थुज्ने, चिहुं दिशि पडिमा चार ॥ तदनंतर मणिपीठ, युगल वरते सुखकार ॥ वृक्ष अशोक धरमध्वज, वावी पुक्करिणी ज्यांही ॥ जवन जवन प्रति पडिमा, अष्टोत्तरशत मांही ॥ ३ ॥ पंच सया धनु मोटी, पडिमा लघु सात हाथ ॥ मणिपीठे देवछंदे, सिंहासन बेठा नाथ ॥ छत्र धरे एक चामर, धारी पडिमा दोय ॥ नाग जूआवली जरक, कुंडधरा दोय दोय ॥ ४ ॥ जोइस व्यंतर कल्प, निवासी जवण निकाय ॥ उपपाती अनिपेका, लंकारा व्यवसाय ॥ सना सुधर्मा पंचमी, मंडप पटके जुत्त ॥ प्रत्येके डुवारां, जिनवर जिन अद्भुत ॥ ५ ॥ जोइसादिक मांहि, थुज्न प्रत्येके वार ॥ प्रत्यके प्रतमा नति, करीये नित्य सवार ॥ थुज्न सनाशुं ग-

णतां, सासय पमिमा साठ ॥ चेइअ बिंब मिलंतां, त्रवणे असि सो पाठ ॥ ६ ॥ शत पचास वहुंत्तेर, योजन कहीये जेह ॥ लांबां पहोलां उंचां, अनुक्रमे मवियें तेह ॥ स्वर्ग नंदीश्वर कुंमल, रुचके त्रवन प्र- माण ॥ तीस कुलगिरि दश कुरु, मेरुवने असि आण ॥ ७ ॥ अयसी वखारे जिनघर, गजदंताए वीश ॥ मणुअ नगे इक्कुकारे, चार चार सुजगीश ॥ पूर्व विहित परिमाणथी, अर्द्ध प्रमाणे जाण ॥ तेहथी अर्द्ध प्रमाणे, नागादि परिमाण ॥ ८ ॥ तेथी व्यंतर अरधा, चालीश दिग्गज सार ॥ अयसी द्रहे कंचन गिरि, देहरां एक हजार ॥ सीत्तेर महानइ दीर्घ, वैताढ्ये एकसो सीत्तेर ॥ त्रणसें अयसी कुंडे, जिन- वचने नहीं फेर ॥ ए ॥ वीश जमग पंच चूला, जि- नघर पमिमा घेर ॥ जंबु पमुह दश तरुए, अगिया- रसें सीत्तेर ॥ वृत्त वैताढ्ये वीश कोश, दीह अर्द्ध वि- स्तार ॥ धणु सय चउदश चालीश, उंचपणे अवधार ॥ १० ॥ नंदीश्वर विदिशे शक्री, शाण प्रिया आठ आठ ॥ तस नयरे त्रीहे सवि, तीस सय गुण साठ ॥ त्रिभुवन मांहे देहरां, सगवन लख अरु कोमि ॥ दो- यसें व्यासी हवे सुणो, बिंब नमुं कर जोमि ॥ ११ ॥

तेरसें नेव्याशी कोटी, साठ लाख असुराइ जाण ॥ तिग लख सहस एकाणुं, त्रणसें वीश तीर्थें प्रमाण ॥ एकसो बावन कोडि, चोराणुं लाख समेत ॥ सहस चुआलीश सग सय, साठ विमानिक चैत्य ॥ १२ ॥ पन्नरसें बुचत कोडि, अडवन्न लाख सुहाय ॥ छत्रीश सहस ने अयसी, त्रिजुवन बिंब कहाय ॥ चउमासी दिन चेतीए, चतुराभिध निज चित्त ॥ जो होत विद्यालब्धि तो, वीरविजय नमे नित्त ॥ १३ ॥

॥ पछी बेठा थका जयवीयराय पूरा कहीए,खमासमण दइ इच्छाकारेण कही शाश्वता अशाश्वता जिन आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं करेमि काउस्सग्गं अन्नछ ऊससिएणं कही काउस्सग्ग पूर्ण चार लोगस्सनो करी मोटी शांति सांजलीने, पारीने एक लोगस्स प्रगट कही पछी तेर वार नवकार गणीए. पछी श्रीसिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंडरीक गणधर जगवानने नमो जिणाणं ए पाठ तेर वखत कहीए. पछी बेसीने जूदां जूदां पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहीए, ते लखीए छीए ॥

॥ अथ सिद्धाचल स्तवन ॥

॥ शीतल जिन सहजानंदी ॥ ए देशी ॥ विमला-

वरसीए ॥ चा० ॥ ७ ॥ अनुभव रंग वाधे तेम पूजो, केशर घसी ભરશીए ॥ चा० ॥ भाव स्तव सुत केवल प्रगटे, श्री शुभवीर विलसीए ॥ चा०॥ ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबुगिरि स्तवनं ॥

॥ चित्त चेतो रे ॥ ए देशी ॥ आदि जिणेसर पूजतां दुःख मेटो रे ॥ आबूगढ दृढ चित्त ॥ भवि जइ भेटो रे ॥ देलवाडे देहरां भली ॥ दुः० ॥ चार परिमित नित्य ॥ भ० ॥ १ ॥ वीश गजबल पद्मावती ॥ दुः० ॥ चक्केसरी द्रव्य आण ॥ भ० ॥ शंख दीए अंबी सुरी ॥ दुः० ॥ पंच कोश वहे बाण ॥ भ० ॥ २ ॥ बार पादशाह जीतीने ॥ दुः० ॥ विमल मंत्री आह्लाद ॥ भ० ॥ द्रव्य भरी धरती कीयो ॥ दुः० ॥ ऋषभदेव प्रासाद ॥ भ० ॥ ३ ॥ बिहुत्तर अधिकां आठसें ॥ दुः० ॥ बिंब प्रमाण कहाय ॥ भ० ॥ पन्नरसें कारीगरे ॥ दुः० ॥ वरस त्रिके ते थाय ॥ भ० ॥ ४ ॥ द्रव्य अनुपम खरचीयो ॥ दुः० ॥ लाख त्रेपन्न बार कोडी ॥ भ० ॥ संवत् दश अठाशीए ॥ दुः० ॥ प्रतिष्ठा करी मन होडी ॥ भ० ॥ ५ ॥ देराणी जेठाणीना गोखडा ॥ दुः० ॥ लाख ० प्रमाण ॥ भ० ॥ वस्तुपाल तेजपालनी ॥ दुः०

॥ ए दोय कांता जाण ॥ ज० ॥ ६ ॥ मूल नायक नेमीसरु ॥ छुः० ॥ चारसें अमसठ विंब ॥ ज० ॥ रूपन धातुमय देहरे ॥ छुः० ॥ एकसो पीस्तालीश विंब ॥ ज० ॥ ७ ॥ चउमुख चैत्य जुहारीए ॥ छुः० काउस्सगीया गुणवंत ॥ ज० ॥ वाणुं मित्त तेमां कहुं ॥ छुः० ॥ अगन्यासी अरिहंत ॥ ज० ॥ ० ॥ अचलगढे प्रजुजी घणा ॥ छुः० ॥ जात्रा करो हुशीयार ॥ ज० ॥ कोमी तपे फल जे लहे ॥ छुः० ॥ ते प्रजु जक्ति विचार ॥ ज० ॥ ए ॥ सालंवन नि-रालंवने ॥ छुः० ॥ प्रजुध्याने जवपार ॥ ज० ॥ मंगल लीला पामीए ॥ छुः० ॥ वीरविजय जयकार ॥ ज० ॥ १० ॥ इति अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ अष्टापद स्तवनं ॥

॥ कुंवर गंजारो नजरे० ॥ ए देशी ॥ चउ अठ दश दोय वंदीए जी, वर्त्तमान जगदीश रे ॥ अष्टा-पद गिरि उपरे जी, नमतां जाधे जगीश रे ॥ च० ॥ १ ॥ जरत जरतपति जिनमुखे जी, उच्चरीयां व्रत वार रे ॥ दर्शनशुद्धिने कारणे जी, चोवीश प्र-जुनो विहार रे ॥ च० ॥ २ ॥ उंचपणे कोश तिग कहुं जी, योजन एक विस्तार रे ॥ निज निज मान प्रमाण

नरावीयांजी, बिंब स्वपर उपगार रे ॥ च० ॥ ३ ॥ अजितादिक चउ दाहिणे जी, पछीमे पउमाइ आठ रे ॥ अनंत आदे दश उत्तरे जी, पूर्वे ऋषन्न वीर पाठ रे ॥ च० ॥ ४ ॥ ऋषन्न अजित पूरवे रह्या जी, ए पण आगम पाठ रे ॥ आतम शक्तिए करे जातरा जी, ते नव मुक्ति वरे हणी आठ रे ॥ च० ॥ ५ ॥ देखो अचंनो श्री सिद्धाचले जी, हुआ असंख्य उद्धार रे ॥ आज दिने पण इणे गिरे जी, ऊगमग चैत्य उदार रे ॥ च० ॥ ६ ॥ रहेशे उत्सर्पिणी लगे जी, देव महिमा गुण दाख रे ॥ सिंह निषद्यादिक थिरपणे जी, वसुदेव हिंमनी शाख रे ॥ च० ॥ ७ ॥ केवली जिनमुख में सुण्युं जी, इणविधे पाठ पठाय रे ॥ श्री शुन्नवीर वचनरसे जी, गायो ऋषन्न शिव ठाय रे ॥ च० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवनं ॥

॥ नमरा नूधर शे नाव्यो ॥ ए देशी ॥ नाम सुणत शीतल श्रवणा, जस दर्शन शीतल नयनां ॥ स्तवन करत शीतल वयणां रे ॥ १ ॥ समेतशिखर नेटण चलजो, मुज मन बहु नवि सांनलजो रे ॥ अनुनव मित्र सहित मलजो रे ॥ स० ॥ २ ॥ जंबूद्वीप

दाहिण जरते, पूरव देशे अनुसरते, समेतशिखर तीरथ वरते रे ॥ स० ॥ ३ ॥ जस दर्शन घन कर्म दहे, दिनकर ताप गगन वहे, शशी वसी पद्म विनाश लहे रे ॥ स० ॥ ४ ॥ अजितादिक दश शिव वरीआ, विमलादिक नव जव तरीया, पार्श्व-नाथ एम वीश मलीया रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मुक्ति वस्या प्रजु इण ठामे, वीशे टुंको अजिरामे, वीश जिनेश्व-रने नामे रे ॥ स० ॥ ६ ॥ उत्तर दिश ऐरावत मांहि, श्री सुप्रतिष्ठ गिरि ज्यांहि, सुचंद्रादिक वीश त्यांहि रे ॥ स० ॥ ७ ॥ इम दश क्षेत्रे वीश लह्या, एक एक गिरिवर सिद्ध थया, तीत्थोगाली पयन्ने कह्या रे ॥ स० ॥ ८ ॥ रत्नत्रयी जेहथी लहीए, जवजल पार ते निरवहीए, सज्ञान तीरथ तस कहीए रे ॥ स० ॥ ९ ॥ कल्याणक एक जिहां थाय, ते पण तीरथ कहेवाय, वीश जिनेश्वर शिव जाय रे ॥ स० ॥ १० ॥ तेणे ए गिरिवर अजिराम, मुनिवर कोमि शिव ठाम, शिववहू खेलण आराम रे ॥ स० ॥ ११ ॥ मुनिवर सूत्र अरथ धारी, विचरे गगन लब्धि प्यारी, देखी तीरथ पय चारी रे ॥ स० ॥ १२ ॥ समेतशिखर सुप्रतिष्ठ तणी, ठवणा पूजन

दुःख हरणी, घेर वेगां शिव नीसरणी रे ॥ स० ॥ १३ ॥ दर्शने जस दर्शन वरीए, लही शुभ सुख दुःखमां हरीए, वीरविजय शिव मंदिरीए रे ॥ स० ॥ १४ ॥ इति समेतशिखर स्तवनं ॥ ५ ॥ इति श्री सत्संविज्ञ सुज्ञ प्राज्ञ तज्ज्ञ तंत्रज्ञ तपोगणे स्थित पंडित श्री १०८ श्री क्षमाविजय गणि शिष्य यशोविजय गणि शिष्य पंडित श्री शुभविजय गणि शिष्येण विरचिताब्द १८६५ आषाढ शुक्ल प्रतिपदि घस्ने त्रिक चातुर्मासिक देववंदन विधिः परिपूर्णतां प्राप्तः ॥ श्रीरस्तु ॥ ग्रंथ संख्या ॥ ४२५ ॥

॥ अथ श्री पद्मविजयजी विरचित चौमासी देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम आदि जिन चैत्यवंदन ॥

॥ विमल केवलज्ञान कमला, कलित त्रिभुवन हितकरं ॥ सुरराज संस्तुत चरण पंकज, नमो आदि जिनेश्वरं ॥ १ ॥ विमल गिरिवर शृंगमंडन, प्रवर गुणगण भूधरं ॥ सुर असुर किन्नर कोटि सेवित ॥ नमो० ॥ २ ॥ करती नाटक किन्नरी गण, गाय

जिन गुण मनहरं ॥ निर्जरा वली नमे अहोनिश ॥ नमो० ॥ ३ ॥ पुंडरीक गणपति सिद्धि साधित, कोमि पण मुनि मनहरं ॥ श्री विमल गिरिवर शृंग सिद्धा ॥ न० ॥ ४ ॥ निज साध्य साधन सुर मुनिवर, कोमिनंत ए गिरिवरं ॥ मुगति रमणी वस्या रंगे ॥ न० ॥ ५ ॥ पाताल नर सुर लोक मांहे, विमल गिरिवर तो परं ॥ नहि अधिक तीरथ तीर्थपति कहे ॥ न० ॥ ६ ॥ इम विमल गिरिवर शिखर मंमण, छुःख विहंडण ध्याइए ॥ निज शुद्ध सत्ता साधनार्थं, परम ज्योति निपाइए ॥ ७ ॥ जित मोह कोह विछोह निद्रा, परमपद स्थिति जयकरं ॥ गिरिराज सेवा करण तत्पर, पद्मविजय सुहितकरं ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री ऋषन नमस्कारः ॥

॥ आदिदेव अलवेसरु, विनितानो राय ॥ नान्नि राय कुलमंडणो, मरुदेवा माय ॥ १ ॥ पांचसें धनुषनी देहमी, प्रनु परम दयाल ॥ चोराशी लख पूर्वनुं, जस आयु विशाल ॥ २ ॥ वृषन्न लंछन जिन वृषधरु ए, उत्तम गुण मणिखाण ॥ तस सेवन थकी, [illegible] ल गण ॥ ३ ॥

॥ अथ चार थोय प्रारंभः ॥

॥ आदि जिनवर राया, जास सोवन्न काया, मरु-देवी जस माया, धोरी लंछन पाया ॥ जगत थिति निपाया, शुद्ध चारित्र पाया, केवल सिरि राया, मोक्ष नगरे सधाया ॥ १ ॥ सवि जन सुखकारी, मोह मिथ्या निवारी, दुर्गति दुःख भारी, शोक संताप वारी ॥ श्रेणी क्षपक सुधारी, केवलानंत धारी, नमीए नर नारी, जेह विश्वोपकारी ॥ २ ॥ समोसरणे बेठा, लागे जे जिनजी मीठा, करे गणप पइठा, इंद्र चंद्रादि दीठा ॥ द्वादशांगी वरीठा, गुंथतां टाले रिठा, भविजन होय हिठा, देखी पुण्ये गरिठा ॥ ३ ॥ सुर समकितवंता, जेह रुद्धे महंता, जेह सज्जन संता, टालीए मुज चिंता ॥ जिनवर सेवंता, विघ्न वारो दुरंता, जिन उत्तम थुणंतां, पद्मने सुख दिंता ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ सोना ते केरुं बेडलुं मारुजी, वाव्य खोदाव ॥ ए देशी ॥ प्रथम जिनेसर प्रणमीए, जास सुगंधी रे काय ॥ कल्पवृक्ष परे तास, इंद्राणी नयन

जे, भृंग परे लपटाय ॥ १ ॥ रोग उरग तुज नवि नडे, अमृत जे आस्वाद ॥ तेहथी प्रतिहत तेह, मानुं कोइ नवि करे, जगमां तुम्हशुं रे वाद ॥ २ ॥ वगर धोइ तुझ निरमली, काया कंचन वान ॥ नहीं प्रस्वेद लगार, तारे तुं तेहने, जे धरे तारुं रे ध्यान ॥ ३ ॥ राग गयो तुज मन थकी, तेमां चित न कोइ ॥ रुधिर आमिषथी, राग गयो तुज जनमथी, दूध सहोदर होय ॥ ४ ॥ श्वासोश्वास कमल समो, तुज लोकोत्तर वात ॥ देखे न आहार नीहार चरम चक्षु धणी, एहवा तुज अवदात ॥ ५ ॥ चार अतिशय मूलथी, उगणीश देवना कीध ॥ कर्म खप्याथी अग्यार चोत्रीश एम अतिशया, समवायांगे प्रसिद्ध ॥६॥ जिन उत्तम गुण गावतां, गुण आवे निज अंग ॥ पद्मविजय कहे एह समय प्रभु पालजो, जिम थाउं अखय अभंग ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अजितनाथ प्रभु अवतर्यो, विनितानो स्वामी ॥ जितशत्रु विजया तणो, नंदन शिवगामी ॥ १ ॥ वहोंतेर लाख पूरव तणुं, पाल्युं जिणे आय ॥ गज लंछन लंछन नहीं, प्रणमे सुरराय ॥२॥ साढा चारसें

धनुषनी ए, जिनवर उत्तम देह ॥ पादपद्म तस प्रणमीए, जिम लहीए शिव गेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विजया सुत वंदो, तेजथी ज्युं दिणंदो, शीतलताए चंदो, धीरताए गिरींदो ॥ मुख जिम अरविंदो, जास सेवे सुरींदो, लहो परमाणंदो, सेवना सुखकंदो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्यवंदन ॥

सावत्थी नयरी धणी, श्री संभवनाथ ॥ जितारी नृप नंदनो, चलवे शिव साथ ॥१॥ सेना नंदन चंदने, पूजो नव अंगे ॥ चारसें धनुषनुं देह मान, प्रणमुं मनरंगे ॥ २ ॥ साठ लाख पूरव तणुं ए, जिनवर उत्तम आय ॥ तुरग लंछन पदपद्मने, नमतां शिवसुख थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संभव सुखदाता, जेह जगमां विख्याता, षट् जीवना त्राता, आपता सुखशाता ॥ माता ने भ्राता, केवलज्ञान ज्ञाता, दुःख दोहग व्राता, जास नामे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ नंदन संवर रायनो, चोथा अभिनंदन ॥ कपि लंछन वंदन करो, भव दुःख निकंदन ॥ १ ॥ सिद्धारथा जस मावडी, सिद्धारथ जिनराय ॥ साडा त्रणसें धनुपमान, सुंदर जस काय ॥ २ ॥ विनिता वासी वंदीये ए, आयु लख पंचास ॥ पूरव तस पदपद्मने, नमतां शिवपुर वास ॥ ३ ॥ इति श्री अभिनंदन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ संवर सुत साचो, जास स्याद्वाद वाचो, थयो हीरो साचो, मोहने दे तमाचो ॥ प्रभुगुणगण माचो, एहने ध्याने राचो, जिनपद सुख साचो, भव्य-प्राणी निकाचो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुमतिनाथ सुहंकरु, कोसला जस नयरी ॥ मेघराय मंगला तणो, नंदन जित वयरी ॥ १ ॥ क्रौंच लंछन जिनराजीयो, त्रणसें धनुपनी देह ॥ चालीश लाख पूरव तणुं, आयु अति गुणगेह ॥२॥ सुमति गुणे करी जे भर्या ए, तर्या संसार अ-

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सेवे सुरवर वृंदा, जास चरणारविंदा, अठम जिनचंदा, चंद्रवर्ण सोहंदा ॥ महसेन नृपनंदा, कापता दुःखदंदा ॥ लंछन मिष चंदा, पाय मानुं सेविंदा ॥ १ ॥

॥ अथ श्री सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सुविधिनाथ नवमा नमुं, सुग्रीव जस तात ॥ मगर लंछन चरणे नमुं, रामा रुडी मात ॥ १ ॥ आयु बे लाख पूरव तणुं, शत धनुषनी काय ॥ काकंदी नयरी धणी, प्रणमुं प्रभुपाय ॥ २ ॥ उत्तम विधि जेहथी लह्यो ए, तेणे सुविधि जिन नाम ॥ नमतां तस पदपद्मने, लहीए शाश्वत धाम ॥ ३ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नरदेव भाव देवो, जेहनी सारे सेवो, जेह देवाधिदेवो, सार जगमां ज्युं मेवो ॥ जोतां जग एहवो, देव दीठो न तेहवो, सुविधि जिन जेहवो, मोक्ष दे ततखेवो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नंदा दृढरथ नंदनो, शीतल शीतलनाथ ॥

राजा नद्दिलपुर तणो, चलवे शिव साथ ॥ १ ॥ लाख पूरवनुं आउखुं, नेवुं धनुष प्रमाण ॥ काया माया टालीने, लह्या पंचम नाण ॥ २ ॥ श्रीवत्स लंठन सुंदरु ए, पदपद्मे रहे जास ॥ ते जिननी सेवा थकी, लहीए लील विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ शीतल जिन स्वामी, पुण्यथी सेव पामी, प्रभु आतमरामी, सर्व परभाव वामी ॥ जे शिवगति गामी, शाश्वतानंद धामी, भवि शिवसुख कामी, प्रणमीए शिश नामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांस जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्री श्रेयांस अग्यारमा, विष्णु नृप ताय ॥ विष्णु माता जेहनी, एंशी धनुषनी काय ॥१॥ वरस चोराशी लाखनुं, पाल्युं जेणे आय ॥ खड्गी लंठन पदकजे, सिंहपुरीनो राय ॥ २ ॥ राज्य तजी दीक्षा वरी ए, जिनवर उत्तम ज्ञान ॥ पाम्या तस पदपद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विष्णु जस मात, जेहना विष्णु तात, प्रभुना

अवदात, तीन भुवने विख्यात ॥ सुरपति संघात, जास निकटे आयात, करी कर्मनो घात, पामीया मोक्ष शात ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ वासव वंदित वासुपूज्य, चंपापुरी ठाम ॥ वासुपूज्य कुल चंद्रमा, माता जया नाम ॥ १ ॥ महिष लंछन जिन बारमा, सीत्तेर धनुष प्रमाण ॥ काया आयु वरस वली, बहोंतेर लाख वखाण ॥ २ ॥ संघ चतुर्विध थापीने ए, जिन उत्तम महाराय ॥ तस मुखपद्म वचन सुणी, परमानंदी थाय ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विश्वना उपगारी, धर्मना आदिकारी, धर्मना दातारी, काम क्रोधादि वारी ॥ तार्यां नर नारी, दुःख दोहग हारी, वासुपूज्य निहारी, जाउं हुं नित्य वारी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कंपिलपुरे विमल प्रभु, श्यामा मात मल्हार ॥ कृतवर्मा नृप कुल नभे, उगमीयो दिनकार ॥ १ ॥ लंछन राजे वराहनुं, साठ धनुषनी काय ॥ साठ

लाख वरसा तणुं, आयु सुखदाय ॥ २ ॥ विमल विमल पोते थया ए, सेवक विमल करेह ॥ तुज पद्-पद्म विमल प्रत्ये, सेवुं धरी ससनेह ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमल जिन जुहारो, पाप संताप वारो, श्यामांव मल्हारो, विश्वकीर्त्ति विफारो ॥ योजन विस्तारो, जास वाणी प्रसारो, गुणगण आधारो, पुण्यना ए प्रकारो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अनंत अनंतगुण आगरु, अयोध्यावासी ॥ सिंहसेन नृप नंदनो, थयो पाप निकासी ॥ १ ॥ सुजसा माता जनमीयो, त्रीश लाख उदार ॥ वरस आउखुं पालीयुं, जिनवर जयकार ॥ २ ॥ लंछन सींचाणा तणुं ए, काया धनुप पचास ॥ जिन पद्पद्म नम्या थकी, लहीए सहज विलास ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत अनंत नाणी, जास महिमा गवाणी, सुर नर तिरि प्राणी, सांभले जास वाणी ॥ एक

वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी, तस्या ते गुण खाणी, पामीया सिद्धि राणी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता भली मात ॥ वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनुष पीस्तालीश ॥ रत्नपुरीनो राजीयो, जगमां जास जगीश ॥ २ ॥ धर्म मारग जिनवर कहे ए, उत्तम जन आधार ॥ तेणे तुज पादपद्म तणी, सेवा करुं निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म धर्मधोरी, कर्मना पास तोरी, केवल श्री जोरी, जेह चोरे न चोरी ॥ दर्शन मद छोरी, जाय भागा सटोरी, नमे सुर नर कोरी, ते वरे सिद्धि गोरी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ शांति जिनेसर सोलमा, अचिरा सुत वंदो ॥ विश्वसेन कुल नभमणि, भविजन सुखकंदो ॥ १ ॥ मृग लंछन जिन आउखुं, लाख वरस प्रमाण ॥ हत्थिणाउर नयरी धणी, प्रभुजी गुणमणि खाण ॥ २ ॥

चालीश धनुषनी देहमी ए, समचउरस संठाण ॥ वदनपद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यते ॥

॥ वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति, टाळे भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति ॥ द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति, धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥ १ ॥ दोय जिनवर नीला, दोय धोला सुशीला, दोय रक्त रंगीला, काढता कर्म कीला ॥ न करे कोइ हीला, दोय श्याम सलीला, सोल स्वामीजी पीला, आपजो मोक्ष लीला ॥ २॥ जिनवरनी वाणी, मोह वल्ली कृपाणी, सूत्रे देवाणी, साधुने योग्य जाणी ॥ अरथे गुंथाणी, देव मनुष्य प्राणी, प्रणमो हित आणी, मोक्षनी ए निशाणी ॥ ३ ॥ वागेसरी देवी, हर्षे हैडे धरेवी, जिनवर पय सेवी, सार श्रद्धा वरेवी ॥ जे नित्य समरेवी, दुःख तेहनां हरेवी, पद्मविजय कहेवी, भव्य संताप खेवी ॥ ४ ॥

॥ अथ श्री शांति जिन स्तवन ॥

॥ गरबो कोणेने कोराव्यो के नंदजीना लाल रे॥ ए देशी ॥ सोलमा शांति जिनेसर देव के, अचिराना

वचन समजाणी, जेह स्याद्वाद जाणी, तस्या ते गुण खाणी, पामीया सिद्धि राणी ॥ १ ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नानुनंदन धर्मनाथ, सुव्रता नली मात ॥ वज्र लंछन वज्री नमे, त्रण भुवन विख्यात ॥ १ ॥ दश लाख वरसनुं आउखुं, वपु धनुष पीस्तालीश ॥ रत्न- [illegible] जगीश ॥ २ ॥ धर्म सहु नाश थाये नवा नावे के ॥ अ० [illegible] ॥ तेणे परनावे के ॥ अ० ॥ ३ ॥ जिहां जिनजी विचरं र॰ के ॥ अ० ॥ नवि मूषक शलन पतंग के ॥ अ० ॥ नवि कोइने वयर विरोध के ॥ अ० ॥ अतिवृष्टि अना- वृष्टि रोध के ॥ अ० ॥ ४ ॥ निज पर चक्रनो नय नासे के ॥ अ० ॥ वली मरकी नावे पासे के ॥ अ० ॥ प्रनु विचरे तिहां न डुकाल के ॥अ०॥ जाये उपद्रव सवि ततकाल के ॥ अ० ॥ ५ ॥ जस मस्तक पूंठे राजे के ॥ अ० ॥ नामंमल रवि परे गाजे के ॥ अ० ॥ कर्मक्षयथी अतिशय अगीयार के ॥ अ० ॥ मानु योग्य साम्राज्य परिवार के ॥ अ० ॥ ६ ॥ कब देखुं नाव ए नावे के ॥ अ० ॥ एम होंश घणी चित्त आवे के ॥ अ० ॥ श्री जिन उत्तम परनावे के ॥ अ० ॥

चालीश धनुषनी देहनी ए, समचउरस संठाण ॥ वदनपद्म ज्युं चंदलो, दीठे परम कल्याण ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारभ्यते ॥

॥ वंदो जिन शांति, जास सोवन कांति, टाले भव भ्रांति, मोह मिथ्यात्व शांति ॥ द्रव्य भाव अरि पांति, तास करता निकांति, धरता मन खांति, शोक संताप वांति ॥ १ ॥ [illegible]
सुशील[illegible]ए, भावे श्री जिनराय ॥ २ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ कुंथु जिन नाथ, जे करे छे सनाथ, तारे भव पाथ, जे ग्रही भव्य हाथ ॥ एहनो तजे साथ, बावले दीये बाथ, तरे सुर नर साथ, जे सुणे एक गाथ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नागपुरे अर जिनवरु, सुदर्शन नृपनंद ॥ देवी माता जनमीयो, भविजन सुखकंद ॥ १ ॥ लंछन नंदावर्त्तनुं, काया धनुषह त्रीश ॥ सहस चोराशी वरषनुं, आयु जास जगीश ॥ २ ॥ अरुज अजर अज जिनवरु ए, पाम्या उत्तम ठाण ॥ तस पद-पद्म आलंबतां, लहीये पद निरवाण ॥ ३ ॥ इति ॥

समुदय जेह, ते रहे नांही रेह ॥ लहे केवल तेह, सेवना कार्य एह, लहे शिवपुर गेह, कर्मनो आणी छेह ॥ १ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ नेमिनाथ बावीशमा, शिवादेवी माय ॥ समुद्रविजय पृथिवीपति, जेह प्रनुना ताय ॥ १ ॥ दश धनुषनी देहनी, आयु वरस हजार ॥ शंख लंछनधर स्वामीजी, तजी राजुल नार ॥ २ ॥ सोरीपुर नयरी नली ए, ब्रह्मचारी नगवान ॥ जिन उत्तम पदपद्मने, नमतां अविचल थान ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारंनः ॥

॥ राजुल वर नारी, रूपथी रति हारी ॥ तेहना परिहारी, बालथी ब्रह्मचारी ॥ पशुआं उगारी, हुआ चारित्र धारी ॥ केवल श्री सारी, पामीया घाती वारी ॥ १ ॥ त्रण ज्ञान संयुता, मातनी कूखे हुंता ॥ जनमे सुर हुंता, आवी सेवा करंता ॥ अनुक्रमे व्रत करंता, पंच समिति धरंता ॥ महियल विचरंता, केवल श्री वरंता ॥ २ ॥ सवि सुरवर आवे, नावना चित्त लावे ॥ त्रिगडुं सोहावे, देवछंदो बनावे ॥ सिंहास-

न ठावे, स्वामीना गुण गावे ॥ तिहां जिनवर आवे, तत्त्व वाणी सुणावे ॥ ३ ॥ शासनसुरी सारी, अंबिका नाम धारी ॥ जे समकिती नर नारी, पाप संताप वारी ॥ प्रभु सेवा कारी, जाप जपीये सवारी, संघ डुरित निवारी, पद्मने जेह प्यारी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमि जिन स्तवन ॥

॥ आवो जमाइ प्राहुणा, जयवंताजी ॥ ए देशी ॥ निरखो नेमि जिणंदने अरिहंताजी ॥ राजीमती कस्यो त्याग, जगवंताजी ॥ ब्रह्मचारी संयम ग्रह्यो ॥ अ० ॥ अनुक्रमे थया वीतराग ॥ ज० ॥ ॥ १ ॥ चामर चक्र सिंहासन ॥ अ० ॥ पादपीठ संयुक्त ॥ ज० ॥ छत्र चाले आकाशमां ॥ अ० ॥ देवडुंडुनि वर उत्त ॥ ज० ॥ २ ॥ सहस जोयण ध्वज सोहतो ॥ अ० ॥ प्रभु आगल चालंत ॥ ॥ ज० ॥ कनक कमल नव उपरे ॥ अ० ॥ विचरे पाय ठवंत ॥ ज० ॥ ३ ॥ चार मुखे दीये देशना ॥ ॥ अ० ॥ त्रण गढ जाकजमाल ॥ ज० ॥ केश रोम श्मश्रु नखा ॥ अ० ॥ वाधे नहीं कोइ काल ॥ ॥ ज० ॥ ४ ॥ कांटा पण उंधा होय ॥ अ० ॥ पंच विषय अनुकूल ॥ ज० ॥ षट् ऋतु समकाले फले ॥

॥ अ० ॥ वायु नहीं प्रतिकूल ॥ ज० ॥ ५ ॥ पाणी सुगंध सुर कुसुमनी ॥ अ० ॥ वृष्टि होये सुरसाल ॥ ज० ॥ पंखी दीये सुप्रदक्षिणा ॥ अ० ॥ वृक्ष नमे असराल ॥ ज० ॥ ६ ॥ जिन उत्तम पदपद्मनी ॥ अ० ॥ सेव करे सुर कोमी ॥ ज० ॥ चार निकायना जघन्यथी ॥ अ० ॥ चैत्य वृक्ष तेम जोमी ॥ ज० ॥ ७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वजिन चैत्यवंदन प्रा० ॥

॥ आस पूरे प्रज्ञु पासजी, त्रोडे जव पाश ॥ वामा माता जनमीयो, अही लंछन जास ॥ १ ॥ अश्वसेन सुत सुखकरु, नव हाथनी काया ॥ काशी देश वाणारसी, पुण्ये प्रज्ञु आया ॥ २ ॥ एकसो वरसनुं आउखुं ए, पाली पास कुमार ॥ पद्म कहे मुक्ते गया, नमतां सुख निरधार ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोयो चार प्रारंज्ञः ॥

॥ श्री पास जिणंदा, मुख पूनम चंदा ॥ पद युग अरविंदा, सेवे चोसठ इंदा ॥ लंछन नागिंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सेवे गुणी वृंदा, जेहथी सुखकंदा ॥ ॥ १ ॥ जनमथी वर चार, कर्म नासे इग्यार ॥ उंगणीश निरधार, देवे कीधा उदार ॥ सवि चोत्रीश

धार, पुण्यना ए प्रकार ॥ नमीए नर नार, जेम संसार पार ॥ २ ॥ एकादश अंगा, तेम बारे उवंगा ॥ षट् छेद सुचंगा, मूल चारे सुरंगा ॥ दश पइन्न सुसंगा, सांभलो थइ एकंगा॥अनुयोग बहु भंगा, नंदीसूत्र प्रसंगा ॥ ३ ॥ पासे यक्ष पासो, नित्य करतो निवासो ॥ अडतालीश जासो, सहस परिवार खासो ॥ सहुए प्रभु दासो, मागता मोक्ष वासो ॥ कहे पद्म निकासो, विघ्नना वृंद पासो ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ पार्श्व जिन स्तवन ॥

॥ मारा पासजी रे लो ॥ ए देशी ॥ जिनजी त्रेवीशमो जिन पास, आस मुज पूरवे रे लो ॥ माहरा नाथजी रे लो ॥ जि० ॥ इह भव परभव दुःख दोहग सवि, चूरवे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ आठ प्रातिहार्यशुं, जगमां तुं जयो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ताहरा वृक्ष अशोकथी, शोक दूरे गयो रे लो ॥ मा० ॥ १ ॥ जि० ॥ जानु प्रमाण गीर्वाण, कुसुमवृष्टि करे रे लो, ॥ मा० ॥ जि० ॥ दिव्य ध्वनि सुर पूरे के,वांसलीए स्वरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ चामर केरी हार चलंती, एम कहे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ जे नमे अमर परे ते भवि, ऊर्ध्व

गति लहे रे लो ॥ मा० ॥ २ ॥ जि० ॥ पादपीठ सिंहासन, व्यंतर विरचीए रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ तिहां बेसी जिनराज, भविक देशना दीये रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ भामंमल शिर पूठे, सूर्य परे तपे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ निरखी हरखे जेह, तेहनां पातक खपे रे लो ॥ मा० ॥ ३ ॥ जि० ॥ देवडुंडुभिनो नाद गंभीर गाजे घणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ त्रण छत्र कहे तुज के, त्रिभुवनपतिपणो रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ए ठकुराइ तुज के, बीजे नवि घटे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ रागी द्वेषी देव के, ते भवमां अटे रे लो ॥ मा० ॥ ४ ॥ जि० ॥ पूजक निंदक दोय के, ताहारे समपणे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ कमठ धरणपति उपरे, समचित्त तुं गणे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ पण उत्तम तुज पाद, पद्म सेवा करे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ तेह स्वभावे भव्य के, भवसायर तरे रे लो ॥ मा० ॥ जि० ॥ ५ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री वर्द्धमान स्वामि चैत्यवंदन ॥

॥ सिद्धारथ सुत वंदीए, त्रिशलानो जायो ॥ क्षत्रीकुंडमां अवतर्यो, सुर नरपति गायो ॥ १ ॥

मृगपति लंछन पाउले, सात हाथनी काया ॥ बहों-तेर वरसनुं आउखुं, वीर जिनेश्वर राया ॥ २ ॥ खिमा-विजय जिनरायना ए, उत्तम गुण अवदात ॥ सात बोलथी वर्णव्या, पद्मविजय विख्यात ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय जोडो प्रारभ्यते ॥

॥ महावीर जिणंदा, राय सिद्धार्थ नंदा, लंछन मृगेंदा, जास पाये सोहंदा ॥ सुर नरवर इंदा, नित्य सेवा करंदा, टाले भवफंदा, सुख आपे अमंदा ॥ १ ॥ अरु जिनवर माता, मोक्षमां सुखशाता, अरु जिननी ख्याता, स्वर्ग त्रीजे अख्याता, अरु जिनप जनेता, नाक माहेंद्र याता, सवि जिनवर नेता, शाश्वतां सुख देता ॥ २ ॥ मल्लि नेमि पास, आदि अठम खास ॥ करी एक उपवास, वासुपूज्य सु-वास ॥ शेष छठ सुविलास, केवलज्ञान जास ॥ करे वाणी प्रकाश, जेम अज्ञान नाश ॥ ३ ॥ जि-नवर जगदीश, जास महोटी जगीश, नहीं राग ने रीश, नामीए तास शीश ॥ मातंग सुर ईश, से-वतो राति दिस, गुरु उत्तम अधीश, पद्म भाखे सुशीश ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारभ्यते ॥

॥ गेब सागररी पाल, उनी दोय नागरी मारा लाल ॥ ए देशी ॥ शासन नायक शिवसुख, दायक जिनपति ॥ मारा लाल ॥ पायक जास सुरासुर, चरणे नरपति ॥ मा० ॥ सायक कंदर्प केरा, जेणे नवि चित्त धस्या ॥ मा० ॥ ढायक पातक वृंद, चरण अंगीकर्यां ॥ मा० ॥ १ ॥ खायक नावे केवल, ज्ञान दर्शन धरे ॥ मा० ॥ ज्ञायक लोकालोकना, नावशुं विस्तरे ॥ मा० ॥ घायक घाति कर्म, मर्मनी आपदा ॥ मा० ॥ लायक अतिशय प्राति, हार्थनी संपदा ॥ मा० ॥ २ ॥ कारक षट्ट थयां तुज के, आतम तत्त्वमां ॥ मा० ॥ धारक गुण समुदाय, सयल एकत्वमां ॥ मा० ॥ नारक नर तिरि देव, त्रमणथी हुं थयो ॥ मा० ॥ कारक जेह विनाव, तेणे विपरीत नयो ॥ मा० ॥ ३ ॥ तारक तुं सवि जीवने, समरथ में लह्यो ॥ मा० ॥ ठारक करुणा रसथी, क्रोधानल दह्यो ॥ मा० ॥ वारक जेह उपाधि, अनादिनी सहचरी ॥ मा० ॥ कारक जिन गुण ऋद्धि, सेवकने बराबरी ॥ मा० ॥ ४ ॥ वाणी एहवी सांनली, जिन आगम तणी ॥ मा० ॥ जाणी

उत्तम आश, धरी मनमां धणी ॥ मा० ॥ खाणी गुणनी तुज, पदपद्मनी चाकरी ॥ मा० ॥ आणी हैडे हेज, करुं निज पद करी ॥ मा० ॥ ५ ॥ इति ॥ पछी जयवीयराय पूरा कहेवा ॥

॥ अथ श्री शाश्वता अशाश्वता प्रभु चैत्यवं० ॥

॥ कोडी सात ने लाख बहोंतेर वखाणुं, भुवनपति चैत्य संख्या प्रमाणुं ॥ एंशी सो जिन बिंब एक चैत्य ठामे, नमो सासय जिनवरा मोक्ष कामे ॥ १ ॥ कोडी तेरसें नेव्याशी वखाणे, साठ लाख उपर सवि बिंब जाणे ॥ असंख्यात व्यंतर तणा नग्र नामे ॥ न० ॥ २ ॥ असंख्यात तिहां चैत्य तेम ज्योतिषीए, बिंब एकशत एंशी भाख्यां ऋषिए ॥ नमे ते महा ऋद्धि नवनिद्धि पामे ॥ न० ॥ ३ ॥ वली बार देवलोकमां चैत्य सार, ग्रैवेक नव मांहि देहरां उदार ॥ तिम अनुत्तरे देखीने म पक्षो भामे ॥ न० ॥ ४ ॥ चौराशी लाख तेम सत्ताणुं सहस्सा, उपर त्रेवीश चैत्य शोभाए सरसा ॥ हवे बिंब संख्या कहुं तेह धामे ॥ न० ॥ ५ ॥ सो कोडी ने बावन कोडी जाणो, चोराणुं लख सहस चोआल आणो ॥ सय सात ने साठ उपरे प्रकामे ॥ न० ॥ ६ ॥

करे अति हर्ष जराया जी ॥ जिन उत्तम कल्याणक दिवसे, पद्मविजय नमे पाया जी ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अहींआं लगतीज मोटी शांति एक जणे कहेवी अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांजले. पठी सर्व जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरण कहे. पठी बेसीने सर्व जण तेर नवकार गणे. ते वार पठी "श्री सिद्धाचल सिद्धक्षेत्र अष्टापद आदीश्वर पुंमरीक गणधराय नमो नमः" ॥ ए पांठ तेर वखत सर्व जनोए कहेवो. पठी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीए ठीए ॥

॥ अथ श्री शत्रुंजय स्तवन ॥

॥ जशोदा मावमी ॥ ए देशी ॥ जात्रा नवाणुं करीए विमलगिरि ॥ जात्रा० ॥ ए आंकणी ॥ पूरव नवाणुं वार शेत्रुंजा गिरि, रुषन जिणंद समोसरीए ॥ वि० ॥ १ ॥ कोमी सहस जव पातक त्रूटे, शत्रुंजय साहामा मग जरीए ॥ वि० ॥ २ ॥ सात ठठ दोय अठम तपस्या, करी चढीए गिरिवरीए ॥ वि० ॥ ३ ॥ पुंमरीक पद जपीए हरषे, अध्यवसाय शुन्न धरीए ॥ वि० ॥ ४ ॥ पापी अन्नवि न नजरे देखे, हिंसक पण उद्धरीए ॥ वि० ॥ ५ ॥ नूंइ संथारो ने

नारी तणो संग, दूर थकी परहरीए ॥ वि० ॥ ६ ॥ सचित परिहारी ने एकल आहारी, गुरु साथे पद चरीए ॥ वि० ॥ ७ ॥ पमिकमणां दोय विधिशुं करीए, पाप पमल विखरीए ॥ वि० ॥ ८ ॥ कलिकाले ए तीरथ महोटुं, प्रवहण जेम नव दरीए ॥ वि० ॥ ए ॥ उत्तम ए गिरिवर सेवंतां, पद्म कहे नव तरीए ॥ वि० ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनारजीनुं स्तवन ॥

॥ माहारा वालाजी ॥ ए देशी ॥ तोरणथी रथ फेरी चाव्या कंत रे,प्रीतमजी ॥ आठ नवानी प्रीतडी त्रोमी तंत ॥ माहारा प्रीतमजी ॥ नवमे नव पण नेह न आणो मुऊ रे ॥ प्री० ॥ तो शे कारण एटले आववुं तुज ॥ मा० ॥ १ ॥ एक पोकार सुणी तिर्यंचनो एम रे ॥ प्री० ॥ मूको अवला रोती प्रजुजी केम ॥ मा० ॥ पट् जीवना रखवालमां शिरदार रे ॥ प्री० ॥ ते केम विलवती स्वामि मूको नारी ॥ मा० ॥ २ ॥ शिववधू केरुं एहवुं कहेवुं रूप रे ॥ प्री० ॥ मुऊ मूकीने चित्तमां धरी जिन नूप ॥ मा० ॥ जिनजी लीये सहसा वनमां व्रत चार रे ॥ प्री० ॥ घाती करम खपावीने निरधार ॥ मा० ॥ केवल क्षरुि

आ० ॥ ११ ॥ वाणुं काउस्सग्गीआ तेह्मां रे लो, अगन्यासी जिनराय ॥ सु० ॥ अचलगढे बहु जिनवरा रे लो, वंदुं तेह्ना पाय ॥ व० ॥ आ० ॥ १२ ॥ धातुमयी परमेश्वरा रे लो, अद्भुत जास स्वरूप ॥ सु० ॥ चौमुख मुख्य जिन वंदतां रे लो, थाये निज गुण भूप ॥ व० ॥ आ० ॥ १३ ॥ अढारसें ने अढारमां रे लो, चैतर वदि त्रीज दिन्न ॥ सु० ॥ पालणपुरना संघशुं रे लो, प्रणमी थयो धन धन्न ॥ व० ॥ आ० ॥ १४ ॥ तिम शांति जगदीशरु रे लो, यात्रा करी अद्भुत ॥ सु० ॥ जे देखी जिन सांभरे रे लो, सेव करे पुरुहूत ॥ व० ॥ आ० ॥ १५ ॥ एम जाणी आबु तणी रे लो, जात्रा करशे जेह ॥ सु० ॥ जिन उत्तम पद पामशे रे लो, पद्मविजय कहे तेह ॥ व० ॥ आ० ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अष्टापद स्तवन ॥

॥ अष्टापद अरिहंतजी माहारा वाहालाजी रे ॥ आदीश्वर अवधार ॥ नमीए नेहशुं ॥ माहा० ॥ दश हजार मुणींदशुं ॥ मा० ॥ वरीया शिववधू सार ॥ नमीए० ॥ १ ॥ भरत भूप भावे कर्यो ॥ मा० ॥ चउमुख चैत्य उदार ॥ न० ॥ जिनवर चोवीशे जिहां

॥ मा० ॥ थाप्या अति मनोहार ॥ न० ॥ मा० ॥ २ ॥ वरण प्रमाणे विराजता ॥ मा० ॥ लंछन ने अलंकार ॥ न० ॥ सम नासाए शोजता ॥ मा० ॥ चिहुं दिशे चार प्रकार ॥ न० ॥ ३ ॥ मंदोदरी रावण तिहां ॥ मा० ॥ नाटक करतां विचाल ॥ न० ॥ त्रुटी तांत तव रावणे ॥ मा० ॥ निज कर वीणा ततकाल ॥ न० ॥ ४ ॥ करी वजावी तिणे समे ॥ मा० ॥ पण नवि त्रोड्युं ते तान ॥ न० ॥ तीर्थंकर पद बांधीयुं ॥ मा० ॥ अद्भुत जावशुं गान ॥ न० ॥ ५ ॥ निज लब्धे गौतम गुरु ॥ मा० ॥ करवा आव्या ते जात ॥ न० ॥ जगचिंतामणि तिहां कस्युं ॥ मा० ॥ तापस बोध विख्यात ॥ न० ॥ ६ ॥ ए गिरि महिमा मोटिको ॥ मा० ॥ तिणे जवि पामे जे सिद्धि ॥ न० ॥ ते निज लब्धे जिन नमे ॥ मा० ॥ पामे शाशाश्वत ऋद्धि ॥ न० ॥ ७ ॥ पद्मविजय कहे एहना ॥ मा० ॥ केतां करुं रे वखाण ॥ न० ॥ वीरमुखे वरण्यो ॥ मा० ॥ नमतां कोमी कल्याण ॥ न० ॥ ८ ॥

॥ अथ समेतशिखर स्तवन ॥

॥ क्रीमा करी घरे आवीयो ॥ ए देशी ॥ समेतशिखर जिन वंदीए, मोटुं तीरथ एह रे ॥ पार पमाडे

नव तणो, तीरथ कहीए तेह रे ॥ समेत० ॥ १ ॥ अजितथी सुमति जिणंद लगे, सहस मुनि परिवार रे ॥ पद्मप्रभ शिवसुख वर्या, त्रणसें अड अणगार रे ॥ समेत० ॥ २ ॥ पांचसें मुनि परिवारशुं, श्री सुपास जिणंद रे ॥ चंद्रप्रभ श्रेयांस लगे, साथे सहस मुणींद रे ॥ समेत० ॥ ३ ॥ ढ हजार मुनिराजशुं, विमल जिनेश्वर सीद्धा रे ॥ सात सहसशुं चौदमा, निज कारय वर कीधां रे ॥ स० ॥ ४ ॥ एकसो आठशुं धर्म्मजी, नवसेंशुं शांतिनाथ रे ॥ कुंथु अर एक सहसशुं, साचो शिवपुर साथ रे ॥ स० ॥ ५ ॥ मल्लिनाथ शत पांचशुं, मुनि नमि एक हजार रे ॥ तेत्रीश मुनि युत पासजी, वरीया शिवसुख सार रे ॥ स० ॥ ६ ॥ सत्तावीश सहस त्रणसें, उपरे ओगणपचास रे ॥ जिन परिकर बीजा केइ, पाम्या शिवपुर वास रे ॥ स० ॥ ७ ॥ ए वीशे जिन एणे गिरे, सीद्धा अणसण लेइ रे ॥ पद्मविजय कहे प्रणमीए, पास सामलनुं चेइ रे ॥ स० ॥ ८ ॥ इति श्री समेतशिखर स्तवनं ॥ इति चौमासी देववंदन समाप्त ॥

॥ अथ श्री ज्ञानविमलजी कृत चतुर्विंशति जिन देववंदन प्रारंभः ॥

॥ तत्र प्रथम ॥

॥ श्री आदि जिन चैत्यवंदन ॥

॥ प्रथम जिनेश्वर ऋषभ देव, सवठथी चवीया ॥ वदि चउथे आषाढनी, शक्रे संस्तवीया ॥ अठमी चैत्रह वदि तणी, दिवसे प्रभु जाया ॥ दीक्षा पण तिणहीज दिने ॥ चउ नाणी थाया ॥ फागण वदि इग्यारसी ए, ज्ञान लहे शुभ ध्यान ॥ महा वदि तेरसे शिव लह्या, परमानंद निधान ॥ १ ॥

॥ अथ थोय जोडो प्रारंभः ॥

॥ ऋषभ जिन सुहाया, श्री मरुदेवी माया ॥ कनक वरण काया, मंगला जास जाया ॥ वृषभ लंछन पाया, देव नर नारी गाया ॥ पण सय धनु छाया, ते प्रभु ध्यान ध्याया ॥ १ ॥ ए तीरथ जाणी, जिन त्रेवीश उदार ॥ एक नेम विना सवि, समवसस्या निरधार ॥ गिरि कम्मणे आवी, पोहता गढ गिरनार ॥ चैत्री पूनम दिने, ते वंदु जयकार ॥ २ ॥ ज्ञाताधर्म कथांगे, अंतगम सूत्र मझार ॥ सिद्धा-

चले सीझा, बोल्या बहु अणगार ॥ ते माटे ए गिरि, सवि तीरथ शिरदार ॥ जिन भेटे थावे, सुख संपत्ति विस्तार ॥ ३ ॥ गौमुख चक्केश्वरी, शासननी रखवाल ॥ ए तीरथ केरी, सांनिध करे संभाल ॥ गिरुउं जस महिमा, संप्रति काले जास ॥ श्री ज्ञानविमल सूरि, नामे लील विलास ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ ललनानी देशी ॥ आदि करन अरिहंतजी, उलगरो अवधार ॥ ललना ॥ प्रथम जिणेसर प्रणमीए, वंछित फल दातार ॥ ललना ॥ १ ॥ आदि करण अरिहंतजी ॥ ए आंकणी ॥ उपगारी अवनी तले, गुण अनंत भगवान ॥ ललना ॥ अविनाशी अक्षय कला, वरते अतिशय धाम ॥ ललना ॥ आ० ॥ २ ॥ गृहवासे पण जेहने, अमृत फलनो आहार ॥ ललना ॥ ते अमृत फलने लहे, ए जुगतुं निरधार ॥ ललना ॥ आ० ॥ ३ ॥ वंश इक्ष्वाग छे जेहनो, चढतो रस सुविशेष ॥ ललना ॥ भरतादिक थया केवली, अनुभव फल रस देख ॥ ललना ॥ आ० ॥ ४ ॥ नाभिराय कुल मंडणो, मरुदेवी सरहंस ॥ ललना ॥ रुषभदेव नितु वंदीए, ज्ञानवि-

मल अवतंस ॥ ललना ॥ आ० ॥ ५ ॥ इति श्री ऋषभ जिन स्तवनं ॥ १ ॥

॥ अथ श्री अजितनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ सुदि वैशाखनी तेरसे, चवीया विजयंत ॥ माह्य सुदि आठमे जनमीया, बीजा श्री अजित ॥ माह्य सुदि नवमे मुनि थया, पोषी इग्यारस ॥ उज्ज्वल उज्ज्वल केवली, थया अक्षय कृपा रस ॥ वैशाख शुक्ल पंचमी दिने ए, पंचम गति लह्या जेह ॥ धीरविमल कविरायनो, नय प्रणमे धरी नेह ॥ २ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अजित जिनपतिनो, देह कंचन जरीनो ॥ नविक जन नगीनो, जेहथी मोह लीनो ॥ हुं तुज पद लीनो,जेम जल मांहे मीनो ॥ नवि होय ते दीनो, ताहरे ध्याने पीनो ॥ १ ॥ इति अजितनाथ थोय॥

॥ अथ श्री संभवनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सत्तम ग्रैवेयक थकी, चवीया श्री संभव ॥ फागुण सुदि आठम दिने, सुदि चउदसी अभिनव ॥ १ ॥ मृगशिर मासे जनमीया, तिणी पूनम सं-

जम ॥ कार्त्तिक वदि पंचमी दिने, लहे केवल नि-
रुपम ॥२॥ पंचमी चैत्रनी उजली ए, शिव पहोता
जिनराज ॥ ज्ञानविमल प्रभु प्रणमतां, सीझे स-
घलां काज ॥ ३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिन संभव वारु, लंछने अश्व धारु ॥ भवज-
लनिधि तारु, कामगद तीव्र दारु ॥ सुरतरु परिवारु,
दूसमा काल मारु ॥ शिवसुख किरतारु, तेहना
ध्यान सारु ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अभिनंदन जिन चैत्यवंदन ॥

॥ जयंत विमान थकी चव्या, अभिनंदन राया ॥
वैशाख सुदि चोथे माघ, सुदि बीजे जाया ॥ माहा
सुदि बारसे ग्रहीय दिक्ख, पोष शुद्ध चउदस ॥
केवल सुदि वैशाखनी, आठमे शिवसुख रस ॥
चउथा जिनवरने नमी ए, चउ गति भ्रमण निवार ॥
ज्ञानविमल गणपति कहे, जिन गुणनो नहीं पार ॥ १ ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अभिनंदन वंदो, साम्य माकंद कंदो ॥ नृप
संवर नंदो, घर्षिताशेष कंदो ॥ तम तिमिर दि-

णंदो, लंछने वा नरिंदो ॥ जस आगल मंदो, सौम्य गुण सार दिंदो ॥ १ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्री सुमतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण सुदि बीजे चव्या, मेहलीने जयंत ॥ पंचमी गति दायक नमुं, पंचम जिन सुमति ॥ सुदि वैशाखनी आठमे, जनम्या तिम संजम ॥ सुदि नवमी वैशाखनी, निरुपम जस शम दम ॥ चैत्र इग्यारस उजली ए, केवल पामे देव ॥ शिव पाम्या तिणे नवमी ए, नय कहे करो तस सेव ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुमति सुमति आपे, दुःखनी कोडि कापे ॥ सुमति सुजस व्यापे, बोधिनुं बीज व्यापे ॥ अविचल पद थापे, जाप दीप प्रतापे ॥ कुमति कदही नापे, जो प्रभु ध्यान व्यापे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पद्मप्रभ चैत्यवंदन ॥

॥ नवम ग्रैवेयकथी चव्या, माहा वदि छठ दिवसे ॥ कार्तिक वदि बारसे जनम, सुर नर सवि हरखे ॥ वदि तेरस संजम ग्रहे, पद्मप्रभ स्वामी ॥ चैत्री पूनम केवली, वली शिवगति पामी ॥ मृगशिर

वदि अग्यारसे ए, रक्त कमल सम वान ॥ नयविमल जिनराजनुं, धरीए निर्मल ध्यान ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ पद्मप्रभु सोहावे, चित्तमां नित्य आवे ॥ मुगति वधू मनावे, रक्त तनु कांति फावे ॥ दुःख निकट नावे, संतति सौख्य पावे ॥ प्रभु गुणगण ध्यावे, अष्ट महासिद्धि थावे ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री सुपासनाथजी चैत्यवंदन ॥

॥ छठा ग्रैवेयकथी चवी, जिनराज सुपास ॥ भादरवा वदि आठमे, अवतरीया खास ॥ जेठ शुक्क बारसी जएया, तस तेरसे संयम ॥ फागुण वदि छठे केवली, शिव लहे तस सत्तमि ॥ सत्तम जिनवर नामथी ए, साते ईति शमंत ॥ ज्ञानविमल सूरि नितु लहे, तेज प्रताप महंत ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ फले कामित आशे, नामथी दुःख नासे ॥ महिम महिम प्रकाशे, सातमा श्री सुपासे ॥ सुर नर जस दास, संपदानो निवास ॥ गाय भवि गुण रास, जेहना धरी उल्लास ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ श्री चंद्रप्रज्ञ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ चंद्रप्रज्ञ जिन आठमा, चंद्रप्रज्ञ सम देह ॥ अवतरीया विजयंतथी, वदि पंचमी चैत्रह ॥ पोष वदि बारसे जनमीया, तस तेरसे साध ॥ फागण वदिनी सातमे, केवल निराबाध ॥ नाद्रव सातम शिव लह्या ए, पूरी पूरण ध्यान ॥ अष्ठ महासिद्धि संपजे, नय कहे जिन अन्निधान ॥ १ ॥ इति चंद्रप्रज्ञ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ शुज्ञ नरगति पामी, उद्यमे धर्म धामी ॥ जिन नमो शिर नामी, चंद्रप्रज्ञ नामे स्वामी ॥ मुज अंतरजामी, जेहमां नहींय खामी ॥ शिवगति वर गामी, सेवना पुण्ये पामी ॥ १ ॥ इति ॥ ७ ॥

॥ अथ सुविधिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ गोरा सुविधि जिणंद नाम, बीजुं पुष्पदंत । फागुण वदि नोमे चव्या, मेहेली सुर आनत ॥ मृगशिर वदि पंचमे जण्या, तस छठे दीक्षा ॥ कार्तिक सुदि त्रीजे केवली, दीये बहु परे शीक्षा ॥ सुदि नवमी नाद्रवा तणी ए, अजर अमर पद दोय ॥ धीर

विमल सेवक कहे, ए नमतां सुख होय ॥१॥ इति ॥ए॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुविधि जिन नदंत, नाम वली पुष्पदंत ॥ सुमति तरुणीकंत, संतथी जेह संत ॥ कीयो कर्म डुरंत, लही लीला वरंत ॥ नवजलधि तरंत, ते नमीजे महंत ॥ १ ॥ इति थोय ॥

॥ अथ श्री शीतलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणत कल्प थकी चव्या, शीतल जिन दशमा ॥ वदि वैशाखनी छठे, जाणी दाघज्वर प्रशम्या ॥ माहा वदि बारस जनम दीख्या, तस बारसे लीध ॥ वदि पोष चउदश दिने, केवली परसिद्ध ॥ वदि बीजे वैशाखनी ए, मोक्ष गया जिनराज ॥ ज्ञानविमल जिनराजथी, सीझे सघलां काज ॥ १० ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सुण शीतल देवा, वालही तुज सेवा ॥ जेम गज मन रेवा, तुंही देवाधिदेवा ॥ पर आण वदेवा, शम छे नित्यमेवा ॥ सुख सुगति लहेवा, हेतु डुःख खपेवा ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री श्रेयांसनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अच्युत कल्प थकी चव्या, श्री श्रेयांस जिणंद ॥ जेठ अंधारी दिवस छठे, करत बहु आनंद ॥ फागुण वदि बारसे जनम, दीक्षा तस तेरस ॥ केवली माहा अमावसि, देसन चंदन रस ॥ वदि श्रावण त्रीजे लह्या ए, शिवसुख अखय अनंत ॥ सकल समीहित पूरणो, नय कहे ए भगवंत ॥ ११ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ सवि जिन अवितंस, जास इख्याग वंश ॥ विजित मदन कंस, शुद्ध चारित्र हंस ॥ कृत नय विध्वंस, तीर्थनाथ श्रेयांस, वृषभ ककुद अंश, ते नमुं पुण्य अंश ॥ १ ॥ इति ॥ ११ ॥

॥ अथ श्री वासुपूज्य चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणतथी इहां आवीया, ज्येष्ट सुदि नवमी ॥ जनम्या फागुण चोदशी, अमावासी संजमी ॥ माहा सुदि बीजे केवली, चोदशी आषाढी ॥ सुदि शिव पाम्या कर्म कष्ट, सवि दूरे काढी ॥ वासुपूज्य जिन बारमा ए, विद्रुम रंगे काय ॥ श्री नयविमल कहे इस्युं, जिन नमतां सुख थाय ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ वसुदेव नृप तात, श्री जयादेवी मात ॥ अरुण कमल गात, महिष लंछन विख्यात ॥ जस गुण अवदात, शीत जाणे निवात ॥ होय नित सुख शात, ध्यातां दिवस रात ॥ १२ ॥ इति ॥

॥ अथ विमलनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अष्टम कल्प थकी चव्या, माधव सुदि बारस ॥ सुदि महा त्रीजे जण्या, तस चोथे व्रत रस ॥ सुदि पोष छठे लह्या, वर निर्मल केवल ॥ वदि सातम आषाढनी, पाम्या पद अविचल ॥ विमल जिणेसर वंदीए ए, ज्ञानविमल करी चित्त ॥ तेरसमो जिन नितु दीये, पुण्य परिगल वित्त ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ विमल विमल नावे, वंदतां दुःख जावे ॥ नवनिधि घर आवे, विश्वमां मान पावे ॥ सुयर लंछन कावे, नेमि नर स्वेद थावे ॥ मनु विनति जणावे, स्वामीनुं ध्यान ध्यावे ॥ १३ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अनंतनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ प्राणत थकी चवीया इहां, श्रावण वदि सातम ॥ वैशाख वदि तेरसी, जनम्या चउदसे व्रत ॥ वदि वैशाख चउदशी, केवल पुण्य पाम्या ॥ चैत्र सुदि पंचमी दिने, शिव वनिता काम्या ॥ अनंत जिनेश्वर चउदमा ए, कीधा दुशमन अंत ॥ ज्ञानविमल कहे नामश्री, तेज प्रताप अनंत ॥ १४ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अनंत जिन नमीजे, कर्मनी कोटी छीजे ॥ शिवसुख फल लीजे, सिद्धि लीला वरीजे ॥ बोधिबीज मोय दीजे, एटलुं काज कीजे ॥ मुज मन अति रीजे, स्वामीनुं कार्य सीजे ॥ १ ॥

॥ अथ श्री धर्मनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ वैशाख सुदि सातमे, चवीया श्री धर्म ॥ विजय थकी माहा मासनी, सुदि त्रीजे जन्म ॥ तेरस मांहि उजली, लीये संजम भार ॥ पोषी पूनमे केवली, गुणना भंडार ॥ जेठी पांचमी उजली ए, शिवपद पाम्या जेह ॥ नय कहे ए जिन प्रणमतां, वाधे धर्म सनेह ॥ १५ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ धर्म जिनपतिनो, ध्यानरस मांहे लीनो ॥ वर रमण शचीनो, जेहने वर्ण लीनो ॥ त्रिभुवन सुख कीनो, लंछने वज्र दीनो ॥ नवि होय ते हीनो, जेहने तुं वसीनो ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री शांतिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ भाद्रवा वदि सातमे, दिने सवठथी चवीया ॥ वदि तेरसे जेठे जणया, दुःख दोहग शमीया ॥ जेठ चउदस वदि दिने, लीये संजम प्रेम ॥ केवल उज्ज्वल पोषनी, नवमी दिन खेम ॥ पंचम चक्री परवडा ए, सोलमा श्री जिनराज ॥ जेठ वदि तेरसे शिव लह्या, नय कहे सारो काज ॥ १६ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जिनपति जयकारी, पंचमो चक्रधारी ॥ त्रिभुवन सुखकारी, सत्त भय ईति वारी ॥ सहस चउसठ नारी, चउद रत्नाधिकारी ॥ जिन शांति जितारी, मोह हस्ति मृगारी ॥ १ ॥ शुभ केसर घोली, मांहे कर्पूर चोली ॥ पेहरी सीत पटोली, वासीए

गंध धूली ॥ जरी पुष्प पटोली, टालीए दुःख होली ॥ सवि जिनवर टोली, पूजीए जाव जोली ॥ २ ॥ शुज अंग इग्यार, तेम उपांग बार ॥ वली मूल सूत्र चार, नंदी अनुयोगद्वार ॥ दश पयन्न उदार, छेद खट वृत्ति सार ॥ प्रवचन विस्तार, जाष्य निर्युक्ति सार ॥३॥ जय जय जय नंदा, जैन दृष्टि सुरिंदा ॥ करे परमानंदा, टालता दुःख दंदा ॥ ज्ञानविमल सूरींदा, साम्य माकंद कंदा ॥ वर विमल गिरींदा, ध्यानथी नित्य जद्दा ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंजः ॥

॥ मोतीकानी देशी ॥ सकल समीहित सुरतरु कंदा, शांतिकरण श्रीशांति जिणंदा ॥ साहिवा जिनराज हमारा, मोहना जिनराज हमारा ॥ सा० ॥ ए आंकणी ॥ त्रिकरण शुरू चरण तुज विलगो, पलक मात्र न रहुं हवे अलगो ॥ सा० ॥ १ ॥ विलगो ते अलगो केम जाशे, ठंड्यो पण तुम्हे नवि ठंकाशे ॥ सा० ॥ प्रजु तुम्हे कोइशुं नेह न लावो, वीतराग कही सवि समकावो ॥ सा० ॥२॥ बीजा अवर कहो एम समके, पण गरु दीधाथी रीके ॥ सा० ॥ वालकना हठथी नवि चाले, जे

मागे ते मावित्र आले ॥ सा० ॥ ३ ॥ नक्ति खांची मन मांहे आण्यो, सहज स्वनावे पण में जाण्यो ॥ सा० ॥ माहारे एक प्रतिज्ञा साची, तुम पद सेवा अंके जाची ॥ सा० ॥ ४ ॥ कबजे आव्या तो बूटीजे, जेह मुह मागे तेहज दीजे ॥ सा० ॥ अनेद-पणे जो मनमां मलशो, कबजेथी प्रनु तो नीक-लशो ॥ सा० ॥ ५ ॥ अरकय नाव निधि तुम पास, आपी दासने पूरो आश ॥ ज्ञानविमल समकित प्रनुताइ, दीधी साहेब एह वमाइ ॥ सा० ॥ ६ ॥

॥ अथ श्री कुंथुनाथ जिन चैत्यवंदन ॥

॥ श्रावण वदि नवमी दिने, सवठथी चवीया ॥ वदि चउदश वैशाखनी, जिन कुंथु जणीया ॥ वदि पंचमी वैशाखनी, लीये संयम नार ॥ सुदि त्रीजे चैत्रह तणी, लहे केवल सार ॥ पमवा दिन वैशा-खनी ए, पाम्या अविचल ठाण ॥ ठठा चक्री जय-करु, ज्ञानविमल सुख खाण ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारन्यते ॥

॥ जिन कुंथु दयाला, ठाग लंठन सुहाला ॥ जस गुण शुन माला, कंठे पहेरो विशाला ॥ नमति

नवि त्रिकाला, मंगल श्रेणि माला ॥ त्रिभुवन ते-
जाला, ताहरे तेज माला ॥ १७ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री अरनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ सरवारथथी आवीया, फागुण सुदि वीजे ॥ मृगशिर सुदि दशमी जणया, अरदेव नमीजे ॥ मृगशिर सुदि एकादशी, संजम आदरीयो ॥ कार्त्तिक उज्जल वारसे, केवल गुण वरीयो ॥ सुदि दशमी मृगशिर तणी ए, शिवपद लहे जिननाथ ॥ सत्तम चक्रीने नमुं, नय कहे जोडी हाथ ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ अर जिन ए जुहारुं, कर्मनो क्लेश वारुं ॥ अहोनिश संभारुं, ताहरुं नाम धारुं ॥ कृत जय जयकारु, प्राप्त संसार सारु ॥ नवि होय ते सारु, आपणो आप तारु ॥ १८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मल्लिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ चव्या जयंत विमानथी, फागुण सुदि चउथे ॥ मृगशिर सुदि इग्यारस, जन्म्या निर्गंथे ॥ ज्ञान लह्या एकण दिने, कल्याणक तीन ॥ फागुण सुदि वारसे लहे, शिव सदन अदीन ॥ मल्लि

जिणेसर नीलडा ए, उंगणीशमा जिनराज ॥ अणपरएया अणनूप पद, नवजल तरण जहाज ॥ १ए ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ जिन मल्लि महिला, वान वे जेह नीला ॥ ए अचरिज लीला, स्त्री तणे नाम पीला ॥ डुशमन सवि पीव्या, स्वामि जो वे वसीला ॥ अविचल सुख लीला, दीजीए सुणी रंगीला ॥ १ए ॥ इति ॥

॥ अथ श्री मुनिसुव्रत जिन चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आवीया, श्रावण सुदि पूनम ॥ आठम जेठ अंधारडी, थयो सुव्रत जनम ॥ फागुण सुदि वारसे व्रत, वदि बारसे ज्ञान ॥ फागुणनी तेम जेठ नवमी, कृष्णे निर्वाण ॥ वर्ण श्याम गुण उ· जाला, तिहुयण करे प्रकाश ॥ ज्ञानविमल जिनरा· जना, सुर नर नायक दास ॥ २० ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारज्यते ॥

॥ मुनिसुव्रत स्वामी, हुं नमुं शीश नामी ॥ मुऊ अंतरजामी, कामदाता अकामी ॥ डुःख दोहग वामी, पुएयथी सेव पामी ॥ शम्या सर्वे

दारामी, राज्यता पूर्ण पामी ॥ १ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ आशो सुदि पूनम दिने, प्राणतथी आव्या ॥ श्रावण वदि आठम दिने, नमि जिनवर जाया ॥ वदि नवमी आषाढनी, थया तिहां अणगार ॥ मृगशिर सुदि इग्यारसे, वर केवल धार ॥ वदि दशमी वैशाखनी ए, अखय अनंतां सुक्ख ॥ नय कहे श्री जिननामथी, नासे दोहग दुक्ख ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ नमि जिनवर मानो, जेह नहीं विश्व ठानो ॥ सुत वप्रा मानो, पुण्य केरो खजानो ॥ कनक कमल वानो, कुंन ठे जे कृपानो ॥ सवि भुवन प्रमानो, तेहशुं एकतानो ॥ २१ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री नेमिनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ अपराजितथी आवीया, कार्त्तिक वदि बारस ॥ श्रावण सुदि पंचमी जण्या, यादव अवतंस ॥ श्रावण सुदि छठे संजमी, आसोज अमावस नाण ॥ सुदि आषाढनी आठमे, शिवसुख लहे रसाल ॥ अरिठनेमि अणपरणीया ए, राजीमतीना कंत ॥

ज्ञानविमल गुण एहना, लोकोत्तर वृत्तंत ॥ २१ ॥ इति

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ गया शस्त्रागारे, शंख जिन हाथ धारे ॥ कीयो शब्द प्रचारे, विश्व कंप्यो तिवारे ॥ हरि संशय धारे, एहनी कोइ सारे ॥ जयो नेमकुमारे, बालथी ब्रह्मचारे ॥ १ ॥ चार जंबूद्वीपे, विचरंता जिनदेव ॥ अरु धातकीखंडे, सुर नर सारे सेव ॥ अरु पुष्कर अरधे, इणी परे वीश जिनेश ॥ संप्रति ए सोहे, पंच विदेह निवेश ॥ २ ॥ प्रवचन प्रवहण सम, भवजलनिधिने तारे ॥ कोहादिक महोटा, मछ तणा भय वारे ॥ जिहां जीवदया रस, सरस सुधारस दाख्यो ॥ भवि भाव धरीने, चित्त करीने चाख्यो ॥ ३ ॥ जिनशासन सान्निध्य, कारी विघन विडारे ॥ समकितदृष्टि सुर, महिमा जास वधारे ॥ शत्रुंजय गिरि सेवो, जेम पामो भव पार ॥ कवि धीरविमलनो, शिष्य कहे सुखकार ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ रहो रहो रे यादव राय दो घमीयां, दो घमीयां, दो चार घमीयां ॥ रहो रहो रे यादव० ॥ ए

आंकणी ॥ मोज महिराण शिवादेवी जाया, तुमे
हो आधार अरुत्रभीयां ॥ रहो० ॥ १ ॥ नाह विवाह
चाह करी ए, क्युं जावत फिर रथ चभीयां ॥
रहो० ॥ पशुय पोकार सुणीय कीय करुणा, होभी
दीये पशु पंखी चभीयां ॥ रहो० ॥ २ ॥ गोद वि-
हाउं में वली जाउं,करुं विनति चरणे पभीयां ॥ रहो० ॥
पीयु विण दिहा ते वरिस समोवरु, न गमे सपनने
सेजभीयां ॥ रहो० ॥ ३ ॥ विरह दिवानी विलपति
जोवन, वाभी वन घर सेरभीयां ॥ रहो० ॥ अष्ट
नवांतर नेह निवाहत, नवमे नव ते विठभीयां
रहो० ॥ ४ ॥ सहसा वन मांहे स्वामि सुणीने,
राजुल रेवतगिरि चभीयां ॥ रहो० ॥ पीयु करे
निज शिरे हाथ देवा, व्रत चाखे चारित्र शेल-
भीयां ॥ रहो० ॥ ५ ॥ जादव वंशविनूपण नेमजी,
राजुल मीठी वेलभीयां ॥ रहो० ॥ ज्ञानविमल गुणे
दंपती निरखत, हरखत होत मेरी आंखभीयां ॥
रहो० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री पार्श्वनाथ चैत्यवंदन ॥

॥ कृष्ण चोथ चैत्रह तणी, प्राणतथी आया ॥

पोष वदि दशमी जनम, त्रिभुवन सुख पाया ॥ पोष वदि इग्यारसे, लहे मुनिवर पंथ ॥ कमठा-सुर उपसर्गनो, टाल्यो पली मंथ ॥ चैत्र कृष्ण चोथह दिने ए, ज्ञानविमल गुण नूर ॥ श्रावण सुदि आठमे लह्यां, अविचल सुख नरपूर ॥ २२ ॥ इति चैत्यवंदन ॥

॥ अथ थोय प्रारभ्यते ॥

॥ जलधर अनुकारे, पुण्य वल्ली वधारे ॥ कृत सुकृत संचारे, विघ्नने जे विदारे ॥ नव निधि आगारे, कष्टनी कोडि वारे ॥ मुऊ प्राणाधारे, माता वामा मल्हारे ॥ १ ॥ अर जनम सुहावे, वीर चारित्र पावे ॥ अनुभव लय लावे, केवलज्ञान पावे ॥ षट् जे कल्याण, संप्रति जे प्रमाण ॥ सवि जिनवर जाण, श्री निवासाहिठाण ॥ २ ॥ दशविध आचार, ज्ञानना जिहां विचार ॥ दश सत्य प्रकार, पच्चक्खाणादि विचार ॥ मुनि दश गुण धार, भया जिहां उदार ॥ ते प्रवचन सार, ज्ञानना जे आगार ॥ ३ ॥ दश दिशि दिशिपाला, जे महा लोगपाला ॥ सुर नर महिमाला, शुरू दृष्टि कृपाला ॥ नय-

विमल विशाला, ज्ञान लछी मयाला ॥ जय मंगल माला, पास नामे सुखाला ॥ ४ ॥ इति ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ थारे माथे पचरंगी पाग सोनारो, छोगलो मारुजी ॥ ए देशी ॥ प्रभु पास जिणेसर भुवन दीनेसर, संकरो ॥ साहिबजी ॥ लीला अलवेसर, धीरम मंदर, भूधरो ॥ साहिबजी ॥ तुं अगम अगोचर, कृत शुचि सुंदर, संवरो ॥ सा० ॥ पद नमित पुरंदर, तनु छवि निर्मल, जलधरो ॥ सा० ॥ १ ॥ तुं अक्षय अरूपी, ब्रह्म सरूपी, ध्यानमां ॥ सा० ॥ ध्याये जे जोगी, तुम गुण भोगी, ज्ञानमां ॥ सा० ॥ व्यवहार प्रकाशी, निश्चय वासी, निज मते ॥ सा० ॥ निज आतम दरसी, अमल आजेसी, नयमते ॥ सा० ॥ २ ॥ षट् दरशन भासे, युक्ति निरासे, शासने ॥ सा० ॥ स्याद्वाद विशाले, सहज समाजे, भावने ॥ सा० ॥ तुं ज्ञानने ज्ञाने, आतमध्याने, आतमा ॥ सा० ॥ परमागम वेदी, भेद अभेदी, नहीं तमा ॥ सा० ॥ ३ ॥ एक अनेके, वहुत्त विवेके, देखीए ॥ सा० ॥ आतम ततकामी, अगुण अकामी, लेखीए ॥ सा० ॥ सवि गुण आरामी, छो वहु नामी, ध्या-

नाव जाणी ॥ ३ ॥ जिनमत रखवाला, जे वली लोगपाला ॥ समकित गुणवाला, देव देवी कृपाला ॥ करो मंगल माला, टालीने मोह हाला ॥ सहज सुख रसाला, बोध दीजे विशाला ॥ ४ ॥

॥ अथ स्तवन प्रारंभः ॥

॥ आज गइती हुं समवसरणमां ॥ ए देशी ॥

वंदो वीर जिणेसर राया, त्रिशला माता जाया जी ॥ हरि लंछन कंचन वन काया, मुज मन मंदिर आया जी ॥ वंदो वीर० ॥ १ ॥ डुषम समये शासन जेहनो, शीतल चंदन छाया जी ॥ जे सेवंता नविजन मधुकर, दिन दिन होत सवाया जी ॥ वंदो० ॥ २ ॥ ते धन्य प्राणी सद्गति खाणी, जस मनमां जिन आया जी ॥ वंदन पूजन सेवन कीधी, ते काजननी माया जी ॥ वंदो० ॥ ३ ॥ कर्म कठिन नेदन बलवत्तर, वीर बिरुद जिन पाया जी ॥ एकलमल अतुली बल अरिहा, डुशमन दूर गमाया जी ॥ वंदो० ॥ ४ ॥ वांछित पूरण संकट चूरण, तुं मात पिता तुं सहाया जी ॥ सिंह परे चारित्र आराधी, सुजस निशान बजाया जी ॥ वंदो० ॥ ५ ॥ गुण अनंत नगवंत बिराजे, वर्द्धमान जिनराया जी ॥ धीरविमल कवि सेवक

नय कहे, शुद्ध समकित गुण दाया जी ॥ वंदो० ॥ ६ ॥ इति ॥ पूर्ण जय वीयराय कहेवा ॥

॥अथ श्रीशाश्वता अशाश्वता जिन चैत्यवंदन॥

॥ सकल मंगलकार एही, सिद्ध सकल पयठाण ॥ स्याद्वाद साधन पद एही, अध्यातम गुणठाण सही ए नमो जिणाणं ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ विहुंतेर लख्ख सग्ग कोमी नवणवइ, सासय जिणहर माणं, तेरसें नेव्याशी कोमी, सग्गसठि विंवह परिमाणं ॥ २ ॥ सही० ॥ मेरु वैताढ्य वखारा कंचन, यमक कुंम ऊह जाणुं ॥ एकत्रीश उंगण्याशी जिनवर, मानवलोके वखाणुं ॥ ३ ॥ स० ॥ तिलख इक्याशी सहस चारसो, त्र्याशी अधिक विंव जाणुं ॥ रुचक कुंमल नंदीसर प्रमुखे, सुंदर एंशी चेइयाणुं ॥ ४ ॥ स० ॥ अमशत सव सहसा चालीसा, विंव तणुं परिमाणं ॥ सरवाले वत्रीशसें गुणसठी, तिर्यक्लोके चेइयाणं ॥ ५ ॥ स० ॥ प्रतिमा त्रण लख सहस एकाणुं, चउसय ते वीश परिमाणं ॥ साठ चौवारा अवर त्रिवारा, रुचक कुंम नंदि ठाणं ॥ ६ ॥ स० ॥ वार देवलोके नव ग्रैवेयके, अनुत्तर पंच विमाणं ॥ लाख चोराशी सहस सत्ताणुं, त्रेवीश चेइ आणुं

डुष्ट तणा नय जीपता ॥ ४ ॥ इति श्री शाश्वत अशाश्वत जिनस्तुति ॥ २५ ॥

॥ अहींआं एक जण मोटी शांति कहे अने बीजा सर्व काउस्सग्गमां सांभले. पछी सर्वे जण काउस्सग्ग पारीने प्रगट एक लोगस्स पूरो कही पछी बेसीने एकवीश नवकार प्रगटपणे सर्व जण गणे. पछी सर्वे जण मुख थकी आवी रीते कहेः—श्रीशत्रुंजयाय नमः ॥ १ ॥ श्रीपुंडरीकाय नमः ॥ २ ॥ श्रीसिद्धक्षेत्राय नमः ॥ ३ ॥ श्रीविमलाचलाय नमः ॥ ४ ॥ श्रीसुरगिरये नमः ॥ ५ ॥ श्रीमहागिरये नमः ॥ ६ ॥ श्रीपुण्यराशये नमः ॥ ७ ॥ श्रीपर्वताय नमः ॥ ८ ॥ श्रीपर्वतेंद्राय नमः ॥ ९ ॥ श्रीमहातीर्थाय नमः ॥ १० ॥ श्रीशाश्वताय नमः ॥ ११ ॥ श्रीदृढशक्तये नमः ॥ १२ ॥ श्रीमुक्तिनिलयाय नमः ॥ १३ ॥ श्रीपुष्पदंताय नमः ॥ १४ ॥ श्रीमहापद्माय नमः ॥ १५ ॥ श्रीपृथ्वीपीठाय नमः ॥ १६ ॥ श्रीसुरचंद्रगिरये नमः ॥ १७ ॥ श्रीकैलासगिरये नमः ॥ १८ ॥ श्रीपातालमूलाय नमः ॥ १९ ॥ श्री अकर्मकर्त्रे नमः ॥ २० ॥ श्रीसर्वकामपूरणाय नमः ॥ २१ ॥ ए

सिद्धगिरिनां नाम सर्वेने मुखे प्रगट कहीने पछी पांच तीर्थनां पांच स्तवन कहेवां, ते लखीए छीए:–

॥ अथ प्रथम श्री सिध्धाचल स्तवन ॥

॥ साहेलडीयानी देशी ॥ नीलडी रायण तरु तले ॥ साहेलडीया ॥ पीलडा प्रभुजीना पाय ॥ गुण मंजरीयां ॥ उजले ध्याने ध्याइए ॥ सा० ॥ एहीज मुगति उपाय ॥ गुण० ॥ १ ॥ शीतली छायाए बेसीए ॥ सा० ॥ रातडो करी मनरंग ॥ गुण० ॥ नाही धोइ निर्मल थइ ॥ सा० ॥ पहेरी वस्त्रादिक चंग ॥ गुण० ॥ २ ॥ पूजीए सोवन फूलडे ॥ सा० ॥ नेह धरीने एह ॥ गुण० ॥ ते त्रीजे नवे शिव लहे ॥ सा० ॥ थाये निर्मल देह ॥ गुण० ॥ ३ ॥ प्रीत धरी प्रदक्षिणा ॥ सा० ॥ दीये एहने जे सार ॥ गुण० ॥ अभंग प्रीति होये जेहने ॥ सा० ॥ नव नव तुम आधार ॥ गुण० ॥ ४ ॥ कुसुम पत्र फल मंजरे ॥ सा० ॥ शाखा थड ने मूल ॥ गुण० ॥ देव तणा वासा अछे ॥ सा० ॥ तीरथने अनुकूल ॥ गुण० ॥ ५ ॥ तीरथ ध्यान धरी मने ॥ सा० ॥ सेवो एहने उछाहि ॥ गुण० ॥ ज्ञानविमल गुरु नाखीयो ॥ सा० ॥ शत्रुंजा माहातम मांहि ॥ गुण० ॥ ६ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री गिरनार तीर्थ स्तवन ॥

॥ देखी कामनी दोय के कामे व्यापीयो रे के, कामे व्यापीयो ॥ ए देशी ॥ नेम निरंजन देव के, सेव सदा करुं रे के ॥ से० ॥ अहोनिश ताहरुं ध्यान के, दिल मांहे धरुं रे के ॥ दिल० ॥ शंख लंछन गुण-खाण के, अंजन वान छे रे के ॥ अंजन० ॥ राजी-मतीना कंत के, परण्या विण अछे रे के ॥ पर० ॥ १ ॥ तुंहीज जीवन प्राण के, आतमराम छे रे के ॥ आत० ॥ माहरे परमाधार के, ताहरुं नाम छे रे के ॥ ता० ॥ समुद्रविजयना नंदन, नितु नितु वंद-तां रे के ॥ नितु० ॥ कीजीए करुणावंत के, कर्म निकं-दना रे के ॥ कर्म० ॥ २ ॥ जीत्या मनमथराज, रही गढ उपर रे के ॥ रही० ॥ पेहरी शील सन्नाह, उदास ऐसी धरो रे के ॥ उदा० ॥ सवि जिनवरमां स्वामि, तुम्हे अधिकुं कर्युं रे के ॥ तुम्हे० ॥ कुमरपणे धरी धीर, महाव्रत उच्चर्यां रे के ॥ महा० ॥ ३ ॥ आठ भवांतर नेह जे, तेह उवेखीने रे के ॥ तेह० ॥ करुणा कीधी केवल, पशुयां देखीने रे के ॥ पशु० ॥ पूरण पाली प्रीत, वली निज नारने रे के ॥ वली० ॥ आपी संजम भार, पहोंचाडी पारने रे के ॥ पहों० ॥ ४ ॥

जण जणशुं जे प्रीत, करे ते जन घणा रे के ॥ करे० ॥ निरवाहे धरी नेह के, ते विरला सुणया रे के ॥ ते वि० ॥ राजीमतीनो कंत, वखाणे कविजना रे के ॥ वखा० ॥ तुम्हे तो दीधो छेह के, तेहना थिर मना रे के ॥ तेहना० ॥ ५ ॥ जादवनाथ सनाथ, करो मुजने सदा रे के ॥ करो० ॥ दीधो मुज शिर हाथ, होवे जेम संपदा रे के ॥ होवे० ॥ जली जली मरे पतंग, दीवाने मन नहीं रे के ॥ दीवा० ॥ नाणे मन असवार, घोडो दोडे सही रे के ॥ घोडो० ॥ ६ ॥ सबला साथे प्रीत, निबलने नवि कही रे के ॥ निबल० ॥ पण लागी जे थोडी, किहां जाये वही रे के ॥ किहां० ॥ जे सज्जनशुं होय ते, नीरु न नंजीए रे के ॥ नीरु० ॥ तुमचा मुनि ज्यारे होये तो, कर्मने मंजीए रे के ॥ कर्म० ॥ ७ ॥ तो डुशमन होय दूरे, कोणे नवि गंजीए रे के ॥ कोणे० ॥ प्राणाधार पवित्र के, दरशन दीजीए रे के ॥ दर० ॥ ज्ञानविमल सुख पूर, मलीने कीजीए रे के ॥ म० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री आबु तीर्थ स्तवन ॥

॥ चालो चालोने राज, गिरिधर रमवा जइए ॥ ए देशी ॥ आवो आवोने राज, श्री अर्बुद गिरिवर जइए ॥ श्री जिनवरनी नक्ति करीने, आतम निर्मल

यइए ॥ आवो० ॥ ए आंकणी ॥ विमल वसहीना प्रथम जिणेसर, मुख निरखे सुख पइए ॥ चंपक केतकी प्रमुख कुसुम वर, कंठे टोडर ठवीए ॥ आवो० ॥ ॥ १ ॥ जिमणे पासे लुणग वसही, श्री नेमीसर नमीए ॥ राजीमती वर नयणे निरखी, दुःख दोहग सवि गमीए ॥ आवो० ॥ २ ॥ सिद्धाचल श्री ऋषभ जिणेसर, रैवत नेम समरीए ॥ अर्बुद गिरिनी यात्रा करंतां, चिहुं तीर्थ चित्त धरीए ॥ आवो० ॥ ३ ॥ झंरूप झंरूप विविध कोरणी, निरखी हैयडे ठरीए ॥ श्री जिनवरनां बिंब निहाळी, नरभव सफलो करीए ॥ आवो० ॥ ४ ॥ अविचल गढ आदीश्वर प्रणमी, अशुभ करम सवि हरीए ॥ पास शांति निरखी जब नयणे, मन मोह्युं डुंगरीए ॥ आवो० ॥ ५ ॥ पाजे चढतां उजम वाधे, जेम घोडे पाखरीये ॥ सकल जिनेसर पूजी केसर, पाप पडल सवि हरीए ॥ आवो० ॥ ६ ॥ एकण ध्याने प्रभुने ध्यातां, मन मांहि नवि डरीए ॥ ज्ञानविमल कहे प्रभु सुपसाये, सकल संघ सुख करीए ॥ आवो० ॥ ७ ॥ इति श्री अर्बुदगिरि स्तवनं ॥

॥ अथ श्री अष्टापद गिरि स्तवन ॥

॥ अष्टापद गिरियात्रा करणकुं, रावण प्रतिहरि आया ॥ पुष्फक नामे विमाने वेसी, मंदोदरी सुहाया ॥ १ ॥ श्री जिन पूजीए लाल, समकित निर्मल कीजे ॥ नयणे निरखी हो लाल, नरभव सफलो कीजे ॥ हैयडे हरखी लाल, समता संग करीजे ॥ ए आंकणी ॥ चउमुख चउगति हरण प्रासादे, चउवीशे जिन वेठा ॥ चउदिसि सिंहासन सम नासा, पूरव दिशि दोय जिठा ॥ श्री० ॥ २ ॥ संभव आदे दक्षिण चारे, पश्चिमे आठ सुपासा ॥ धर्म आदि उत्तर दिशि जाणो, एवं जिन चउवीसा ॥ श्री० ॥ ३ ॥ वेठा सिंह तणे आकारे, जिणहर भरते कीधां ॥ रयण विंव मूरति थापीने, जग जसवाद प्रसिद्धा ॥ श्री० ॥४॥ करे मंदोदरी राणी नाटक, रावण तांत वजावे ॥ मादल वीणा ताल तंबूरो, पगरव ठम ठमकावे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ भक्तिभावे एम नाटक करतां, त्रूटी तंती विचाले ॥ सांधी आप नसा निज करनी, लघु कलाशुं ततकाले ॥ श्री० ॥ ६ ॥ द्रव्य भावशुं भक्ति न खंडी, तो अक्षय पद साध्युं ॥ समकित सुरतरु फल पामीने, तीर्थंकर पद वांध्युं ॥ श्री० ॥ ७ ॥

एणी परे भविजन जे जिन आगे, बहुपरे भावना भावे ॥ ज्ञानविमल गुण तेहना अहनिश, सुर नर नायक गावे ॥ श्री० ॥ ८ ॥ इति ॥

॥ अथ श्री समेतशिखर स्तवन ॥

॥ समेतशिखर गिरि भेटीए रे, मेटवा भवना पास ॥ आतम सुख वरवा भणी रे, ए तीरथ गुण निवास रे ॥ १ ॥ भविया सेवो तीरथ एह, समेतशिखर गुणगेह रे ॥ भवि० ॥ से० ॥ ए आंकणी ॥ समेतशिखर कल्पे कह्यो रे, वीश टूंक अधिकार ॥ वीश तीर्थंकर शिव वस्या रे, बहु मुनिने परिवार रे ॥ भवि० ॥ २ ॥ से० ॥ स० ॥ सिद्धखेत्र मांहे वस्या रे, भाखे नय व्यवहार ॥ निश्चय निज स्वरूपमां रे, दोय नय प्रभुजीना सार रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ से० ॥ स० ॥ आगम वचन विचारतां रे, अति दुर्गम नयवाद ॥ वस्तुतत्त्व जिणे जाणीए रे, ते आगम स्याद्वाद रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ से० ॥ स० ॥ जयरथ राय तणी परे रे, जात्रा करो मनरंग ॥ भवदुःखने देइ अंजलि रे, थाये सिद्धि वधूनो संग रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ से० ॥ स० ॥ समकित युत जात्रा करे रे, तो शिव हेतु थाय ॥ भव हेतु किरिया त्यागथी रे, आतम गुण प्रगटाय

रे ॥ ज० ॥ ६ ॥ से० ॥ स० ॥ जेह समये समकित थयो रे, तेह समये होय नाण ॥ ज्ञानविमल गुरु जाखीयो रे, आवश्यक जाष्यनी वाण रे ॥ ज० ॥ ७ ॥ से० ॥ स० ॥ इति समेतशिखर स्तवनं ॥ इति श्री चोवीश जिन देववंदन चातुर्मासिकं समाप्तम् ॥

॥ श्री सिद्धाचलजीनुं स्तवन ॥

॥ वंदना वंदना वंदना रे, गिरिराजकुं सदा मोरी वंदना ॥ जिनको दरसन डुर्लज देखी, कीधी कर्म निकंदना रे ॥ गि० ॥ १ ॥ विषय कषाय ताप उपशमीए, जिम जले बावनाचंदना रे ॥ गि० ॥ २ ॥ धन्य धन्य ते दिन कबही रे होशे, थाशे तुम मुख दर्शना रे ॥ गि० ॥ ३ ॥ तिहां विशाल जाव पण होवे, जिहां प्रज्ञु पद-कज फरसना रे ॥ गि० ॥ ४ ॥ वली वली दर्शन वहेलुं लहए, एवी रहे नित्य जावना रे ॥ गि० ॥ ५ ॥ चित्त मांहिथी कबहु न विसारुं, प्रज्ञु गुणगणनी ध्यावन रे ॥ गि० ॥ ६ ॥ जब जब एहीज चित्तमां चाहुं, मेरे उ. नहि विचारणा रे ॥ गि० ॥ ७ ॥ चित्त रमे दिन मावननं पेरे, चहोरी न होय उतारणा रे ॥ गि० ॥ ८ ॥ ज्ञानविमल प्रज्ञु पूरण कृपाथी, श्रेणीक बोध सुवासना रे ॥ गि० ॥ ए

॥ श्री पीसतालीश आगमनुं स्तवन ॥

(नवि तुमे वंदो रे सिद्धाचल सुखदाइ ॥ ए देशी ॥)

॥ नवि तमे वंदो रे ए आगम सुखकारी, पाप निकंदो रे प्रनु वाणी दिल धारी ॥ ए आंकणी ॥ शासन नायक वीर जिनेसर, आसन जे उपगारी ॥ प्रनुथी त्रिपदी पामी गणधर, गौतमनी बलीहारी ॥ नवि० ॥१॥ प्रथम अंग श्री आचारंगी, मुनि आचार वखाण्यो ॥ सहस अढार ते पदनी संख्या, ठांण बीमणां रुडुं जाणो ॥ न० ॥ २ ॥ सूयगमांग ठाणंग ने समवायंग, पंचमो नगवती अंग ॥ लाख बेहु सहस अठ्याशी, पद रुमां अति चंग ॥ न० ॥ ३ ॥ ज्ञाताधर्मकथा अंग छठुं, कह्या उठ कोम ते जाणो ॥ पंचमे आरे उषमकालमां, कथा उंगणीश वखाणो ॥ न० ॥४॥ उपासक ते सातमो जाणो, दश श्रावक अधिकार ॥ ते सांनलतां कुमति बुज्या, जिन पमिमा जयकार ॥ न० ॥५॥ अंतगमदशांग ने अनुत्तरोववाइ, प्रश्नव्याकरण वखाणो ॥ शुन्न अशुन्न फल कर्म विपाक ए, अंग इग्यार प्रमाणो ॥ न० ॥ ६ ॥ उववाइ उपांग ने रायपसेणी, जीवानिगम मन आणो ॥ पन्नवणा ने जंबूपन्नति, चंदपन्नति इम जाणो ॥ नवि० ॥७॥

सुरपन्नति निरयावली तिम, कप्पिया कपवृतिका ॥ वार उपांग ते एणी परे वोल्या, पुप्फिया पुफवरतिका ॥ ज० ॥७॥ चउसरणपयन्नो पहेलो, आउरपच्चरकाण ते वीजो ॥ महापच्चरकाण ने जत्तपरीक्षा, तंडुलवियालि मनहिजो ॥ ज० ॥ ए ॥ चंदाविजय ने गणीविज्जा तिम, मरणसमाधि वखाणो ॥ संथारग पयन्नो नवमो, गछाचार दश जाणो ॥ ज० ॥ १० ॥ दशवैकालिक मूल सूत्र ए, आवश्यक उंघनिर्युक्ति ॥ उत्तराध्ययन ते चोथुं जाणो, श्रीवीर प्रजुनी युक्ति ॥ ज० ॥ ११ ॥ निशीथ ठेद ते पहेलो जाणो, वृहत्कल्प व्यवहार ॥ पंचकल्प ने जीतकल्प तिम, महा निशीथ मनोहार ॥ ज० ॥ १२ ॥ नंदी अनुयोग आगम पीस्तालीश, संप्रति काले जाणो ॥ जिन उत्तम पद्म रूप निहाली, सिद्धाचल श्रीधर आणो ॥ ज० ॥ १३ ॥

॥ श्री वीजनुं चैत्यवंदन ॥

॥ डुविध धर्म जिणे उपदिश्यो, चोथा अजिनंदन ॥ वीजे जन्म्या ते प्रजु, जव डुःख निकंदन ॥ १ ॥ डुविध ध्यान तुमे परिहरो, आदरो दोय ध्यान ॥ इम प्रकाश्युं सुमति जिने, ते चवीया वीज दिन ॥२॥ दोय वंधन राग द्वेष, तेहने जवि तजीए ॥ मुज परे शी-

तल जिन कहे, बीज दिन शिव नजीए ॥३॥ जीवाजीव पदार्थनुं, करो नाण सुजाण ॥ बीज दिने वासुपूज्य परे, लहो केवलनाण ॥ ४ ॥ निश्चय नय व्यवहार दोय, एकांत न ग्रहीये ॥ अर जिन बीज दिने चवी, एम जिन आगल कहीए ॥ ५ ॥ वर्तमान चोवीशीए, एम जिन कल्याण ॥ बीज दिने केइ पामीया, प्रभु नाण निर्वाण ॥ ६ ॥ एम अनंत चोवीशीए, हुआं बहु कल्याण ॥ जिन उत्तम पद पद्मने, नमतां होय सुखखाण ॥ ७ ॥

॥ श्री ज्ञानपंचमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ त्रिगडे बेठा वीर जिन, भाखे भविजन आगे ॥ त्रिकरणशुं त्रिहुं लोकजन, निसुणो मन रागे ॥ १ ॥ आराधो भली भातसें, पांचम अजुआली ॥ ज्ञान आराधन कारणे, एहज तिथि निहाली ॥ २ ॥ ज्ञान विना पशु सारिखा, जाणो एणे संसार ॥ ज्ञान आराधनथी लहे, शिवपद सुख श्रीकार ॥ ३ ॥ ज्ञान रहित क्रिया कही, कास कुसुम उपमान ॥ लोकालोक प्रकाशकर, ज्ञान एक परधान ॥ ४ ॥ ज्ञानी श्वासोच्छ्वासमां, करे कर्मनो छेह ॥ पूर्व कोडी वरसां लगे, अज्ञाने करे जेह ॥ ५ ॥ देश

आराधक क्रिया कही, सर्व आराधक ज्ञान ॥ ज्ञान तणो महिमा घणो, अंग पांचमे जगवान॥६॥ पंच मास लघु पंचमी, जावज्जीव उत्कृष्टी ॥ पंच वरस पंच मासनी, पंचमी करो शुज दृष्टि ॥७॥ एकावनही पंचनो ए, काउस्सग्ग लोगस्स केरो ॥ उजमणुं करो जावशुं, टाले जव फेरो ॥८॥ एणी परे पंचमी आराधीए, आणी जाव अपार॥ वरदत्त गुणमंजरी परे, रंगविजय लहो सार ॥ ए ॥

॥ श्री अष्टमीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ माहा सुदि आठमने दिने, विजया सुत जायो॥ तेम फागण सुदि आठमे, संजव चवी आव्यो ॥१॥ चैतर वदनी आठमे, जनम्या ऋपज जिणंद॥ दीक्षा पण ए दिन लही, हुआ प्रथम मुनिचंद॥२॥ माधव सुदि आठम दिने, आठ कर्म कर्यां दूर ॥ अजिनंदन चोथा प्रजु, पाम्या सुख जरपूर ॥ ३ ॥ एहीज आठम उजली, जनम्या सुमति जिणंद॥ आठ जाति कलशे करी, न्हवरावे सुर इन्द्र ॥४॥ जनम्या जेठ वदि आठमे, मुनिसुव्रत स्वामी॥ नेमि आषाढ सुदि आठमे, अष्टमी गति पामी ॥ ५ ॥ श्रावण वदिनी आठमे, नेमि जनम्या जगत्नाथ॥ तेम श्रावण सुदि

आठमे, पासजीनुं निर्वांण ॥ ६ ॥ जादरवा वदि आ-
ठम दिने, चवीया स्वामी सुपास ॥ जिन उत्तम पद
पद्मने, सेव्याथी शिववास ॥ ७ ॥

॥ श्री एकादशीनुं चैत्यवंदन ॥

॥ शासन नायक वीरजी, प्रजु केवल पायो ॥ संघ चतुर्विध थापवा, महसेन वन आयो ॥ १ ॥ माधव सीत एकादशी, सोमिल द्वीज यज्ञ ॥ इंद्रजूति आदे मल्या, एकादश विज्ञ ॥ २ ॥ एकादससें चउगुणा, तेहनो परिवार ॥ वेद अर्थ अवलो करे, मन अजिमान अपार ॥ ३ ॥ जीवादिक संशय हरी ए, एकादश गणधार ॥ वीरे थाप्या वंदीए, जिन शासन जयकार ॥ ४ ॥ मल्लि जन्म अर मल्लि पास, वर चरण विलासी ॥ रुषज अजित सुमति नमि, मल्लि घनघाति विनाशी ॥ ५ ॥ पद्म प्रजु शिववास पास, जव जवना तोमी ॥ एकादशी दिन आपणी, रुद्ध सघली जोडी ॥ ६ ॥ दश खेत्रे त्रिहुं कालनां, त्रणसें कल्याण ॥ वरस अगीआर एकादशी, आराधो वर नाण ॥ ७ ॥ अगीआर अंग लखावीये, एकादश पाठां ॥ पुंजणी ठवणी वींटणी, मसी कागल काठां ॥ ८ ॥ अगीआर अव्रत ठांमवां ए, वहो पमिमा अगीआर ॥ खिमा-

विजय जिन शासने, सफल करो अवतार ॥ ए ॥

॥ अथ श्री पर्युषणनी स्तुति ॥

॥ पर्व पजुसण सर्वे सजाइ,मेलवीने आराधोजी ॥ दान शील जावने जेली, सफल करो जव लाधोजी ॥ तत्क्षण एह पर्वथी तरीए, जवजल जेह अगाधोजी ॥ विधिपूर्वक आराधन करीने, आतम कारज साधोजी ॥१॥ रुषज्ञ ने श्री पास नेमीसर,वीर जिणेसर केरांजी पांच कल्याणक प्रेमे सुणीये,वली आंतरां अनेरांजी॥ वीशे जिनवरनां जे वारु, टाले जवना फेराजी ॥ अतीत अनागत जिनने नमीये, वली विशेषे जलेराजी ॥ २ ॥ दशाश्रुत सिद्धांत मांहेथी, सूरिवर श्री जद्र बाहुजी॥ कल्पसूत्र ए उद्धरी संघने, करी उपगार जे साहुजी ॥ जिनवर चरित्र ने समाचारी, स्थविरावली उमाहोजी ॥एहनी आण जे वहेशे,लेशे ते जव लाहोजी ॥ ३ ॥ चउन्न उठ अठम अठाइ, दश पंदर ने त्रीशजी ॥ पीस्तालीश ने साठ पंचोतेर, इत्यादिक सुजगीशजी ॥ उपवास एता करी आराधे,पर्व पजुसण प्रेमजी ॥ शासनदेवी विघ्न तस वारे,उदयवाचक कहे एमजी४

॥ अथ शत्रुंजयस्तोत्रम् ॥

॥ पूर्णानन्दमयं महोदयमयं कैवल्यचिद्दृग्मयं, रुपा-

तीतमयं स्वरूपरमणं स्वाभाविकीश्रीमयम् ॥ ज्ञानोद्योतमयं कृपारसमयं स्याद्वादविद्यालयं, श्रीसिद्धाचलतीर्थराजमनिशं वन्देऽहमादीश्वरम् ॥ १ ॥ श्रीमद्युगादीश्वरमात्मरूपं, योगीन्द्रगम्यं विमलाद्रिसंस्थम् ॥ सद्ज्ञानसुदृष्टिसुदृष्टलोकं, श्रीनाभिसूनुं प्रणमामि नित्यम् ॥ २ ॥ राजादिनाधस्तनभूमिभागे, युगादिदेवांघ्रिसरोजपीठम् ॥ देवेन्द्रवन्द्यं नरराजपूज्यं, सिद्धाचलाग्रस्थितमर्चयामि ॥ ३ ॥ आदिप्रभोर्दक्षिणदिग्विभागे, सहस्रकूटे जिनराजमूर्तीः ॥ सौम्याकृतीः सिद्धिततीर्निभाश्च, शत्रुंजयस्थाः परिपूजयामि ॥ ४ ॥ आदिप्रभोर्वक्रसरोरुहाच्च, विनिर्गतां श्रीत्रिपदीमवाप्य ॥ यो द्वादशांगीं विदधे गणेशः, स पुण्डरीको जयताच्छिवाद्रौ ॥ ५ ॥ चउद्दसाणं सयसंखमाणं, बावन्न सहियाण गणाहिवाणं ॥ सुपाउआ जत्थ विरायमाणा, सत्तुंजयं तं पणमामि णिच्चं ॥ ६ ॥ चत्तठ कम्मा परिणाम रम्मा, लद्धप्प धम्मा सुगुणेहिं पुण्णा ॥ चत्तारि अठ्ठ दस दुन्नि देवा, अठ्ठावए ताइं जिणाइं वंदे ॥ ७ ॥ अणंत नाणिणो अणंत दंसिणो, अणंत सुक्खाण अणंत वीरिणो ॥ वीसं जीणा जत्थ ।सवं पवन्ना, समेअसेलं

तमहं थुणामि ॥ ८ ॥ जत्थेव सिद्धो पढमं मुणिंदो गणाहिवो पुंमरिउ वसिठो ॥ अणेग साहू परिवार संजुउं, तं पुंमरीआचलमच्चयामि ॥ ए ॥ विमलगिरिवतंसः सिद्धिगंगाम्बुवंशः, सकलसुखविधाता दर्शनज्ञानदाता ॥ प्रणतसुरनरेंद्रः केवलज्ञानचन्द्रः, सृजतु मुदमुदारां नाभिजन्मा जिनेन्द्रः ॥१०॥ इति तीर्थराजमहामहिमाभिधानं गणाधीशकृतं संपूर्णम् ॥

॥ अथ स्तुत्यादि ॥

॥ अष्टापदे श्री आदि जिनवर, वीर पावापुरीवरु;
वासुपूज्य चंपा नयर सिद्धा, नेम रैवतगिरिवरु ॥ १ ॥
समेतशिखरे वीश जिनवर, मोक्ष पोहोता मुनिवरु;
चोवीश जिनवर नित्य वंदुं, सयल संघ सुहंकरु ॥ २ ॥

सकल कर्म वारी, मोक्ष मार्गाधिकारी;
त्रिभुवन उपगारी, केवलज्ञान धारी ॥
भवियण नित्य सेवो, देव ए भक्ति भावे;
ए जिन भजंतां, सर्व संपत्ति आवे ॥

वीरः सर्वसुरासुरेंद्रमहितो वीरं बुधा संश्रिताः,
वीरेणाभिहतः स्वकर्मनिचयो वीराय नित्यं नमः ॥
वीरात्तीर्थमिदं प्रवृत्तमतुलं, वीरस्य घोरं तपो,